सुगंध - २

कक्षा - 10 हिंदी (द्वितीय भाषा)

Class-X Hindi (Second Language)

संपादक

प्रो. शकुंतला रेड्डी
क्षेत्रीय निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद

श्रीमती फराह नसरीन
अध्यक्षा, हिंदी विभाग, आई.ए.एस.ई., हैदराबाद

प्रो. शुभदा वांजपे
अध्यक्षा, हिंदी विभाग, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद

डॉ. अनीता गांगुली
एसोसिएट प्रोफेसर, केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद

प्रधान समन्वयक

श्री सय्यद मतीन अहमद
समन्वयक, हिंदी विभाग,
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, आंध्र प्रदेश, हैदराबाद

सह-समन्वयक

श्री सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त'
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, आंध्र प्रदेश

विशेष सलाहकार

डॉ. रमाकांत अग्निहोत्री
भारतीय भाषा आधार पत्र संपादक, नई दिल्ली

श्री सुवर्ण विनायक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, आं.प्र.

पाठ्यपुस्तक विकास एवं प्रकाशन समिति

श्री जी. गोपाल रेड्डी
निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, आं.प्र.

डॉ. एन. उपेंदर रेड्डी
अध्यक्ष, सी&टी, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, आं.प्र.

श्री बी. सुधाकर
निदेशक, सरकारी पाठ्यपुस्तक प्रेस, आं.प्र.

विद्या से बढ़ें।
विनय से रहें।

आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा प्रकाशित, हैदराबाद

क़ानून का आदर करें।
अधिकार प्राप्त करें।

आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

© Government of Andhra Pradesh, Hyderabad

New Edition

First Published 2014

All rights reserved

No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form or by any means without the prior permission in writing of the publisher, nor be otherwise circulated in any form of binding or cover other than that in which it is published and without a similar condition including this condition being imposed on the subsequent purchaser.

The copy right holder of this book is the Director of School Education, Hyderabad, Andhra Pradesh.

This Book has been printed on 70 G.S.M. SS Maplitho
Title Page 200 G.S.M. White Art Card

Free Distribution by A.P. Government

Printed in India
at the Andhra Pradesh Govt.Text Book Press,
Mint Compound, Hyderabad,
Andhra Pradesh.

आमुख

आंध्र प्रदेश में हिंदी भाषा शिक्षण द्वितीय भाषा के रूप में छठवीं कक्षा से आरंभ किया जाता है। छठवीं कक्षा से दसवीं कक्षा तक की पाठ्यपुस्तकों में विविध भाषाई कौशलों के अभ्यास दिये गये हैं। छठवीं में सुनने-बोलने के कौशल पर, सातवीं में पढ़ने के कौशल पर, आठवीं में लिखने (स्वरचना) के कौशल पर और नवीं कक्षा में सृजनात्मक अभिव्यक्ति दक्षता पर विशेष प्रकाश डाला गया है। इसी को ध्यान में रखकर दसवीं कक्षा में भाषा कौशलों व दक्षताओं (शैक्षिक मापदंड) के समग्र विकास के आयामों का ध्यान रखा गया है। इसमें सामाजिक, मानवीय, संवैधानिक, ऐतिहासिक, बालस्वभाव, वैज्ञानिक आदि भावों को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है, जो बालक के सर्वांगीण विकास में सहयोग दे सकें। इन बातों व एनसीएफ-2005, आरटीई-2009, एससीएफ-2010 एवं आधार पत्र-2011 के सुझाव ध्यान में रखते हुए इस पाठ्य-पुस्तक का सृजन किया गया है।

त्रिभाषा सूत्र के अनुसार बालकों को माध्यमिक स्तर पर कम-से-कम तीन भाषाओं का ज्ञान कराना है। इस उद्देश्य से बालकों में छठवीं से दसवीं कक्षा तक द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी का विकास किया जा रहा है। इसके लिए उनके स्तरानुकूल, रुचियों के अनुरूप पाठ्य विषय व अभ्यास कार्य प्रस्तुत किये गये हैं। जिनमें अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया, अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता, भाषा की बात प्रमुख हैं। इनके साथ परियोजनाएँ भी जोड़ी गयी हैं। इन अभ्यासों के द्वारा छात्रों को विचार-विमर्श, विश्लेषण, चिंतनशील, क्रियाशील, तर्कशील, निर्णयात्मक, सृजनात्मक आदि दक्षताओं में सक्षम बनाना है। इसके साथ उच्चतम बौद्धिक कौशलों को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है, जिससे छात्र भावी नागरिक के रूप में सफल बन सकें।

इस पाठ्य-पुस्तक में गीत, कविताएँ, कहानियाँ, यात्रा-वृत्तांत, साक्षात्कार, पत्र, निबंध, एकांकी, पी.पी.टी. आदि पाठ दिये गये हैं। इन्हें बालकों के व्यावहारिक जीवन से जोड़ा गया है। इनके द्वारा छात्रों में, सोच-विचार कर उत्तर देना, तुलना कर निष्कर्ष निकालना और नवीन ज्ञान का संबंध पूर्व ज्ञान से जोड़ने की प्रवृत्ति का विकास होता है। इससे बालक को सृजनशील बनने के भरपूर अवसर मिलते हैं। वे अर्जित ज्ञान के आधार पर नवीन ज्ञान की रचना करते हैं। ये अभ्यास सहज व व्यावहारिक रूप से भाषार्जन करने में सहायक हैं।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद उन समस्त रचनाकारों के प्रति भी आभार व्यक्त करता है, जिनकी रचनाएँ पुस्तक में शामिल की गयी हैं। रचनाओं के प्रकाशनार्थ अनुमति देने के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली तथा अन्य सभी राज्य परिषदों, जिन्होंने इस पुस्तक को साकार रूप देने में सहयोग दिया है, उनके प्रति हम आभार प्रकट करते हैं। हमें विशेष, अमूल्य निर्देशन प्रदान करने में कर्त्तव्यनिष्ठ डॉ. अमरजीत सिंह, आई.ए.एस., अतिरिक्त सचिव, स्कूली शिक्षा व साक्षरता विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली और प्रो. संतोष पांडा, अध्यक्ष, एनसीटीई, नई दिल्ली ने अपूर्व सहयोग दिया है। हम इस सहयोग के प्रति सहृदय आभार प्रकट करते हैं। इसके निर्माण में सहयोग देने के लिए सभी जिला शिक्षा अधिकारियों, उप शिक्षाधिकारियों एवं प्रधानाध्यापकों को धन्यवाद। इस पाठ्यपुस्तक के विकास के लिए भाषाविदों, साहित्यकारों, अध्यापकों, अभिभावकों, छात्रों और समाचार-पत्रों के संपादकों, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, सरकारी व ग़ैर-सरकारी संगठनों के सुझाव सादर आमंत्रित हैं, जिन पर आगामी संस्करणों में ध्यान दिया जाएगा।

निदेशक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद
आंध्र प्रदेश, हैदराबाद

सहभागी गण

श्री सय्यद मतीन अहमद
समन्वयक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, आं.प्र.

श्री सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त'
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, आं. प्र.

श्रीमती जी. किरण
राज्य हिंदी संसाधक, आंध्र प्रदेश

श्री बी. रमेश बाबू
राज्य हिंदी संसाधक, आंध्र प्रदेश

डॉ. राजीव कुमार सिंह
राज्य हिंदी संसाधक, आंध्र प्रदेश

श्री मुहम्मद उमर अली
राज्य हिंदी संसाधक, आंध्र प्रदेश

श्री के. शिवराजन
राज्य हिंदी संसाधक, आंध्र प्रदेश

श्रीमती रेशमा बेगम
राज्य हिंदी संसाधक, आंध्र प्रदेश

कुमारी ऋतु भसीन
राज्य हिंदी संसाधक, आंध्र प्रदेश

श्री मुहम्मद सुलेमान 'आदिल'
राज्य हिंदी संसाधक, आंध्र प्रदेश

डॉ. मुहम्मद हाजी नूरानी
राज्य हिंदी संसाधक, आंध्र प्रदेश

श्री एस.मोगलय्या 'सागर'
राज्य हिंदी संसाधक, आंध्र प्रदेश

डॉ. सैयद एम.एम. वजाहत
राज्य हिंदी संसाधक, आंध्र प्रदेश

श्रीमती कविता
राज्य हिंदी संसाधक, आंध्र प्रदेश

डॉ. शेख़ अब्दुल ग़नी
राज्य हिंदी संसाधक, आंध्र प्रदेश

श्री मुहम्मद उसमान
राज्य हिंदी संसाधक, आंध्र प्रदेश

डॉ. मयाना खदीरुल्ला
राज्य हिंदी संसाधक, आंध्र प्रदेश

डॉ. दुर्गेश नंदिनी
राज्य हिंदी संसाधक, आंध्र प्रदेश

श्रीमती ए.वी. रमणा
जिला हिंदी संसाधक, हैदराबाद

चित्रांकन

श्री वड्डेपल्ली वेंकटेश्वर
जेड.पी.एच.एस. नकरेकल, नलगोंडा

श्री कुरेल्ला श्रीनिवास
प्रधानाध्यापक, जेड.पी.एच.एस. कुरमेड, नलगोंडा

श्री किशोर
सी.यू.पी.एस. अलवाला, नलगोंडा

डी.टी.पी., ले आउट & डिज़ाइन

श्रीमती एन. हेमलता, राज्य संसाधक, आंध्र प्रदेश

श्री के.प्रभाकर राव, श्रीमती के.वरलक्ष्मी - बापूजी हिंदी टंकण विद्यालय, तेनाली

मुहम्मद खदीर अहमद, मुहम्मद मनसूर खान, मुहम्मद यूसुफोद्दीन, आरीफ़ा सुल्ताना, परवीन सुल्ताना - हिंदी अकादमी, हैदराबाद

अध्यापकों से

■ इस पाठ्यपुस्तक को अच्छी तरह से उपयोग करने के लिए ''आमुख, छात्र अनिवार्य रूप से प्राप्त करने वाली दक्षताएँ'' शीर्षकीय पृष्ठ अवश्य पढ़ें।

■ सबसे पहले आप ''छात्रों के लिए सूचनाएँ'' पढ़ें। उसे अपने छात्रों से पढ़वाएँ। वह उन्हें समझ में आया या नहीं, इस पर ध्यान दें।

■ इस पाठ्यपुस्तक को लगभग 110 कालांशों को ध्यान में रखकर बनाया गया है। इनमें 100 कालांश पाठ शिक्षण के लिए और 10 कालांश उपवाचक पाठों के लिए निर्धारित किये गये हैं।

■ इसमें उन्मुखीकरण, प्रश्न, उद्देश्य, विधा विशेष, कवि परिचय, व छात्रों के लिए सूचनाएँ के लिए एक या दो कालांशों का उपयोग कर सकते हैं।

■ पाठ्य विषय पर चर्चा करने तथा उसकी अर्थग्राह्यता के लिए पाठ की सामग्री के आधार पर दो या तीन कालांशों का उपयोग कर सकते हैं।

■ उपवाचक पाठों के लिए एक या दो कालांशों का उपयोग कर सकते हैं । इन पाठों का उद्देश्य बालकों में पठन कौशल का विकास कर अर्थग्राह्यता की क्षमता को सुदृढ़ बनाना है।

■ प्रत्येक इकाई में एक पठन-हेतु पाठ भी दिया गया है। इसका उद्देश्य बालकों को मनोरंजन प्रदान करना व विषय के अनुसार सोचने व विचारने की क्षमता का विकास करना है। यह सामग्री पूर्णतः बालकों के स्वपठन के लिए है। अतः इसमें किसी प्रकार के प्रश्न नहीं पूछना चाहिए।

■ अभ्यासों के लिए तीन या चार कालांशों का उपयोग कर सकते हैं।

■ पाठ के आरंभ में दिया गया ''उन्मुखीकरण'' अंश का उद्देश्य प्रस्तावना प्रश्नों के माध्यम से पूर्ण कक्षा क्रियाकलाप करवाना है।

■ पाठ में उन्मुखीकरण के प्रश्न, उद्देश्य, विधा विशेष, कवि परिचय आदि छात्रों से पढ़वायें। चर्चा भी करवायें।

■ ''छात्रों के लिए सूचनाएँ'' का उद्देश्य छात्रों में अर्थ संग्रहण की क्षमता का विकास करना है।

■ पाठ के विषय की अर्थग्राह्यता के लिए चर्चा पद्धति, प्रश्नोत्तर पद्धति, कथोपकथन, प्रदर्शन पद्धति, नाटकीकरण, क्रियाकलाप आदि पद्धतियों का उपयोग पाठों के स्वभाव के अनुरूप करें।

■ पाठ शिक्षण का अर्थ पाठ्य सामग्री समझाना मात्र नहीं है। उसमें निहित मूल्य, रचनाकार का उद्देश्य, पाठ का मूल भाव छात्रों को समझ में आना चाहिए। इसके लिए विचारात्मक प्रश्न पूछें। शब्द विन्यास, मुहावरे, कहावतें, विचारात्मक और संदेशात्मक वाक्यों का अर्थ छात्र स्वयं करने योग्य शिक्षण हो। छात्रों को विचार प्रकट करने में, समकालीन घटनाओं पर चर्चा करने में व बहुकोणीय विश्लेषण करने में सक्षम बनायें।

■ छात्रों में भाषाई क्षमताओं का विकास करने के लिए हर पाठ के अंत में अभ्यास दिये गये हैं। इन्हें छात्रों को स्वयं हल करने के अवसर देने चाहिए। इसके लिए अध्यापक आवश्यकतानुसार

आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

मार्गदर्शन करें।

- एक-एक अभ्यास के लिए एक-एक कालांश दिया गया है। अतः निर्धारित कालांशों में छात्रों को लेखन के आवश्यक सुझाव दें। छात्रों द्वारा किये गये लिखित कार्य की जाँच करें।
- छात्रों को प्रश्नों के उत्तर स्वयं लिखने के लिए प्रेरित करें। **गाइड, स्टडी मटेरियल, क्वश्चन बैंक** आदि का उपयोग करना मना कर दिया गया है। कारण, बोर्ड परीक्षा में पाठ्यपुस्तक में से जैसे के वैसे प्रश्न नहीं पूछे जाएँगे, बल्कि उस स्वभाव वाले प्रश्न पूछे जा सकते हैं। ऐसे प्रश्नों के उत्तर स्व-लेखन अभ्यास करने वाले छात्र सरलता से दे सकते हैं।
- ''अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया'' में ''अ'' उपशीर्षकीय प्रश्न ''सुनिए-बोलिए'' के लिए दिये गये प्रश्न हैं। इसे पूर्ण कक्षा क्रियाकलाप के रूप में करवाना चाहिए। ''आ'', ''इ'', ''ई'' उपशीर्षकीय प्रश्न ''पढ़िए-समझिए'' के लिए दिये गये हैं। इन्हें व्यक्तिगत रूप से करवाना चाहिए। पाठ पढ़कर उत्तर लिखने के लिए दिये जाने वाले प्रश्न गृहकार्य के रूप में दिये जा सकते हैं।
- ''अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता'' अभ्यास के प्रश्नों में ''अ'',''आ'' उपशीर्षकीय प्रश्न स्व-रचना के प्रश्न हैं। इसमें ''अ'' प्रश्न के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में और ''आ'' प्रश्न के उत्तर ''आठ-दस'' पंक्तियों में लिखने के लिए छात्रों को प्रेरित करें। इन्हें कक्षा में समूह कार्य के रूप में करवायें। तत्पश्चात व्यक्तिगत तौर पर लिखने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। इस तरह लिखे गये उत्तर कक्षा में पढ़वायें। छात्रों द्वारा लिखे गये उत्तरों की जाँच भाव, वाक्य, शब्द, अक्षर आदि दोष सुधारते हुए करें।
- ''इ'' प्रश्न का संबंध ''सृजनात्मक अभिव्यक्ति'' से है। इसके लिए छात्रों को पर्याप्त उदाहरण दें। समूह में लिखने के लिए कहें। प्रस्तुतीकरण के समय इन्हें सुधारना चाहिए।
- ''परियोजना कार्य'' करवाने से पूर्व उचित दिशा-निर्देश करें। परियोजना कार्य का प्रदर्शन कक्षा में करवायें।
- पाठ का मतलब केवल पाठ पढ़ाना नहीं है। ''उन्मुखीकरण'' से लेकर ''परियोजना कार्य'' तक दिये गये सभी क्रियाकलाप उचित दिशा-निर्देश द्वारा करवाने पर ही निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति हो सकती है। इसके लिए अध्यापक वार्षिक योजना और पाठयोजना भी बना लें।
- वार्षिक योजना इस तरह बनायें-

  1) कक्षा 2) विषय 3) आवश्यक कालांशों की संख्या
  4) शैक्षिक वर्ष की समाप्ति तक प्राप्त किये जाने वाले शैक्षिक मापदंड 5) (मासिक) पाठों का विभाजन

मास	शिक्षण अंश	आवश्यक कालांशों की संख्या	शिक्षण योजना	आवश्यक संसाधन या सामग्री	टिप्पणी

6) अध्यापक प्रतिक्रियाएँ   7) प्रधान अध्यापक के सुझाव व निर्देश

■ किसी एक पाठ को ध्यान में रखकर पाठयोजना निम्नलिखित तरीक़े से तैयार करें।

1) पाठ का नाम   2) आवश्यक कालांशों की संख्या

3) पाठ द्वारा प्राप्त किये जाने वाले शैक्षिक मापदंड   4) कालांशवार विभाजन

कालांशों की संख्या	शिक्षण अंश	शिक्षण योजना	आवश्यक संसाधन या सामग्री

5) अध्यापक की तैयारी, अतिरिक्त जानकारी का संग्रहण   6) अध्यापक की प्रतिक्रियाएँ

■ प्रत्येक कालांश में भाषा शिक्षण निम्नलिखित सोपानों के अनुसार होना चाहिए। वे हैं-

I. **परिचय** : संबोधन, उन्मुखीकरण, शीर्षक घोषणा, उद्देश्य, रचनाकार का परिचय या संबोधन, पुनरावृत्ति

II. **पाठ शिक्षण, चर्चा, अर्थग्राह्यता** : छात्रों द्वारा सस्वर वाचन, अध्यापक द्वारा आदर्श वाचन, मौन वाचन, अर्थ संग्रहण, पाठ्य विषय पर चर्चा - अर्थग्राह्यता, शैक्षिक मापदंडों की प्राप्ति। *(सूचनाः कविता पाठ में सबसे पहले अध्यापक को कविता का सस्वर वाचन करना चाहिए।)*

III. **छात्र अर्थग्राह्यता की जाँच**

IV. **गृहकार्य**

■ भाषा शिक्षण को केवल पाठ्य पुस्तकों तक ही सीमित न करें। पाठशाला पुस्तकालय, इंटरनेट, समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, बाल साहित्य आदि का उपयोग करवायें।

■ कक्षा में भाषाई वातावरण की स्थापना के लिए आवश्यक शब्दकोश, साहित्यकारों की जीवनियाँ, दृश्य-श्रवण सामग्री आदि की व्यवस्था करें।

■ पाठशाला में भाषा विकास के लिए आवश्यक क्रियाकलाप जैसे- भाषा मेला, भाषा उत्सव, विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम, बालकवि सम्मेलन, भाषण, निबंध प्रतियोगिताएँ, वार्षिकोत्सव आदि सहगामी क्रियाओं का आयोजन करें। जिसमें छात्र खुलकर भाग ले सकें।

■ छात्रों के सृजनात्मक कार्यों का प्रदर्शन कक्षा में करें।

■ भाषा हमारे विचारों के आदान-प्रदान का अपूर्व साधन है। यह हमारी संस्कृति भी है। इसमें हमारी सभ्यता निहित है। यह किसी एक जात-पाँत, धर्म या वर्ग की संपत्ति नहीं है । यह तो असीम संपदा है। जिसे पाने का अधिकार हर बालक को है। ईश्वर ने बालक को भाषागत विकास करने की प्राकृतिक सत्ता दे रखी है। केवल अनुकूल वातावरण बनाये रखकर उचित मार्गदर्शन करने से बालक भाषा में अपूर्व विकास कर सकते हैं। अतः कक्षा में शिक्षण की तुलना में भाषाई क्रियाकलापों का अत्यधिक क्रियान्वयन करवायें।

आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

राष्ट्र-गान

जन-गण-मन अधिनायक जय हे!
भारत भाग्य विधाता।
पंजाब, सिंध, गुजरात, मराठा,
द्राविड़, उत्कल बंग।
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा
उच्छल जलधि-तरंग।
तव शुभ नामे जागे।
तव शुभ आशिष मांगे,
गाहे तव जय गाथा!
जन-गण-मंगलदायक जय हे!
भारत-भाग्य-विधाता।
जय हे! जय हे! जय हे!
जय, जय, जय, जय हे!

- रवींद्रनाथ टैगोर

वंदेमातरम्

वंदेमातरम् वंदेमातरम्
सुजलाम् सुफलाम् मलयज शीतलाम्
सस्यश्यामलाम् मातरम् वंदेमातरम्
शुभ्रज्योत्सना पुलकित यामिनी
पुल्लकुसुमिता द्रुमदल शोभिनी
सुहासिनी सुमधुर भाषिणी
सुखदाम् वरदाम् मातरम्
वंदेमातरम्

-बंकिमचंद्र चटर्जी

सारे जहाँ से अच्छा

सारे जहाँ से अच्छा हिंदोस्ताँ हमारा।
हम बुलबुले हैं, उसकी यह गुलसिताँ हमारा।।
पर्वत वो सबसे ऊँचा, हमसाया आसमाँ का।
वो संतरी हमारा, वो पासबाँ हमारा।।
गोदी में खेलती हैं, जिसकी हज़ारों नदियाँ।
गुलशन है जिनके दम से, रश्क-ए-जिनाँ हमारा।।
मज़हब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना।
हिंदी हैं हम वतन हैं, हिंदोस्ताँ हमारा।।

- मोहम्मद इक़बाल

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है और समस्त भारतीय मेरे भाई-बहन हैं। मैं अपने देश से प्रेम करता हूँ और इससे प्राप्त विशाल एवं विविध ज्ञान-भंडार पर मुझे गर्व है। मैं सर्वदा इस देश एवं इसके ज्ञान-भंडार के अनुरूप बनने का प्रयास करूँगा। मैं अपने माता-पिता और अध्यापकों तथा समस्त गुरुजनों का आदर करूँगा और प्रत्येक व्यक्ति के प्रति नम्रतापूर्वक व्यवहार करूँगा। मैं जीव-जंतुओं से भी प्रेमपूर्वक व्यवहार करूँगा। मैं अपने देश और उसकी जनता के प्रति अपनी भक्ति की शपथ लेता हूँ। उनके मंगल एवं समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है।

विषय सूची

इकाई - I	1.	**बरसते बादल** (कविता) *सुमित्रानंदन पंत*	- 1
	2.	**ईदगाह** (कहानी) *प्रेमचंद*	- 5
		यह रास्ता कहाँ जाता है? (पठन हेतु नाटक) *बाबू रामसिंह*	- 10
	3.	**हम भारतवासी** (कविता) *आर.पी.'निशंक'*	- 13
		✯ **शांति की राह में** (उपवाचक - निबंध) *संकलित*	- 17
इकाई - II	4.	**कण-कण का अधिकारी** (कविता) *डॉ. रामधारी सिंह 'दिनकर'*	- 19
	5.	**लोकगीत** (निबंध) *भगवतशरण उपाध्याय*	- 23
		उलझन (पठन हेतु कविताएँ)	- 29
	6.	**अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी** (पत्र) *संकलित*	- 30
		✯ **दो कलाकार** (उपवाचक - कहानी) *मन्नू भंडारी*	- 35
इकाई-III	7.	**भक्ति पद** (कविता) *रैदास, मीराबाई*	- 39
	8.	**स्वराज्य की नींव** (एकांकी) *विष्णु प्रभाकर*	- 43
		माँ मुझे आने दे! (पठन हेतु कविता) *मृदुल जोशी*	- 50
	9.	**दक्षिणी गंगा गोदावरी** (यात्रा-वृत्तांत) *काका कालेलकर*	- 51
		✯ **अपने स्कूल को एक उपहार** (उपवाचक - कहानी) *ऋतु भूषण*	- 56
इकाई-IV	10.	**नीति दोहे** (कविता) *रहीम, बिहारी*	- 58
	11.	**जल ही जीवन है** (कहानी) *श्री प्रकाश*	- 61
		क्या आपको पता है? (पठन हेतु पी.पी.टी. निबंध) *जेफ ब्रेनमन*	- 66
	12.	**धरती के सवाल अंतरिक्ष के जवाब** (साक्षात्कार) *संकलित*	- 68
		✯ **अनोखा उपाय** (उपवाचक - अनूदित कहानी) *डॉ. गवूरि भरद्वाज*	- 74

इकाइयों का मासिक विभाजन इस तरह है -

पहली इकाई - जून,जुलाई | *दूसरी इकाई - अगस्त,सितंबर*
तीसरी इकाई - अक्तूबर,नवंबर | *चौथी इकाई - दिसंबर,जनवरी*

छात्र अनिवार्य रूप से निम्नलिखित दक्षताएँ प्राप्त करें -

1. अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

* पद्य, गीत, कविता, वार्तालाप आदि सुनकर समझ सकें। अपने शब्दों में कह सकें।
* संबंधित अंशों के कारण बता सकें।
* पद्य, गीत धाराप्रवाह के साथ गा सकें। सारांश अथवा भाव अपने शब्दों में लिख सकें।
* अपठित अंश पढ़कर अर्थग्राह्यता के साथ उत्तर दे सकें।
* सूचित अंश का शीर्षक दे सकें। अलग-अलग अंशों में क्रमिकता बता सकें।
* छात्र समाज के प्रति संवेदनशील बन सकें।

2. अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

* पाठ्यांश की घटनाओं, अंशों, पात्रों, स्थानों, विषयों के बारे में समझकर अपने शब्दों में लिख सकें।
* अधूरे विषय, कहानी, कविता आगे बढ़ा सकें।
* अलग-अलग घटनाओं में स्वयं को रखकर घटना आगे बढ़ा सकें।
* शब्दों का विविध संदर्भों में सही पद्धति में वाक्य प्रयोग कर सकें।
* पर्याय शब्दों के अर्थ ग्रहण कर दैनिक जीवन में उपयोग कर सकें।
* पद्य या गद्य को एक विधा से दूसरी विधा में बदल सकें।
* निमंत्रण, बधाई पत्र, दीवार पत्रिका, पोस्टर, पॉवर पाइंट प्रस्तुतीकरण आदि तैयार कर सकें।
* छात्रों को अभिव्यक्ति में सृजनशील बना सकें।

3. भाषा की बात

* कवि या लेखकों की रचनाओं की प्रशंसा कर सकें।
* प्रेरणा देने वाले किसी भी अंश की प्रशंसा लिंग, धर्म, वर्ग और भेद रहित कर सकें।
* भिन्न संस्कृति, संप्रदायों की प्रशंसा कर सकें।
* दैनिक जीवन में प्रयुक्त भाषा के आधार पर व्याकरणांशों की पहचान कर सकें।
* पद्य और गद्य के विविध रूपों व विधाओं की जानकारी रखते हुए उन्हें सृजनात्मक रूप दे सकें।

4. परियोजना कार्य

* संग्रहण कर विषय की जानकारी अर्जित कर सकें। विषय का प्रस्तुतीकरण कर सकें।

इकाई - I

1. बरसते बादल

- सुमित्रानंदन पंत

उन्मुखीकरण

क्या गाती हो, किसे बुलाती,
बतला दो कोयल रानी।
प्यासी धरती देख माँगती,
हो क्या मेघों से पानी?

प्रश्न

1. मीठे गीत कौन गाती है?
2. प्यासी धरती पानी किससे माँगती है?
3. बादल प्रकृति की शोभा बढ़ाते हैं। कैसे?

उद्देश्य

प्रकृति के प्रति काव्य रचनाओं के प्रोत्साहन के साथ-साथ सौंदर्यबोध कराना, मनोरंजन की भावना जगाना और प्रकृति संरक्षण के लिए प्रेरित करना इसका उद्देश्य है।

विधा विशेष

'बरसते बादल' कविता पाठ है। कविता भावनाओं को उदात्त बनाने के साथ-साथ सौंदर्यबोध को भी सजाती-संवारती है। प्रस्तुत कविता नाद (ध्वनि) के साथ गेय योग्य है। इसमें अनुप्रास का सुंदर प्रयोग है।

कवि परिचय

प्रकृति के बेजोड़ कवि माने जाने वाले सुमित्रानंदन पंत का जन्म सन् 1900 में अल्मोड़ा में हुआ। साहित्य लेखन के लिए इन्हें 'साहित्य अकादमी', 'सोवियत रूस' और 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' दिया गया। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं- *वीणा, ग्रंथि, पल्लव, गुंजन, युगांत, ग्राम्या, स्वर्णकिरण, कला और बूढ़ा चाँद तथा चिदंबरा* आदि। इनका निधन सन् 1977 में हुआ।

छात्रों के लिए सूचनाएँ

1. विषय प्रवेश ध्यान से पढ़िए, पाठ्य विषय समझिए।
2. पाठ ध्यान से पढ़िए, जिस शब्द का अर्थ समझ में नहीं आता उसके नीचे रेखा खींचिए।
3. रेखांकित शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।
4. समझ में न आने वाले अंश हो तो छात्र समूहों में या अध्यापक से चर्चा कीजिए।

विषय प्रवेश : *वर्षा ऋतु हमेशा से सबकी प्रिय ऋतु रही है। वर्षा के समय प्रकृति की सुंदरता देखने लायक़ होती है। पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, मनुष्य और यहाँ तक की धरती भी खुशी से झूम उठती है।इसी सौंदर्य का वर्णन यहाँ प्रस्तुत किया गया है।*

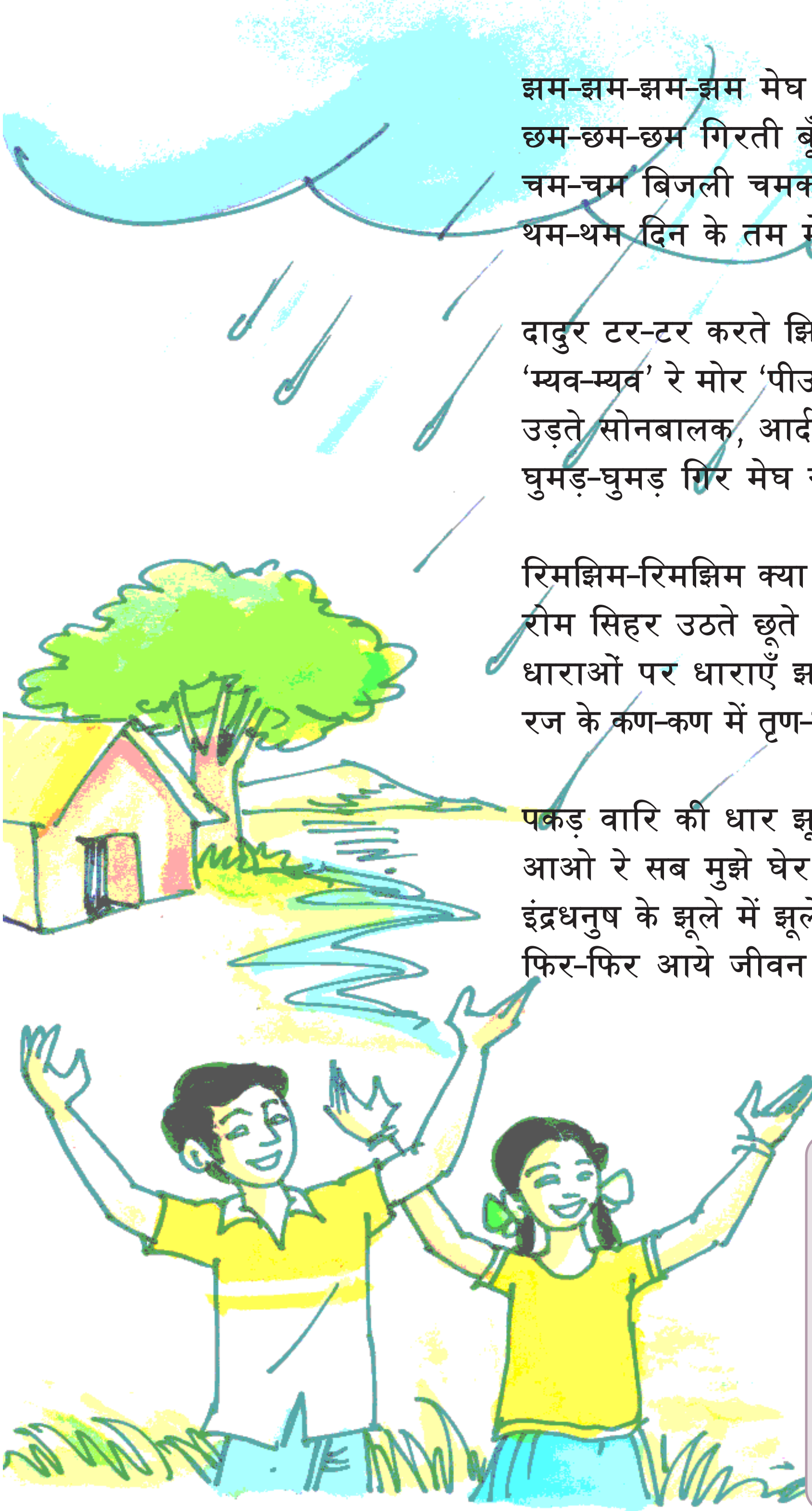

झम-झम-झम-झम मेघ बरसते हैं सावन के,
छम-छम-छम गिरती बूँदें तरुओं से छन के।
चम-चम बिजली चमक रही रे उर में घन के,
थम-थम दिन के तम में सपने जगते मन के।।

दादुर टर-टर करते झिल्ली बजती झन-झन,
'म्यव-म्यव' रे मोर 'पीउ' 'पीउ' चातक के गण।
उड़ते सोनबालक, आर्द-सुख से कर क्रंदन,
घुमड़-घुमड़ गिर मेघ गगन में भरते गर्जन।।

रिमझिम-रिमझिम क्या कुछ कहते बूँदों के स्वर,
रोम सिहर उठते छूते वे भीतर अंतर।
धाराओं पर धाराएँ झरती धरती पर,
रज के कण-कण में तृण-तृण को पुलकावलि थर।।

पकड़ वारि की धार झूलता है मेरा मन,
आओ रे सब मुझे घेर कर गाओ सावन।
इंद्रधनुष के झूले में झूलें मिल सब जन,
फिर-फिर आये जीवन में सावन मनभावन।।

- सुमित्रानंदन पंत

प्रश्न

1. मेघ, बिजली और बूँदों का वर्णन यहाँ कैसे किया गया है?
2. प्रकृति की कौन-कौनसी चीज़ें मन को छू लेती हैं?
3. तृण-तृण की प्रसन्नता का क्या भाव है?

 प्रकृति ईश्वरीय सृष्टि की सर्वोत्तम देन है, इसकी रक्षा करना हमारा कर्त्तव्य है। - सुंदरलाल बहुगुणा

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(अ) प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. धरती की शोभा का प्रमुख कारण वर्षा है। इस पर अपने विचार बताइए।
2. घने बादलों का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

(आ) वाक्य उचित क्रम में लिखिए।

1. हैं झम-झम बरसते झम-झम मेघ के सावन।
2. गगन में गर्जन घुमड़-घुमड़ गिर भरते मेघ।
3. धरती पर झरती धाराएँ पर धाराओं।

(इ) नीचे दिये गये भाव की पंक्तियाँ लिखिए।

1. बादलों के घोर अंधकार के बीच बिजली चमक रही है और मन दिन में ही सपने देखने लगा है।
2. मिट्टी के कण-कण से कोमल अंकुर फूट रहे हैं।
3. कवि चाहता है कि जीवन में सावन बार-बार आयें और सब मिलकर झूलों में झूलें।

(ई) पद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

बादल और बूँदें, बंद किये हैं बादल ने
अंबर के दरवाजे सारे, नहीं नज़र आता है सूरज ना कहीं चाँद-सितारे?
ऐसा मौसम देखकर, चिड़ियों ने भी पंख पसारे,
हो प्रसन्न धरती के वासी, नभ की ओर निहारे।।

1. इसने अंबर के दरवाज़े बंद कर दिये हैं-
   (अ) आकाश (आ) सूरज (इ) चाँद (ई) बादल
2. पंख किसने पसारे हैं?
   (अ) चिड़िया (आ) मौसम (इ) धरती (ई) सितारे
3. पद्यांश में आया युग्म शब्द है-
   (अ) बादल-अंबर (आ) सूरज-चाँद (इ) चाँद-सितारे (ई) धरती-वासी
4. धरती के लोग किस ओर निहार रहे हैं?
   (अ) चिड़िया (आ) नभ (इ) बादल (ई) चाँद
5. इस कविता का विषय है-
   (अ) प्रकृति (आ) सूरज (इ) तारे (ई) अंबर

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

(अ) इन प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए।

1. वर्षा सभी प्राणियों के लिए जीवन का आधार है। कैसे?
2. वर्षा ऋतु के प्राकृतिक सौंदर्य पर अपने विचार लिखिए।

(आ) **'बरसते बादल' कविता में प्रकृति का सुंदर चित्रण है। उसे अपने शब्दों में लिखिए।**

(इ) **प्रकृति सौंदर्य पर एक छोटी-सी कविता लिखिए।**

(ई) **'फिर-फिर आये जीवन में सावन मनभावन' ऐसा क्यों कहा गया होगा? स्पष्ट कीजिए।**

भाषा की बात

(अ) **कोष्ठक में दी गयी सूचना पढ़िए और उसके अनुसार कीजिए।**

1. तरु, गगन, घन (एक-एक शब्द का वाक्य प्रयोग कीजिए और उसके पर्याय शब्द लिखिए।)
2. सावन, सपना, सूरज (एक-एक शब्द का तत्सम रूप लिखिए।)
3. गण, वारि, चंद्र (एक-एक शब्द का तद्भव रूप लिखिए।)
4. चम-चम, तृण-तृण, फिर-फिर (पुनरुक्ति शब्दों से वाक्य प्रयोग कीजिए।)

(आ) **इन्हें समझिए और सूचना के अनुसार कीजिए।**

1. धाराओं पर धाराएँ झरती धरती पर। (अंतर स्पष्ट कीजिए।)
2. इंद्रधनुष के झूले में झूलें मिल सब जन।(अंतर स्पष्ट कीजिए।)
3. बादल बरसते हैं। (रेखांकित शब्द का पद परिचय दीजिए।)
4. मन को भाने वाला (एक शब्द में लिखिए।)
5. पेड़-पौधे, पशु-पक्षी (समास पहचानिए।)

(इ) **रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए और इस तरह के कुछ वाक्य बनाइए।**

1. बरसते बादल अच्छे लगते हैं।
2. झरती धाराएँ सुंदर लगती हैं।
3. गिरती बूँदें छम-छम करती हैं।
4. बहता पानी शुद्ध होता है।
5. बढ़ता हुआ पौधा, खिलते हुए फूल, फैलती हुई सुगंध आदि अच्छे लगते हैं।

(ई) **कविता की पंक्तियों पर ध्यान दीजिए और अलंकार समझिए।**

झम-झम-झम-झम मेघ बरसते हैं सावन के,
छम-छम-छम गिरती बूँदें तरुओं से छन के।

अलंकार शब्द का अर्थ है- आभूषण। किसी बात को साधारण ढंग से न कहकर चमत्कार व सौंदर्यपूर्ण ढंग से कहना ही अलंकार है।

इस कविता में अनुप्रास अलंकार का सुंदर प्रयोग हुआ है। जब वाक्य में कोई अक्षर या शब्द बार-बार प्रयोग होता है तो वहाँ वाक्य का ध्वन्यात्मक सौंदर्य बढ़ जाता है। इस प्रकार का काव्य-सौंदर्य अनुप्रास अलंकार कहलाता है।

परियोजना कार्य

वर्षा, बादल, नदी, सागर, सूरज, चाँद, झरने आदि में किसी एक विषय पर प्रकृति वर्णन से जुड़ी कविता का संग्रह कीजिए। कक्षा में उसका प्रदर्शन कीजिए।

2 ईदगाह

– प्रेमचंद

उन्मुखीकरण

पथिकों को जलती दुपहर में,
पेड़ सदा देते हैं छाया।
खुशबू भरे फूल देते हैं,
हमको नव फूलों की माला,
त्यागी तरुओं के जीवन से,
हम भी तो कुछ देना सीखें।

प्रश्न

1. पथिकों को जलती दुपहर में सुख व आराम किससे मिलता है?
2. खुशबू भरे फूल हमें क्या देते हैं?
3. 'हम भी तो कुछ देना सीखें' - कवि ने ऐसा क्यों कहा होगा?

उद्देश्य

कहानी विधा की भाषा शैली से परिचित कराते हुए छात्रों में कहानी लेखन कला का विकास करना और त्याग, सद्भाव व विवेक जैसे संवेदनशील कर्त्तव्य बोध संबंधी गुणों का विकास करना और बड़े-बुज़ुर्गों के प्रति श्रद्धा व आदर की भावना का विकास करना है।

विधा विशेष

'कहानी' शब्द 'कह' धातु के साथ 'आनी' कृत प्रत्यय जोड़ने से बना है। 'कह' का आशय 'कहना' से है। किसी घटना या बात का सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया जाना ही कहानी है। इस कहानी में दादी व पोते का मार्मिक प्रेम दर्शाया गया है। इसमें कथन व संदर्भ, वातावरण का सजीव चित्रण है। इसमें बाल्यावस्था की निर्मल भावनाओं का सुंदर प्रतिबिंब दर्शाया गया है।

लेखक परिचय

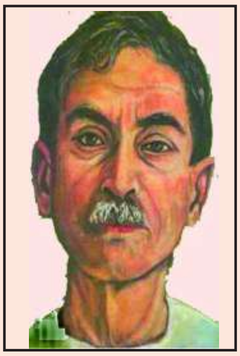

प्रेमचंद का जन्म एक ग़रीब घराने में काशी में 31 जुलाई, 1880 को हुआ। इनके बचपन का नाम धनपत राय श्रीवास्तव था। इन्होंने ट्यूशन पढ़ाते हुए मैट्रिक तथा नौकरी करते हुए बी.ए. पास किया। इन्होंने लगभग एक दर्जन उपन्यास और ढाई सौ कहानियों की रचना की। इन्हें "उपन्यास सम्राट" भी कहा जाता है। इनकी कहानियाँ मानसरोवर शीर्षक से आठ खंडों में संकलित हैं। *गोदान, गबन, सेवासदन, निर्मला, कर्मभूमि, रंगभूमि, कायाकल्प, प्रतिज्ञा, मंगलसूत्र* आदि इनके *प्रमुख उपन्यास हैं। इनकी प्रमुख कहानियों में पंचपरमेश्वर, बड़े घर की बेटी, कफ़न* आदि प्रमुख हैं।

छात्रों के लिए सूचनाएँ

1. विषय प्रवेश ध्यान से पढ़िए, पाठ्य विषय समझिए।
2. पाठ ध्यान से पढ़िए, जिस शब्द का अर्थ समझ में नहीं आता उसके नीचे रेखा खींचिए।
3. रेखांकित शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।
4. समझ में न आने वाले अंश हो तो छात्र समूहों में या अध्यापक से चर्चा कीजिए।

विषय प्रवेश : *प्राचीन काल से ही नैतिक मूल्य भारतीय जीवन के प्रतिबिंब रहे हैं। इसका रूप हर भारतीय में समा हुआ है। हम अपने बुज़ुर्गों (वयोवृद्ध) का बड़ा ध्यान रखते हैं। जैसे इस कहानी में दर्शाया गया है-*

रमज़ान के पूरे तीस रोज़ों के बाद आज ईद आयी है। कितना मनोहर, कितना सुहावना प्रभात! वृक्षों पर कुछ अजीब हरियाली है। खेतों में कुछ अजीब रौनक़ है, आसमान पर कुछ अजीब लालिमा है। आज का सूर्य देखो, कितना प्यारा, कितना शीतल है! मानो संसार को ईद की बधाई दे रहा है! ईदगाह जाने की तैयारियाँ हो रही हैं।

लड़के सबसे ज़्यादा प्रसन्न हैं। बार-बार जेब से खज़ाना निकालकर गिनते हैं। महमूद गिनता है, एक-दो, दस-बारह। उसके पास बारह पैसे हैं। मोहसिन के पास पंद्रह पैसे हैं। इनसे अनगिनत चीज़ें लाएँगे- खिलौने, मिठाइयाँ, बिगुल, गेंद और न जाने क्या-क्या। और सबसे ज़्यादा प्रसन्न है हामिद। वह भोली सूरत का चार-पाँच साल का दुबला-पतला लड़का था। उसका पिता गत वर्ष हैज़े की भेंट हो गया और माँ न जाने क्यों पीली पड़ती गयी और एक दिन वह भी परलोक सिधार गयी। किसी को पता न चला कि आख़िर अचानक यह क्या हुआ।

अब हामिद अपनी दादी अमीना की गोदी में सोता है। दादी अम्मा हामिद से कहती है कि उसके अब्बाजान रुपये कमाने गये हैं। अम्मीजान अल्लाह मियाँ के घर से उसके लिए बहुत-सी अच्छी चीज़ें लाने गयी हैं। आशा तो बड़ी चीज़ है। हामिद के पाँव में जूते नहीं हैं, सिर पर एक पुरानी टोपी है, जिसका गोटा काला पड़ गया है। फिर भी वह प्रसन्न है।

अभागिन अमीना अपनी कोठरी में बैठी रो रही है। आज ईद का दिन है और उसके घर में दाना तक नहीं है। लेकिन हामिद! उसके अंदर प्रकाश है, बाहर आशा की किरण। हामिद भीतर जाकर दादी से कहता है- ''तुम डरना नहीं अम्मा, मैं सबसे पहले आऊँगा। बिलकुल न डरना।

अमीना का दिल कचोट रहा है। गाँव के बच्चे अपने पिता के साथ जा रहे हैं। हामिद का अमीना के सिवा कौन है? भीड़ में बच्चा कहीं खो गया तो क्या होगा? तीन कोस चलेगा कैसे? पैरों में छाले पड़ जाएँगे। जूते भी तो नहीं हैं। वह थोड़ी दूर चलकर, उसे गोदी ले लेगी, लेकिन यहाँ सेवइयाँ कौन पकाएगा? पैसे होते तो लौटते-लौटते सारी सामग्री जमा करके झटपट बना लेती। यहाँ तो चीज़ें जमा करते-करते घंटों लगेंगे।

गाँव से मेला चला। और बच्चों के साथ हामिद जा रहा था। शहर का दामन आ गया। सड़क के दोनों ओर अमीरों के बगीचे हैं। बड़ी-बड़ी इमारतें - अदालत, कॉलेज, क्लब, घर आदि दिखायी देने लगे। ईदगाह जानेवालों की टोलियाँ नज़र आने लगीं। एक-से-एक भड़कीले वस्त्र पहने हुए हैं। सहसा ईदगाह नज़र आयी और उसी के पास ईद का मेला। नमाज़ पूरी होते ही सब बच्चे मिठाई

और खिलौनों की दुकानों पर धावा बोल देते हैं। हामिद दूर खड़ा है। उसके पास केवल तीन पैसे हैं। मोहसिन भिश्ती खरीदता है, महमूद सिपाही, नूरे वकील और सम्मी धोबिन। हामिद खिलौनों को ललचाई आँखों से देखता है। वह अपने आपको समझाता है, ''मिट्टी के तो हैं, गिरें तो चकनाचूर हो जाएँ।'' फिर मिठाइयों की दुकानें आती हैं। किसी ने रेवड़ियाँ लीं, किसी ने गुलाबजामुन, किसी ने सोहन हलवा। मोहसिन कहता है, ''हामिद, रेवड़ी ले ले, कितनी खुशबूदार है।'' हामिद ने कहा, ''रखे रहो, क्या मेरे पास पैसे नहीं हैं?''

सम्मी बोला, ''तीन ही पैसे तो हैं, तीन पैसे में क्या-क्या लोगे?'' हामिद मौन रह गया।

मिठाइयों के बाद लोहे की चीज़ों की दुकानें आती हैं। कई चिमटे रखे हुए थे। हामिद को ख्याल आता है, दादी के पास चिमटा नहीं है। तवे से रोटियाँ उतारती हैं तो हाथ जल जाते हैं, अगर चिमटा ले जाकर दादी को दे दें, तो वह कितनी प्रसन्न होंगी। फिर उनकी उँगलियाँ कभी नहीं जलेंगी। दादी अम्मा चिमटा देखते ही दौड़कर मेरे हाथ से ले लेंगी और कहेंगी- ''मेरा बच्चा! अम्मा के लिए चिमटा लाया है। हज़ारों दुआएँ देती रहेंगी। फिर पड़ोस की औरतों को दिखाएँगी। सारे गाँव में चर्चा होने लगेगी। हामिद चिमटा लाया है। कितना अच्छा लड़का है। बड़ों की दुआएँ सीधे अल्लाह के दरबार में पहुँचती हैं और तुरंत सुनी जाती हैं। हामिद ने दुकानदार से पूछा, ''यह चिमटा कितने का है?'' छह पैसे क़ीमत सुनकर हामिद का दिल बैठ गया। हामिद ने कलेजा मज़बूत करके कहा, ''तीन पैसे लोगे?'' दुकानदार ने बुलाकर चिमटा दे दिया। हामिद ने उसे इस तरह कंधे पर रखा, मानो बंदूक हो और शान से अकड़ता हुआ संगियों के पास आया। दोस्तों ने मज़ाक किया, ''यह चिमटा क्यों लाया पगले! इसे क्या करेगा?''

घर आने पर अमीना हामिद की आवाज़ सुनते ही दौड़ी और उसे गोद में उठाकर प्यार करने लगीं। सहसा हाथ में चिमटा देखकर वह चौंकी।

''यह चिमटा कहाँ से लाया?''

''मैंने मोल लिया है अम्मा।''

''कितने पैसे में?''

''तीन पैसे दिये।''

प्रश्न

1. ईद के दिन का चित्रण अपने शब्दों में कीजिए।
2. हामिद ग़रीब है फिर भी वह ईद के दिन अन्य लड़कों से अधिक प्रसन्न है, क्यों?
3. हामिद के खुशी का कारण क्या है?

अमीना ने अपने माथे पर हाथ रखा। वह अफ़सोस करती हुई, आह! भरती हुई बोली- ''यह कैसा बेसमझ लड़का है कि दोपहर हुई, कुछ खाया न पिया। लाया क्या, चिमटा! सारे मेले में तुझे और कोई चीज़ न मिली, जो यह लोहे का चिमटा उठा लाया?''

हामिद ने अपराधी भाव से कहा, ''तुम्हारी उँगलियाँ तवे से जल जाती थीं, यह मुझसे देखा न जाता था अम्मा। इसलिए मैं इसे लिवा लाया।''

अमीना का क्रोध तुरंत स्नेह में बदल गया। यह मूक स्नेह था, मार्मिक प्रेम था जो रस और स्वाद से भरा। बच्चे में कितना त्याग, कितना सद्भाव और कितना विवेक है। दूसरों को खिलौने लेते और मिठाई खाते देखकर इसका मन कितना ललचाया होगा! वहाँ भी अपनी बुढ़िया दादी की याद बनी रही। अमीना का मन गदगद हो गया। आँचल फैलाकर हामिद को दुआएँ देती जातीं और आँसुओं की बड़ी-बड़ी बूँदें गिराती जाती थीं। हामिद इसका रहस्य क्या समझता!

- (प्रेमचंद की कहानी पर आधारित)

4. हामिद चिमटा क्यों खरीदना चाहता था?
5. हामिद के हृदयस्पर्शी विचारों के प्रति दादी अम्मा की भावनाएँ कैसी थीं?

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(अ) प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. 'ईदगाह' कहानी के कहानीकार कौन हैं? इनकी रचनाओं की विशेषता क्या है?
2. बालक प्रायः अलग-अलग स्वभाव के होते हैं। कहानी के आधार पर बताइए कि हामिद का स्वभाव कैसा है?

(आ) हाँ या नहीं में उत्तर दीजिए।

1. हामिद के पास पचास पैसे थे। (   )
2. अमीना हामिद की मौसी थी। (   )
3. मोहसिन भिश्ती खरीदता है। (   )
4. हामिद खिलौने खरीदता है। (   )

(इ) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1. अमीना का क्रोध तुरंत .... में बदल गया।
2. क़ीमत सुनकर हामिद का दिल.....................गया।
3. हामिद .... लाया।
4. महमूद के पास .... पैसे थे।

(ई) अनुच्छेद पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

बहुत समय पहले की बात है। श्रवण कुमार नामक एक बालक रहता था। उसके माता-पिता देख नहीं सकते थे। किंतु उन्हें इस बात का दुख नहीं था। उनका पुत्र सदैव उनकी सेवा में तत्पर रहता था। एक दिन माता-पिता ने अपने पुत्र से चारधाम यात्रा की इच्छा व्यक्त की । पुत्र काँवर में बिठाकर अपने माता-पिता को चारधाम की यात्रा पर ले गया। रास्ते में माता-पिता को प्यास लगी। उनके लिए पानी लाने के लिए श्रवण कुमार तालाब के पास पहुँचा। उसी समय राजा दशरथ तालाब के पास वाले जंगल में शिकार कर रहे थे। श्रवण द्वारा तालाब में लोटा डुबाने की ध्वनि

जो मनुष्य बुज़ुर्गों का ख्याल नहीं रखता, वह उजाले में भी अंधेरा ही पाता है। -विनोबा भावे

सुनकर वे हाथी समझ बैठे। शब्दभेदी बाण चला दिया। इस बाण से श्रवण परलोक सिधार गया। माता-पिता की सेवा में आजीवन आगे रहने वाला श्रवण, इतिहास में सदैव अमर रहेगा।

1. माता-पिता की सेवा में कौन तत्पर था?
2. श्रवण कुमार के बारे में आप क्या जानते हैं?
3. रेखांकित शब्द का संधि विच्छेद कीजिए।
4. अनुच्छेद के लिए उचित शीर्षक दीजिए।

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

(अ) इन प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए।

1. हामिद के स्थान पर आप होते तो क्या खरीदते और क्यों?
2. अपनी दादी के प्रति हामिद की भावनाएँ कैसी थीं? अपने शब्दों में लिखिए।

(आ) 'ईदगाह' कहानी का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

(इ) हामिद और उसके मित्रों के बीच हुई बातचीत की किसी एक घटना को संवाद के रूप में लिखिए।

(ई) बड़े-बुज़ुर्गों के प्रति आदर, श्रद्धा और स्नेह भावनाओं का महत्व अपने शब्दों में बताइए।

भाषा की बात

(अ) कोष्ठक में दी गयी सूचना पढ़िए और उसके अनुसार कीजिए।

1. ईद, प्रभात, वृक्ष (एक-एक शब्द का वाक्य प्रयोग कीजिए और उसके पर्याय शब्द लिखिए।)
2. अपराधी, प्रसन्न (एक-एक शब्द का विलोम शब्द लिखिए और उससे वाक्य प्रयोग कीजिए।)
3. मिठाई, चिमटा, सड़क (एक-एक शब्द का वचन बदलिए और वाक्य प्रयोग कीजिए।)

(आ) सूचना पढ़िए और उसके अनुसार कीजिए।

1. बेसमझ, सद्‌भाव, निडर (उपसर्ग पहचानिए।)
2. दुकानदार, भड़कीला, ग़रीबी (प्रत्यय पहचानिए।)
3. मीठा, प्रसन्न, बूढ़ा (भाववाचक संज्ञा में बदलिए।)

(इ) इन्हें समझिए और अभ्यास कीजिए।

1. हामिद के बाज़ार से आते ही अमीना ने उसे छाती से लगा लिया।
2. हामिद ने कहा कि घर की देखरेख दादी ने की।

(ई) 1. **नीचे दिया गया उदाहरण समझिए। उसके आधार पर दिये गये वाक्य बदलिए।**

रमज़ान के पूरे तीस रोज़ों के बाद ईद
- आयी।
- आयी है।
- आयी थी।
- आयी होगी।
- आ रही थी।

1. हामिद चिमटा लाया। 2. हामिद दादी से बोला। 3. हामिद ने चिमटा लिया।

2. पाठ में आये मुहावरे पहचानिए और अर्थ लिखकर वाक्य प्रयोग कीजिए।

परियोजना कार्य

वरिष्ठ नागरिकों (वयोवृद्धों) के प्रति आदर-सम्मान की भावना से जुड़ी कोई कहानी ढूँढ़कर लाइए। कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।

यह रास्ता कहाँ जाता है?

पहला दृश्य

(नाटकगृह का दृश्य। मंच पर नानी और नवासा-नवासी हैं। नानी आँगन में बैठी हुई है। आकाश में तारे चमक रहे हैं। मोना और गोलू कहानी सुनाने के लिए नानी से ज़िद कर रहे हैं।)

मोना : नानी, नानी। एक कहानी सुनाओ न!

गोलू : (नानी को मनाने के स्वर में) हाँ, नानी, कहो न!

नानी : तो तुम दोनों नहीं मानोगे। अच्छा सुनाती हूँ, सुनो। (एक क्षण ठहरकर नानी कहती है।) बहुत पुरानी बात है। उज्जैन नामक एक नगर था।

मोना : वह तो आज भी है।

नानी : कहाँ है, बतला तो?

मोना : मध्य प्रदेश में।

गोलू : हाँ, नानी, उज्जैन नाम का एक नगर था, फिर?

नानी : राजा भोज वहाँ का राजा था।

मोना : मेरी किताब में लिखा है, नानी, कि वह बहुत बड़ा विद्वान था। उसके दरबार में एक कवि रहता था, नाम था उसका माघ।

गोलू : नानी को कहने दो न! किताब की बात बाद में पढ़ लेना। नानी आगे।

नानी : राजा भोज प्रजा का सुख-दुःख जानने के लिए भेष बदलकर रात में घूमा करता था।

गोलू : भेष बदलकर काहे, नानी?

नानी : ताकि कोई पहचान न लें। उसके साथ कवि माघ भी रहता था। एक रात प्रजा का सुख-दुःख जानने के लिए दोनों महल से निकले।

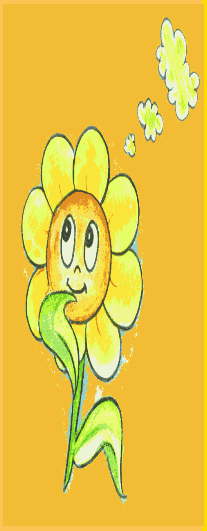

दूसरा दृश्य

(मंच पर अंधेरा होता है। दौड़ रहे घोड़ों की टापों की ध्वनि समीप से दूर जाती है।)

माघ : महाराज! लगता है हम रास्ता भूल गये हैं। इस जंगल में हम भटक गये हैं।

भोज : तुम ठीक कहते हो कवि! हम मुसीबत में फँस गये हैं।

माघ : इस प्रकार हम कब तक भटकते रहेंगे?

भोज : जब तक सवेरा नहीं हो जाता।

माघ : लेकिन यह रात तो ख़तम होने का नाम ही नहीं ले रही है।

भोज : संकट की घड़ी लंबी प्रतीत होती है। बता सकते हो, रात और कितनी बाक़ी है?

माघ : बस सबेरा होने ही वाला है, महाराज! वह देखिए, भृगुतारा बहुत ऊपर आ गया है। वन्य पशु-पक्षी भी जाग चुके हैं।

भोज : तो हम रात भर कवि?

माघ : अब चिंता छोड़ें, यहाँ देखिए, पूरब दिशा पसर रही है, सूर्योदय हो रहा है। प्रकाश फैल रहा है।

भोज : वह तो है, लेकिन यहाँ तो कोई दिखायी भी नहीं देता, जिससे उज्जैन जाने का मार्ग पूछा जाए।

माघ : भला इतने सबेरे इस जंगल में।

भोज : वहाँ देखो, कोई छाया।

माघ : हाँ, महाराज, कोई लकड़हारिन है। लकड़ी चुनने जंगल में आयी है।

भोज : हम उससे ही पूछें।

माघ : ठीक है, महाराज, हमें उसके पास चलना चाहिए।

(पगध्वनि दूर जाकर ठहरती है। मंच पर प्रकाश होता है। प्रकाश में लकड़हारिन के पास खड़े राजा भोज और कवि माघ दिखायी देते हैं। लकड़हारिन लकड़ी चुनना बंद करती है।)

माघ : यह रास्ता कहाँ जाता है, बतला सकती हो?

भोज : (लकड़हारिन को चुपचाप खड़ा देख कर) तुम्हीं से पूछ रहे हैं।

लकड़हारिन : वह तो मैं समझ रही हूँ।

माघ : फिर चुप क्यों हो? बोलती क्यों नहीं?

लकड़हारिन : क्या जवाब दूँ? यही सोच रही हूँ।

भोज : इसमें सोचने की कौन-सी बात है?

लकड़हारिन : है, तभी तो चुप हूँ।

माघ : फिर कहो, हम भी तो सुनें।

लकड़हारिन : यह रास्ता कहीं आता-जाता नहीं है। वह तो यहीं पड़ा रहता है। लोग इस पर आते-जाते रहते हैं। आप दोनों कौन हैं और कहाँ जाना चाहते हैं?

भोज : हम दोनों मुसाफ़िर हैं और उज्जैन जाना चाहते हैं।

लकड़हारिन : मुसाफ़िर तो इस दुनिया में दो ही हैं - एक सूर्य, जो उधर निकल रहा है और एक चाँद, जो उधर मिट रहा है। तुम दोनों न सूर्य हो और न चाँद, फिर मुसाफ़िर कैसे हो?

माघ : ठीक कहती हो। हम दोनों न सूरज हैं और न चाँद। मेहमान अवश्य हैं।

लकड़हारिन : आप लोग मेहमान भी नहीं हो सकते क्योंकि मेहमान भी दो ही होते हैं - एक धन और दूसरा यौवन। समझे।

भोज : मैं राजा हूँ।

लकड़हारिन : क्योंकि राजा भी दो ही हैं - एक इंद्र और दूसरा यमराज। कहो, तुम इन दो में से कौन हो?

माघ : (चिढ़कर) तुम हमें नहीं जानती हो? हम दो ऐसे पुरुष हैं, जो किसी को भी कोई कसूर

करने पर माफ़ कर सकते हैं।

लकड़हारिन : इतना गुमान नहीं करो तो बेहतर। माफ़ भी दो ही कर सकती हैं – एक धरती और दूसरी नारी। तुम दोनों न धरती हो और न नारी, फिर माफ़ करने की बात क्यों करते हो?

भोज : सुन रहे हो कवि? यह तो हमारी एक भी नहीं चलने दे रही है। अब क्या करें?

(राजा भोज तथा कवि माघ हारे हुए पुरुषों की तरह चुपचाप खड़े रहते हैं। सोचते हैं।)

भोज : समझो, हम दो हारे हुए व्यक्ति हैं। अब तो रास्ता बतला दो।

लकड़हारिन : रास्ता तो मैंने कभी का बतला दिया होता, किंतु तुम दोनों सच बोलो तब न! तुम दोनों हारे हुए भी नहीं हो सकते, क्योंकि इस संसार में हारा हुआ एक लोभी और दूसरा स्वार्थी, समझे!

भोज : अब क्या कहते हो, कवि?

माघ : समझ में नहीं आ रहा है, महाराज, क्या कहें, क्या न कहें। हम सब तरह से हार चुके हैं।

भोज : हम सब तरह से हार चुके हैं। हमें नहीं मालूम, हम कौन हैं। तुम्हीं कहो, हम कौन हैं?

(दोनों लकड़हारिन के सामने झुकते हैं।)

लकड़हारिन : ऐसा कर मुझे लज्जित न करें महाराज! मैं आपकी प्रजा हूँ।

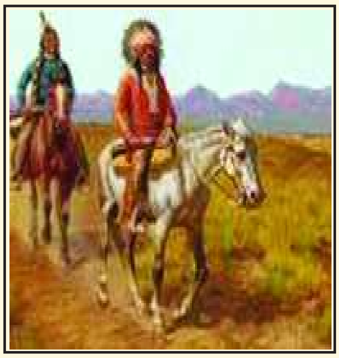

माघ व भोज : (आश्चर्य से) तो, तुम हमें जानती हो?

लकड़हारिन : अवश्य जानती हूँ। तुम राजा भोज हो और यह तुम्हारा कवि माघ है। है न?

भोज : सच है, लेकिन किसी से कहना मत। तुम जैसी बुद्धिमान प्रजा मेरे राज्य में बसती है, यह जानकर मैं अति प्रसन्न हूँ। हमें उज्जैन का रास्ता बतला दो और क्षमा कर दो।

लकड़हारिन : प्रजा के सुख-दुःख की तुम्हारी यह चिंता तुम्हारे यश का कारण बनें। जाओ, महाराज, वह है तुम्हारा रास्ता। *(राजा भोज तथा कवि माघ उस ओर जाते हैं।)*

(मंच की रोशनी गुल होती है। आँगन में पहले की तरह नानी, नाती, नतिनी दिखाई देते हैं।)

गोलू : नानी, वह लकड़हारिन ज़रूर तुम्हारी आयु की रही होगी। क्यों, नानी?

मोना : तभी तो वह उतनी होशियार निकली जितनी हमारी नानी हैं। है न, नानी?

नानी : यह सब जाने दो। यह बताओ कि मेरी इस कहानी से तुम दोनों ने क्या सीखा? कुछ सीखा कि नहीं?

गोलू : दीदी, हमने क्या सीखा है, बतलाओ नानी को।

मोना : हमने सीखा है, हमें अहंकार नहीं करना चाहिए। क्यों नानी?

नानी : बिलकुल ठीक समझा है। अहंकार बुरी बात है। हमें उससे बचना चाहिए।

(परदा गिरता है।)

– बाबू रामसिंह की कहानी पर आधारित

3 हम भारतवासी

– आर. पी. 'निशंक'

उन्मुखीकरण

अनेक स्थानों से बहने वाली सभी नदियाँ अंत में समुद्र में ही मिलती हैं। उसी प्रकार अलग-अलग धर्म में जन्म लिये मनुष्य भी परमात्मा के पास पहुँचते हैं। कोई भी धर्म छोटा या बड़ा नहीं होता। मानव जाति एक है, मानव धर्म एक है। – *स्वामी विवेकानंद*

प्रश्न

1. नदियाँ किसमें विलीन होती हैं?
2. इसमें किस-किस को एक बताया गया है?
3. 'मानव जाति एक है।' इस पर अपने विचार बताइए।

उद्देश्य

छात्रों में कविता, गीत आदि की रचना शैली का विकास करना और उनमें देशभक्ति के साथ-साथ विश्वबंधुत्व, विश्वशांति, अहिंसा, त्याग, समर्पण आदि सद्गुणों का विकास करना तथा भारत को और भी सशक्त कर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अग्रसर करने की प्रेरणा देना इस पाठ का मुख्य उद्देश्य है।

विधा विशेष

प्रस्तुत कविता देशभक्ति की भावना पर आधारित है। यह गेय कविता है। इसमें तुकांत शब्द प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया व सामान्य भविष्य में हैं। यह कविता बच्चों में सत्य, अहिंसा, त्याग और समर्पण की भावना जागृत कर, उन्हें विश्वबंधुत्व की ओर क़दम बढ़ाने की प्रेरणा देती है।

कवि परिचय

प्रस्तुत कविता के कवि आर.पी. 'निशंक' हैं। वे आधुनिक हिंदी साहित्यकारों में विशिष्ट स्थान रखते हैं। इनकी रचनाओं का मुख्य प्रतिपाद्य 'देशभक्ति' है। इन्होंने *समर्पण, नवंकुर, मुझे विधाता बनना है, तुम भी मेरे साथ चलो, जीवन पथ में, मातृभूमि के लिए, कोई मुश्किल नहीं* आदि चर्चित काव्य रचनाएँ लिखी हैं।

छात्रों के लिए सूचनाएँ

1. विषय प्रवेश ध्यान से पढ़िए, पाठ्य विषय समझिए।
2. पाठ ध्यान से पढ़िए, जिस शब्द का अर्थ समझ में नहीं आता उसके नीचे रेखा खींचिए।
3. रेखांकित शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।
4. समझ में न आने वाले अंश हो तो छात्र समूहों में या अध्यापक से चर्चा कीजिए।

विषय प्रवेश : भारत प्राचीन देश है। यहाँ की संस्कृति और सभ्यता सारे विश्व को लुभाती है। सत्यवानों, अहिंसावादियों, संतों-सूफ़ियों, कर्त्तव्यनिष्ठों, धर्मनिष्ठों और देशभक्तों की पावन भूमि भारत देश है। आज यहाँ का बच्चा-बच्चा भी इनके मार्ग पर चलकर विश्वशांति व विश्वबंधुत्व की पवित्र भावनाओं से दुनिया को पावन धाम बनाना चाहता है।

हम भारतवासी दुनिया को पावन धाम बनायेंगे।
मन में श्रद्‌धा और प्रेम का अद्‌भुत दृश्य दिखायेंगे।।

ऊँच-नीच का भेद मिटाकर, दिल में प्यार बसायेंगे।
नफ़रत का हम तोड़ कुहासा, अमृत रस सरसायेंगे।।
हम निराशा दूर भगाकर, फिर विश्वास जगायेंगे।
हम भारतवासी दुनिया को पावन धाम बनायेंगे।।

उलझन में उलझे लोगों को, तथ्य दीप समझायेंगे।
भटक रहे जो जीवन पथ से, उनको राह दिखायेंगे।।
हम खुशियों के दीप जला, जीवनज्योत जलायेंगे।
हम भारतवासी दुनिया को पावन धाम बनायेंगे।।

मन में श्रद्‌धा और प्रेम का अद्‌भुत दृश्य दिखायेंगे।
सत्य, अहिंसा, त्याग, समर्पण की बगिया महकायेंगे।।
जग के सारे क्लेश मिटाकर, धरती को स्वर्ग बनायेंगे।
विश्वबंधुत्व का मूल मंत्र हम, दुनिया में सरसायेंगे।।

हम भारतवासी दुनिया को पावन धाम बनायेंगे।
मन में श्रद्‌धा और प्रेम का अद्‌भुत दृश्य दिखायेंगे।।

प्रश्न

1. ऊँच-नीच का भेद मिटाने के लिए हम क्या-क्या कर सकते हैं?
2. हमें अपने जीवन में कैसा पथ अपनाना चाहिए?
3. हम भटकने वालों को राह कैसे दिखा सकते हैं?
4. सत्य, अहिंसा, त्याग और समर्पण की बगिया महकाने के लिए हम क्या-क्या कर सकते हैं?

सत्य से बढ़कर धर्म नहीं है। सत्य स्वयं परब्रह्म परमात्मा है। - ऋग्वेद

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(अ) प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. यह गीत आपको कैसा लगा? अपनी पसंद और नापसंद का कारण बताइए।
2. दुनिया को 'पावन धाम' बनाने के लिए हम क्या-क्या कर सकते हैं?

(आ) दिया गया पद्यांश पढ़िए और इसके मुख्य शब्द पहचान कर लिखिए।

मन में श्रद्धा और प्रेम का अद्भुत दृश्य दिखायेंगे।
सत्य, अहिंसा, त्याग, समर्पण की बगिया महकायेंगे।।
जग के सारे क्लेश मिटाकर, धरती को स्वर्ग बनायेंगे।
विश्वबंधुत्व का मूल मंत्र हम, दुनिया में सरसायेंगे।।

जैसे : श्रद्धा, ...,
.....................................,
.....................................,
....

(इ) निम्नलिखित भाव से संबंधित कविता की पंक्तियाँ पहचान कर लिखिए।

1. संसार में व्याप्त सारे विवादों को मिटाकर, हम धरती को स्वर्ग बनायेंगे।
2. जीवन पथ से भटके लोगों को रास्ता दिखाएँगे।
3. हम भेदभाव दूर करेंगे। हम सब मिलजुलकर रहेंगे।

(ई) नीचे दिया गया पद्यांश पढ़कर सही उत्तर पहचानिए।

आज़ादी अधिकार सभी का जहाँ बोलते सेनानी,
विश्व शांति के गीत सुनाती जहाँ चुनरिया ये धानी,
मेघ साँवले बरसाते हैं, जहाँ अहिंसा का पानी,
अपनी माँगें पोंछ डालती, हँसते-हँसते कल्याणी,
ऐसी भारत माँ के बेटे मान गँवाना क्या जानें,
मेरे देश के लाल हठीले शीश झुकाना क्या जानें।

1. धानी रंग की चुनरी कौन-सा गीत सुना रही है?
   (अ) अधिकार का (आ) आज़ादी का (इ) विश्वशांति का (ई) अहिंसा का
2. भारत के लाल कैसे हैं?
   (अ) सजीले (आ) साँवले (इ) हठीले (ई) निराले
3. सैनिक किसे सभी का अधिकार मानते हैं?
   (अ) आज़ादी को (आ) शांति को (इ) अहिंसा को (ई) मान को
4. 'मान' शब्द का विलोमार्थक है-
   (अ) निरमान (आ) दुरमान (इ) अपमान (ई) स्वमान
5. इस पद्यांश का उचित शीर्षक यह हो सकता है-
   (अ) मेरा देश (आ) देश के लाल (इ) आज़ादी (ई) अहिंसा

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

(अ) इन प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए।

1. उलझनों से बचे रहने के लिए हमें कैसी सावधानियाँ लेनी चाहिए?
2. निराशावादी और आशावादी के स्वभाव में क्या अंतर होता है?

(आ) गीत में 'धरती को स्वर्ग' बनाने की बात कही गयी है। हम इसमें क्या सहयोग दे सकते हैं?

(इ) विश्वशांति की राह में समर्पित किस महान व्यक्ति का साक्षात्कार आप लेना चाहेंगे ? साक्षात्कार में उनसे पूछे जाने वाले प्रश्नों की एक सूची तैयार कीजिए।

(ई) सत्य, अहिंसा, त्याग आदि भावनाओं का हमारे जीवन में क्या महत्व है?

भाषा की बात

(अ) कोष्ठक में दी गयी सूचना पढ़िए और उसके अनुसार कीजिए।

1. दुनिया, अमृत, पावन (वाक्य प्रयोग कीजिए। पर्याय शब्द लिखिए।)
   (जैसे - यह दुनिया बड़ी निराली है। विश्व, जग, संसार)
2. निराशा, त्याग, प्यार (विलोम शब्द लिखिए। उससे वाक्य प्रयोग कीजिए।)
   (जैसे - निराशा x आशा, हमें जीवन में आशा बढ़ानी चाहिए।)
3. खुशी, बगीचा, भावना (वचन बदलिए। वाक्य प्रयोग कीजिए।)
   (जैसे - खुशी - खुशियाँ, बच्चों को खेलों से बहुत सारी खुशियाँ मिलती हैं।)

(आ) सूचना पढ़िए और उसके अनुसार कीजिए।

1. पवन, पावन, निराशा (संधि विच्छेद कीजिए।)
2. भारतवासी, जीवनज्योत (समास पहचानिए।)

(इ) इन्हें समझिए और वाक्य प्रयोग कीजिए।

1. खुशी 2. खुशियाँ 3. खुशियों में

(ई) 1.नीचे दिया गया उदाहरण समझिए। उसके अनुसार दिये गये वाक्य बदलिए।

भटक रहे जो जीवन पथ से उनको राह
- दिखाएंगे।
- दिखाते रहेंगे।
- दिखा चुकेंगे।
- दिखाएँ।

1. उलझन में उलझे लोगों को, तथ्य दीप समझायेंगे।

2. **कविता में आये मुहावरे पहचानिए और अर्थ लिख कर वाक्य प्रयोग कीजिए।**

परियोजना कार्य

शांति के पथ पर समर्पित किसी महान व्यक्ति के बारे में जानकारी इकट्ठा कर कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।

उपवाचक

शांति की राह में...

यदि हमारे पास दुनिया का सारा वैभव और सुख साधन उपलब्ध है परंतु शांति नहीं है तो वैसे सुख साधन व्यर्थ हैं। संसार में मानव द्वारा जितने भी कार्य किये जा रहे हैं सबका एक ही उद्देश्य है- 'शांति'।

सबसे पहले तो हमें यह जान लेना चाहिए कि शांति क्या है? शांति का केवल यह अर्थ नहीं कि मुख से चुप रहें। अपितु मन को नियंत्रित कर उसे बुराई के रास्ते पर चलने से रोकना ही वास्तविक 'शांति' है। इसीलिए जहाँ शांति है, वहाँ सुख है, जहाँ सुख है वही स्वर्ग है, जहाँ स्वर्ग है वही दुनिया का श्रेष्ठ स्थान है। युद्ध, दुख, लालच और सभी पीड़ाओं को मिटाने का एक मात्र साधन है- 'शांति'। धन-दौलत से भौतिक संपदा खरीद सकते हैं, किंतु शांति नहीं। यही कारण है दुनिया भर के कई धनी देश 'शांति' को बनाये रखने के लिए युद्ध के लिए तत्पर हो रहे हैं। युद्ध से कभी शांति स्थापित नहीं हो सकती, बल्कि सभी देशों के बीच चर्चा एवं सहयोग के द्वारा शांति की स्थापना की जा सकती है। इसी उद्देश्य से 24 अक्तूबर, 1945 में संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना हुई। इसका मूल उद्देश्य है-'विश्व के सभी देशों के बीच शांति की स्थापना करना।' इतना ही नहीं शांति के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए हर वर्ष नोबेल पुरस्कार भी दिया जाता है।

शांति की स्थापना में अपना जीवन समर्पित करने वाले कई महान हस्तियाँ हैं। यहाँ उन्हीं में से दो महान लोगों के महान कार्यों के बारे में दिया जा रहा है जिन्होंने अपना सारा जीवन अहिंसा, शांति, सेवा और भाईचारे की स्थापना में लगा दिया है।

नेल्सन मंडेला

मंडेला के नाम से विश्वभर में प्रख्यात शांतिदूत का पूरा नाम नेल्सन रोलिह्लह्ला मंडेला था। उनका जन्म 18 जुलाई, 1898 को दक्षिण अफ्रीका में हुआ। वे दक्षिण अफ्रिका के प्रथम अश्वेत राष्ट्रपति थे। राष्ट्रपति बनने से पूर्व वे दक्षिण अफ्रीका में सदियों से चल रहे रंगभेद का विरोध करने वाले अफ्रीकी नेशनल कांग्रेस और इसके सशस्त्र गुट ''उमखोतों वे सिजवे'' के अध्यक्ष रहे। रंगभेद विरोधी संघर्ष के कारण उन्होंने 27 वर्ष रॉबेन द्वीप के कारागार में बिताया। उन्हें कोयला खनिक का काम करना पड़ा था। सन् 1990 में श्वेत सरकार से हुए एक समझौते के बाद उन्होंने नये दक्षिण अफ्रीका का निर्माण किया। वे दक्षिण अफ्रीका एवं समूचे विश्व में रंगभेद का विरोध करने के प्रतीक बन गये। संयुक्त राष्ट्र संघ ने उनके जन्मदिन को ''नेल्सन मंडेला अंतर्राष्ट्रीय दिवस'' के रूप में मनाने का निर्णय लिया। दक्षिण अफ्रीका के लोग मंडेला को व्यापक रूप से ''राष्ट्रपिता'' मानते हैं। उन्हें लोकतंत्र के प्रथम संस्थापक

शांति के समान कोई तप नहीं, संतोष से बढ़कर कोई सुख नहीं है। - चाणक्य

और उद्धारकर्ता के रूप में देखा जाता था। दक्षिण अफ्रीका में प्रायः उन्हें "मदीबा" कह कर बुलाया जाता है। यह शब्द बुज़ुर्गों के लिए सम्मान सूचक है। उन्हें अब तक 250 से भी अधिक राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। सन् 1993 में नोबेल शांति पुरस्कार, भारत रत्न पुरस्कार और सन् 2008 में गाँधी शांति पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। उनका स्वर्गवास 23 नवंबर, 2013 को हुआ। ऐसे महान शांतिदूत के निधन पर सारे विश्व ने अपूर्व श्रद्धांजलि समर्पित की। इनका संघर्षमय जीवन हमें शांति की राह में चलने के लिए पथ प्रदर्शित करता है।

मदर तेरेसा

मदर तेरेसा एक ऐसा नाम है, जो शांति, करुणा, प्रेम व वात्सल्य का पर्याय कहलाता है। ऐसी महान माता का पूरा नाम आग्नेस गोंकशे बोजशियु तेरेसा था। उनका जन्म 26 अगस्त, 1910 और स्वर्गवास 5 सितंबर, 1997 में हुआ था। वैसे तो वे युगोस्लाविया मूल की थीं, आगे चलकर सेवा की भावना में रत होकर भारत की नागरिकता स्वीकार ली। प्रारंभ में उन्होंने अध्यापिका के रूप में काम किया। किंतु उनका सपना कुछ और ही था। वे अनाथों, ग़रीबों और रोगियों की सेवा करना चाहती थीं। इसीलिए उन्होंने सन् 1950 में कोलकाता में "मिशनरीज़ ऑफ चारिटी" की स्थापना की। उनके द्वारा स्थापित संस्था को ही 'निर्मल हृदय' कहते हैं। उन्होंने अपना सारा जीवन ग़रीब, अनाथ और बीमार लोगों की सेवा में लगा दिया। सन् 1970 तक वे ग़रीबों और असहायों के लिए अपने मानवीय कार्यों के लिए प्रसिद्ध हो गयीं। सन् 1979 में उन्हें नोबेल पुरस्कार, सन् 1980 में भारत रत्न पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्होंने कथनी से कहीं करनी को अधिक महत्व दिया। इसीलिए वे हमेशा कहा करती थी– "प्रार्थना करनेवाले होंठों से सहायता करने वाले हाथ कहीं अच्छे हैं।" मातृमूर्ति, करुणामयी मदर तेरेसा ने अपने जीवन में यह साबित कर दिखाया है कि 'मानव सेवा ही माधव सेवा है।' परोपकार के पथ पर चलने वालों को ही वास्तविक जीवन मिलता है। आज वे हमारे बीच नहीं रहीं, किंतु उनके महान विचार, उत्कृष्ट कार्य और श्रेष्ठ परोपकारी गुण आज भी एक दिव्यज्योति के रूप में हमें वास्तविक जीवन बिताने की राह दिखाते हैं।

प्रश्न :

1. शांति की परिभाषा क्या हो सकती है? अपने शब्दों में बताइए।
2. नेल्सन मंडेला के जीवन से हमें क्या संदेश मिलता है?
3. मदर तेरेसा ने अपने जीवन में क्या सिद्ध कर दिखाया है?
4. "प्रार्थना करने वाले होठों से कहीं अच्छे सहायता करने वाले हाथ हैं।"– पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

इकाई - II 4. कण-कण का अधिकारी

- डॉ. रामधारी सिंह 'दिनकर'

उन्मुखीकरण

सूत कातते थे गाँधीजी, कपड़ा बुनते थे।
चुनते थे अनाज के कंकर, चक्की पीसते थे।
ऐसा था उनका आश्रम,
गाँधीजी के लिए पूजा के समान था श्रम।

प्रश्न

1. गाँधीजी क्या-क्या करते थे?
2. गाँधीजी के अनुसार पूजनीय क्या है?
3. हमारे जीवन में श्रम का क्या महत्व है?

उद्देश्य

सामाजिक काव्य सृजन की प्रेरणा के साथ-साथ छात्रों में समाज कल्याण व उदारता की भावना का विकास करना और उन्हें श्रम का महत्व बताकर उसके पथ पर आगे बढ़ने की प्रेरणा देना इस पाठ का उद्देश्य है।

विधा विशेष

हर कविता की अपनी-अपनी विशेषता होती है। इसकी विशेषता ओजपूर्ण व प्रेरणाप्रद भाषा है। इसके कवि डॉ. रामधारी सिंह 'दिनकर' हैं। इनकी प्रसिद्ध रचना 'कुरुक्षेत्र' से यह कविता ली गयी है।

कवि परिचय

डॉ. रामधारी सिंह 'दिनकर' हिंदी के प्रसिद्ध कवियों में से एक हैं। उनका जन्म सन् 1908 में बिहार के मुंगेर में हुआ तथा निधन सन् 1974 में हुआ। इन्हें हिंदी का राष्ट्रकवि भी कहा जाता है। 'उर्वशी' कृति के लिए इन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया। *रेणुका, कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी, परशुराम की प्रतीक्षा, रसवंती* आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

छात्रों के लिए सूचनाएँ

1. विषय प्रवेश ध्यान से पढ़िए, पाठ्य विषय समझिए।
2. पाठ ध्यान से पढ़िए, जिस शब्द का अर्थ समझ में नहीं आता उसके नीचे रेखा खींचिए।
3. रेखांकित शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।
4. समझ में न आने वाले अंश हो तो छात्र समूहों में या अध्यापक से चर्चा कीजिए।

विषय प्रवेश : मेहनत ही सफलता की कुँजी है। मेहनत करने वाला व्यक्ति कभी नहीं हारता। वह हमेशा सफल होता है क्योंकि काल्पनिक जगत को साकार रूप देने वाला वही है। इसके कण-कण के पीछे उसी का श्रम है। इसलिए वही कण-कण का अधिकारी है।

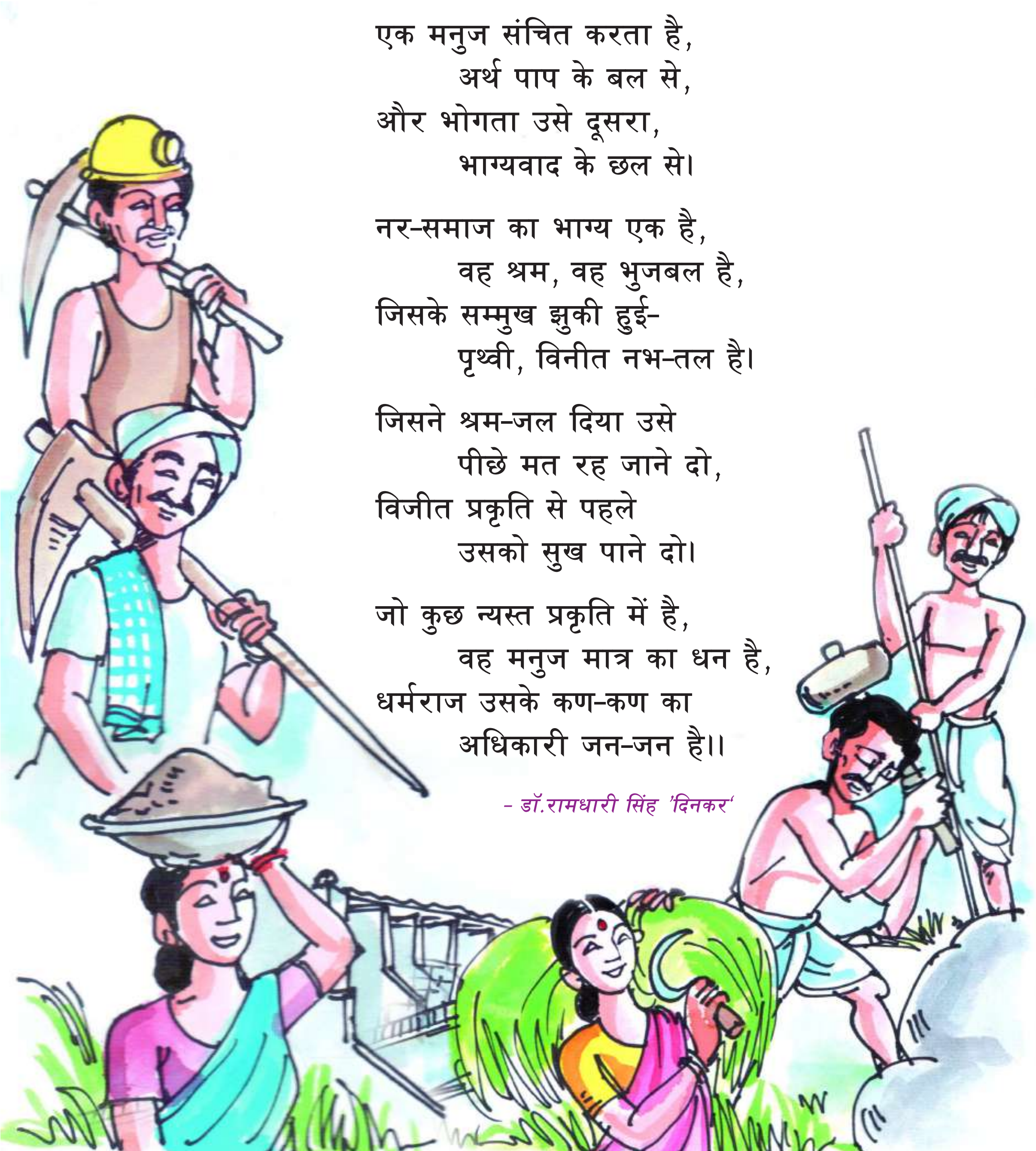

एक मनुज संचित करता है,
अर्थ पाप के बल से,
और भोगता उसे दूसरा,
भाग्यवाद के छल से।

नर-समाज का भाग्य एक है,
वह श्रम, वह भुजबल है,
जिसके सम्मुख झुकी हुई-
पृथ्वी, विनीत नभ-तल है।

जिसने श्रम-जल दिया उसे
पीछे मत रह जाने दो,
विजीत प्रकृति से पहले
उसको सुख पाने दो।

जो कुछ न्यस्त प्रकृति में है,
वह मनुज मात्र का धन है,
धर्मराज उसके कण-कण का
अधिकारी जन-जन है।।

- डॉ.रामधारी सिंह 'दिनकर'

प्रश्न

1. भाग्यवाद का छल क्या है?
2. नर समाज का भाग्य क्या है?
3. श्रमिक के सम्मुख क्या-क्या झुके हैं?
4. श्रम जल किसने दिया?
5. मनुष्य का धन क्या है?
6. कण-कण का अधिकारी कौन है?

परश्रम का उपभोग करे नर, इससे सुखकर स्वयं करे श्रम। - सुमित्रानंदन पंत

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(अ) प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. भाग्य और कर्म में आप किसे श्रेष्ठ मानते हैं? क्यों?
2. श्रम के बल पर हम क्या-क्या हासिल कर सकते हैं?

(आ) पाठ पढ़कर नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

1. इस कविता के कवि कौन हैं?
2. कविता का यह अंश किस काव्य से लिया गया है?
3. सबसे पहले सुख पाने का अधिकार किसे है?
4. कण-कण का अधिकारी किन्हें कहा गया है और क्यों?

(इ) निम्नलिखित भाव से संबंधित कविता की पंक्तियाँ चुनकर लिखिए।

1. धरती और आकाश इसके सामने नतमस्तक होते हैं।
2. प्रकृति से पहले परिश्रम करने वाले को सुख मिलना चाहिए।

(ई) नीचे दिया गया पद्यांश पढ़िए। प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

क़दम-क़दम बढ़ाए जा, सफलता तू पाये जा,
ये भाग्य है तुम्हारा, तू कर्म से बनाये जा,
निगाहें रखो लक्ष्य पर, कठिन नहीं ये सफ़र,
ये जन्म है तुम्हारा, तू सार्थक बनाये जा।

1. कवि के अनुसार सफलता किस प्रकार प्राप्त हो सकती है?
2. हमारा सफ़र कब सरल बन सकता है?
3. इस कविता के लिए उचित शीर्षक दीजिए।

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

(अ) इन प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए।

1. कवि मेहनत करने वालों को सदा आगे रखने की बात क्यों कर रहे हैं?
2. अनुचित तरीके से धन अर्जित करने वाला व्यक्ति सही है या श्रम करने वाला? अपने विचार बताइए।

(आ) कवि ने मज़दूरों के अधिकारों का वर्णन कैसे किया है? अपने शब्दों में लिखिए।

(इ) नीचे दिये गये प्रश्नों के आधार पर सृजनात्मक कार्य कीजिए।

1. कविता में समान अधिकारों की बात की गयी है। 'समानता' से संबंधित कोई घटना या कहानी अपने शब्दों में लिखिए।
2. अपने शब्दों में लिखी गयी घटना या कहानी से कुछ मुख्यांशों का चयनकर लिखिए।
3. चयनित मुख्यांशों में से मूल शब्द पहचानकर लिखिए।
4. लिखे गये मूल शब्दों में से कुछ शब्दों का चयनकर उस पर छोटी सी कविता लिखिए।
5. लिखी गयी कविता का संदेश या सार एक वाक्य में लिखिए और उससे संबंधित कुछ नारे बानिए।

(ई) 'नर समाज का भाग्य एक है, वह श्रम, वह भुजबल है।' जीवन की सफलता का मार्ग श्रम है। अपने विचार व्यक्त कीजिए।

भाषा की बात

(अ) कोष्ठक में दी गयी सूचना पढ़िए और उसके अनुसार कीजिए।

1. जन, पृथ्वी, धन (एक-एक शब्द का वाक्य प्रयोग कीजिए और उसके पर्याय शब्द लिखिए।)
2. पाप, सुख, भाग्य (एक-एक शब्द का विलोम शब्द लिखिए और उससे वाक्य प्रयोग कीजिए।)
3. जन-जन, कण-कण (पुनरुक्ति शब्दों से वाक्य प्रयोग कीजिए।)
4. मज़दूर मेहनत करता है। (एक-एक शब्द का वचन बदलिए और वाक्य प्रयोग कीजिए।)
5. मनुष्य, मज़दूर (भाववाचक संज्ञा में बदलकर लिखिए।)

(आ) सूचना पढ़िए। उसके अनुसार कीजिए।

1. अधिकार-अधिकारी, भाग्य-भाग्यवान (अंतर बताइए।)
2. यद्‌यपि, पर्यावरण (संधि विच्छेद कीजिए।)
3. श्रम-जल, नभ-तल, भुजबल (समास पहचानिए।)
4. एक मनुज संचित करता है, अर्थ पाप के बल से,
और भोगता उसे दूसरा, भाग्यवाद के छल से। (पद परिचय दीजिए।)
5. जिसने श्रम-जल दिया उसे पीछे मत रह जाने दो। (कारक पहचानिए।)

(इ) इन्हें समझिए। सूचना के अनुसार कीजिए।

1. जाने दो, पाने दो, बढ़ने दो (संयुक्त क्रियाओं का प्रयोग समझिए।)
2. एक-पहला, प्रथम, दो-दूसरा, द्‌वितीय (अंतर समझिए।)
3. अभाग्य, दुर्भाग्य, सुभाग्य (उपसर्ग पहचानिए।)
4. प्राकृतिक, अधिकारी, भाग्यवान (प्रत्यय पहचानिए।)
5. पुरुष श्रमिक के रूप में मेहनत करते हैं। (लिंग बदलकर वाक्य लिखिए।)

(ई) नीचे दिया गया उदाहरण समझिए। उसके अनुसार दिये गये वाक्य बदलिए।

जैसे - जिसने श्रम-जल दिया उसे पीछे मत रह जाने दो।

श्रम जल देने वाले को पीछे मत रह जाने दो।

1. जो कुछ न्यस्त प्रकृति में है, वह मनुज मात्र का धन है।
2. जो मेहनत करता है वही कण-कण का अधिकारी है।
3. जो परोपकार करता है वही परोपकारी कहलाता है।

परियोजना कार्य

विश्व श्रम दिवस (मई दिवस) के बारे में जानकारी इकट्‌ठा कीजिए। कक्षा में उसका प्रदर्शन कीजिए।

5 लोकगीत

– *भगवतशरण उपाध्याय*

उन्मुखीकरण

मेहंदी है रचने वाली,
हाथों में गहरी लाली।
कहें सखियाँ, अब कलियाँ
हाथों में खिलने वाली हैं।
तेरे मन को, जीवन को,
नयी खुशियाँ मिलने वाली हैं।।

प्रश्न

1. हाथों में क्या रचनेवाली है?
2. इस तरह के गीतों को क्या कहा जाता है?
3. किन-किन संदर्भों में लोकगीत गाये जाते हैं?

उद्देश्य

छात्रों को निबंध लिखने की प्रेरणा देते हुए निबंध शैली से अवगत कराना, भाषा के मनोरंजक रूप से छात्रों की अभिरुचियों, दक्षताओं के साथ-साथ उनका सर्वांगीण विकास करना और लोकगीतों के सृजन के लिए प्रेरित करना इस पाठ का उद्देश्य है।

विधा विशेष

'लोकगीत' निबंध पाठ है। 'निबंध' का अर्थ है- "बाँधना"। सुंदर और उचित शब्दों के द्वारा भावों की प्रस्तुति ही निबंध है। रामचंद्र शुक्ल के अनुसार निबंध "गद्य की कसौटी" है।

लेखक परिचय

भगवतशरण उपाध्याय हिंदी साहित्य के सुपरिचित रचनाकार हैं। इनका जन्म सन् 1910 में हुआ। इन्होंने कहानी, कविता, रिपोर्ताज, निबंध, बाल-साहित्य में अपनी विशेष छाप छोड़ी है। *विश्व साहित्य की रूपरेखा, कालिदास का भारत, ठूँठा आम, गंगा गोदावरी* आदि इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।

छात्रों के लिए सूचनाएँ

1. विषय प्रवेश ध्यान से पढ़िए, पाठ्य विषय समझिए।
2. पाठ ध्यान से पढ़िए, जिस शब्द का अर्थ समझ में नहीं आता उसके नीचे रेखा खींचिए।
3. रेखांकित शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।
4. समझ में न आने वाले अंश हो तो छात्र समूहों में या अध्यापक से चर्चा कीजिए।

विषय प्रवेश : *हमारी संस्कृति में लोकगीत और संगीत का अटूट संबंध है। मनोरंजन की दुनिया में आज भी लोकगीतों का महत्वपूर्ण स्थान है। गीत-संगीत के बिना हमारा मन रसा से नीरस हो जाता है, प्रस्तुत निबंध में भारतीय लोकगीत का वर्णन बड़े ही सुंदर ढंग से किया गया है।*

लोकगीत अपनी लोच, ताज़गी और लोकप्रियता में शास्त्रीय संगीत से भिन्न हैं। लोकगीत सीधे जनता के संगीत हैं। घर, गाँव और नगर की जनता के गीत हैं ये। इनके लिए साधना की ज़रूरत नहीं होती। त्यौहारों और विशेष अवसरों पर ये गाये जाते हैं। सदा से ये गाये जाते रहे हैं और इनके रचनेवाले भी अधिकतर गाँव के लोग ही हैं। स्त्रियों ने भी इनकी रचना में विशेष भाग लिया है। ये गीत बाजों की मदद के बिना ही या साधारण ढोलक, झाँझ, करताल, बाँसुरी आदि की मदद से गाये जाते हैं।

एक समय था जब शास्त्रीय संगीत के सामने इनको हेय समझा जाता था। अभी हाल तक इनकी बड़ी उपेक्षा की जाती थी। पर इधर साधारण जनता की ओर जो लोगों की नज़र फिरी है तो साहित्य और कला के क्षेत्र में भी परिवर्तन हुआ है। अनेक लोगों ने विविध बोलियों के लोक-साहित्य और लोकगीतों के संग्रह पर कमर बाँधी है और इस प्रकार के अनेक संग्रह अब तक प्रकाशित हो गये हैं।

लोकगीतों के कई प्रकार हैं। इनका एक प्रकार तो बड़ा ही ओजस्वी और सजीव है। यह इस देश के आदिवासियों का संगीत है। मध्य प्रदेश, दक्कन, छोटा नागपुर में गोंड-खांड, भील-संथाल आदि फैले हुए हैं। इनके गीत और नाच अधिकतर साथ-साथ और बड़े-बड़े दलों में गाये और नाचे जाते हैं। बीस-बीस, तीस-तीस आदमियों और औरतों के दल एक साथ या एक-दूसरे के जवाब में गाते हैं, दिशाएँ गूँज उठती हैं।

प्रश्न

1. लोकगीत के बारे में आप क्या जानते हैं?
2. लोकगीत और संगीत का क्या संबंध है?
3. 'पहाड़ी' किसे कहा जाता है?

पहाड़ियों के अपने-अपने गीत हैं। उनके अपने-अपने भिन्न रूप होते हुए भी अशास्त्रीय होने के कारण उनमें अपनी एक समान भूमि है। गढ़वाल, किन्नौर, काँगड़ा आदि के अपने-अपने गीत और उन्हें गाने की अपनी-अपनी विधियाँ हैं। उनका अलग नाम ही 'पहाड़ी' पड़ गया है।

वास्तविक लोकगीत देश के गाँवों और देहातों में हैं। इनका संबंध देहात की जनता से है। बड़ी जान होती है इनमें। चैता, कजरी, बारहमासा, सावन आदि मिर्ज़ापुर, बनारस और उत्तर प्रदेश के पूरबी और बिहार के पश्चिमी जिलों में गाये जाते हैं। बाउल और भतियाली बंगाल के लोकगीत हैं। पंजाब में माहिया आदि इसी प्रकार के हैं। हीर-राँझा, सोहनी-महीवाल संबंधी गीत पंजाबी में और ढोला-मारू आदि के गीत राजस्थानी में बड़े चाव से गाये जाते हैं।

इन देहाती गीतों के रचयिता कोरी कल्पना को इतना मान न देकर अपने गीतों के विषय रोज़मर्रा के बहते जीवन से लेते हैं, जिससे वे सीधे मर्म को छू लेते हैं। उनके राग भी साधारणतः

पीलू, सारंग, दुर्गा, सावन, सोरठ आदि हैं। कहरवा, बिरहा, धोबिया आदि देहात में बहुत गाये जाते हैं और बड़ी भीड़ आकर्षित करते हैं।

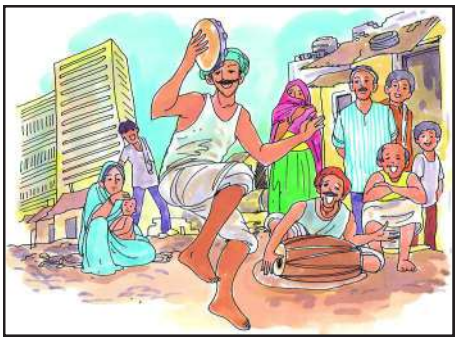

इनकी भाषा के संबंध में कहा जा चुका है कि ये सभी लोकगीत गाँवों और इलाकों की बोलियों में गाये जाते हैं। इसी कारण ये बड़े आह्लादकर और आनंददायक होते हैं। राग तो इन गीतों के आकर्षक होते ही हैं, इनकी समझी जा सकने वाली भाषा भी इनकी सफलता का कारण है।

भोजपुरी में क़रीब तीस-चालीस बरसों 'बिदेसिया' का प्रचार हुआ है। गाने वालों के अनेक समूह इन्हें गाते हुए देहात में फिरते हैं। उधर के जिलों में विशेषकर बिहार में बिदेसिया से बढ़कर दूसरे गाने लोकप्रिय नहीं हैं। इन गीतों में अधिकतर रसिकप्रियों और प्रियाओं की बात रहती है, परदेशी प्रेमी की और इनसे करुणा और विरह का रस बरसता है।

जंगल की जातियों आदि के भी दल-गीत होते हैं जो अधिकतर बिरहा आदि में गाये जाते हैं। पुरुष एक ओर और स्त्रियाँ दूसरी ओर एक-दूसरे के जवाब के रूप में दल बाँधकर गाते हैं और दिशाएँ गुँजा देते हैं। पर इधर कुछ काल से इस प्रकार के दलीय गायन का ह्रास हुआ है।

एक दूसरे प्रकार के बड़े लोकप्रिय गाने आल्हा के हैं। अधिकतर ये बुंदेलखंडी में गाये जाते हैं। आरंभ तो इसका चंदेल राजाओं के राजकवि जगनिक से माना जाता है जिसने आल्हा-ऊदल की वीरता का अपने महाकाव्य में बखान किया, पर निश्चय ही उसके छंद को लेकर जनबोली में उसके विषय को दूसरे देहाती कवियों ने भी समय-समय पर अपने गीतों में उतारा और ये गीत हमारे गाँवों में आज भी बहुत प्रेम से गाये जाते हैं। इन्हें गाने वाले गाँव-गाँव ढोलक लिए गाते फिरते हैं। इसी की सीमा पर उन गीतों का भी स्थान है जिन्हें नट रस्सियों पर खेल करते हुए गाते हैं। अधिकतर ये गद्य पद्यात्मक हैं और इनके अपने बोल हैं।

4. वास्तविक लोकगीत कैसे होते हैं?
5. बारहमासा लोकगीतों के बारे में आप क्या जानते हैं?
6. 'बिदेसिया' लोकगीत के बारे में आप क्या जानते हैं?

अनंत संख्या अपने देश में स्त्रियों के गीतों की है। हैं तो ये गीत भी लोकगीत ही,पर अधिकतर इन्हें औरतें ही गाती हैं। इन्हें सिरजती भी अधिकतर वही हैं। वैसे मर्द रचने वालों या गाने वालों की भी कमी नहीं है पर इन गीतों का संबंध विशेषतः स्त्रियों से हैं। इस दृष्टि से भारत इस दिशा में सभी देशों से भिन्न है क्योंकि संसार के अन्य देशों में स्त्रियों के अपने गीत मर्दों या जनगीतों से अलग और भिन्न नहीं हैं, मिले-जुले ही हैं।

त्यौहारों पर नदियों में नहाते समय के, नहाने जाते हुए राह के, विवाह के, मटकोड़, ज्यौनार के, संबंधियों के लिए प्रेमयुक्त गाली के, जन्म आदि सभी अवसरों के अलग-अलग गीत हैं, जो स्त्रियाँ गाती हैं। इन अवसरों पर कुछ आज से ही नहीं बड़े प्राचीनकाल से वे गाती रही हैं। महाकवि कालिदास आदि ने भी अपने ग्रंथों में उनके गीतों का हवाला दिया है। सोहर, बानी, सेहरा आदि उनके अनंत गानों में से कुछ हैं। वैसे तो बारहमासे पुरुषों के साथ नारियाँ भी गाती हैं।

एक विशेष बात यह है कि नारियों के गाने साधारणतः अकेले नहीं गाये जाते हैं, दल बाँधकर

गाये जाते हैं। अनेक कंठ एक साथ फूटते हैं यद्यपि अधिकतर उनमें मेल नहीं होता, फिर भी त्यौहारों और शुभ अवसरों पर वे बहुत ही भले गाते लगते हैं। गाँवों और नगरों में गायिकाएँ भी होती हैं जो विवाह, जन्म आदि के अवसरों पर गाने के लिए बुला ली जाती हैं। सभी ऋतुओं में स्त्रियाँ उल्लासित होकर दल बाँधकर गाती हैं। पर होली, बरसात की कजरी आदि तो उनकी अपनी चीज़ है, जो सुनते ही बनती है। पूरब की बोलियों में अधिकतर मैथिल-कोकिल विद्यापति के गीत गाये जाते हैं। पर सारे देश के-कश्मीर से कन्याकुमारी तक और काठियावाड़-गुजरात-राजस्थान से उड़ीसा-आंध्र तक अपने-अपने विद्यापति हैं।

स्त्रियाँ ढोलक की मदद से गाती हैं। अधिकतर उनके गाने के साथ नाच का भी पुट होता है। गुजरात का एक प्रकार का दलीय गायन 'गरबा' है जिसे विशेष विधि से घेरे में घूम-घूमकर औरतें गाती हैं। साथ ही लकड़ियाँ भी बजाती जाती हैं जो बाजे का काम करती हैं। इसमें नाच-गान साथ-साथ चलते हैं। वस्तुतः यह नाच ही है। सभी प्रांतों में यह लोकप्रिय हो चला है। इसी प्रकार होली के अवसर पर ब्रज में रसिया चलता है जिसे दल के दल लोग गाते हैं, स्त्रियाँ विशेष तौर पर।

गाँव के गीतों के वास्तव में अनंत प्रकार हैं। जीवन जहाँ इठला-इठलाकर लहराता है, वहाँ भला आनंद के स्रोतों की कमी हो सकती है? उद्दाम जीवन के ही वहाँ के अनंत संख्यक गाने के प्रतीक हैं।

7. स्त्रियों के लोकगीत कैसे होते हैं?
8. लोकगीत किसके प्रतीक हैं?

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(अ) प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. लोकगीत ग्रामीण जनता का मनोरंजक साधन है। कैसे?
2. हिंदी या अपनी मातृभाषा का कोई लोकगीत सुनाइए।

(आ) वाक्य उचित क्रम में लिखिए।

1. लोकगीत हैं संगीत सीधे जनता के।
2. वास्तव में प्रकार हैं अनंत के गीतों के गाँव।
3. मदद ढोलक की से स्त्रियाँ हैं गाती।

(इ) दिया गया गद्यांश पढ़िए और इसके मुख्य शब्द पहचानकर लिखिए।

गाँव के गीतों के वास्तव में अनंत प्रकार हैं। जीवन जहाँ इठला-इठलाकर लहराता है, वहाँ भला आनंद के स्रोतों की कमी हो सकती है? उद्दाम जीवन के ही वहाँ के अनंत संख्यक गाने के प्रतीक हैं।

जैसे : गीत

....,

....,

संगीत से क्रोध मिट जाता है। - महात्मा गांधी

(ई) नीचे दिया गया लोकगीत पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

चलत मुसाफिर मोह लिया रे पिंजड़े वाली मुनिया।
उड़-उड़ बैठी हलवैया दुकनिया
बर्फी के सब रस ले लिया रे पिंजड़े वाली मुनिया।
उड़-उड़ बैठी बजजवा दुकनिया
कपड़ा के सब रस ले लिया रे पिंजड़े वाली मुनिया।
उड़-उड़ बैठी *पनवड़िया* दुकनिया
बीड़ा के सब रस ले लियो रे पिंजड़े वाली मुनिया।
– शैलेंद्र कुमार

1. चिड़िया(मुनिया) हलवे की दुकान पर किसका रस लेती है?
2. चिड़िया(मुनिया) हलवे की दुकान के बाद किस दुकान पर जाती है?
3. चिड़िया(मुनिया) पान की दुकान पर किसका रस लेती है?
4. इस गीत का मूल भाव क्या है?

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

(अ) इन प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए।

1. निबंध में लोकगीतों के किन पक्षों की चर्चा की गयी है? इसके मुख्यांश बिंदुओं के रूप में लिखिए।
2. जैसे-जैसे शहर फैल रहे हैं और गाँव सिकुड़ रहे हैं, लोकगीतों पर उनका क्या प्रभाव पड़ रहा है?

(आ) 'लोकगीत' पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

(इ) अपने आसपास के क्षेत्र में प्रचलित किसी लोकगीत का हिंदी में अनुवाद कीजिए।

(ई) लोकगीतों में मुख्यतः ग्रामीण जनता की मार्मिक भावनाएँ हैं। अपने शब्दों में इसे सिद्ध कीजिए ।

भाषा की बात

(अ) कोष्ठक में दी गयी सूचना पढ़िए और उसके अनुसार कीजिए।

1. साधना, त्यौहार, देहात (एक-एक शब्द का वाक्य प्रयोग कीजिए। पर्याय शब्द लिखिए।)
2. सजीव, परदेशी, शास्त्रीय (एक-एक शब्द का विलोम शब्द लिखिए। वाक्य प्रयोग कीजिए।)
3. यह <u>आदिवासी</u> का संगीत है। (वचन बदलकर वाक्य फिर से लिखिए।)

(आ) सूचना पढ़िए और उसके अनुसार कीजिए।

1. लोकगीत, लोकतंत्र (इस तरह 'लोक' शब्द के साथ बने दो शब्द लिखिए।)
2. गायक, कवि, लेखक (लिंग बदलिए। वाक्य प्रयोग कीजिए।)
3. धर्म, मास, दिन, उत्साह ('इक' प्रत्यय जोड़कर वाक्य प्रयोग कीजिए।)

(इ) इन्हें समझिए और अंतर स्पष्ट कीजिए।

1. उपेक्षा-अपेक्षा 2. कृतज्ञ-कृतघ्न 3. बहार-बाहर 4. दावत-दवात

5. पेड़ <u>पर</u> बड़ा पक्षी है <u>पर</u> उसके छोटे-छोटे <u>पर</u> हैं।

6. <u>हल</u> चलाने से मात्र ही किसान की समस्याएँ <u>हल</u> नहीं होतीं।

(ई) नीचे दिया गया उदाहरण समझिए। उसके अनुसार दिये गये वाक्य बदलिए।

(1)

स्त्रियों के द्वारा गीत — गाये जाते हैं। / गाये जा रहे हैं। / गाये जा रहे होंगे।

1. गायक के द्वारा लोकगीत गाया जाता है।
2. अध्यापक के द्वारा पाठ पढ़ाया जाता है।

(2)

लोकगीत गाँव का संगीत है।

उदाहरण : क्या लोकगीत गाँव का संगीत है?
लोकगीत गाँव का संगीत है न!

1. स्त्रियाँ ढोलक की मदद से गाती हैं।
2. लोकगीत के कई प्रकार हैं।

परियोजना कार्य

यहाँ दिये गये चित्र ध्यान से देखिए। ये चित्र भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा लिखे गये एक प्रहसन नाटक से संबंधित हैं। इसी नाटक को कवि सोहनलाल द्विवेदी जी ने कविता के रूप में सृजन किया है। अपने पुस्तकालय या अन्य स्त्रोतों से उस नाटक या कविता का संग्रह कर कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।

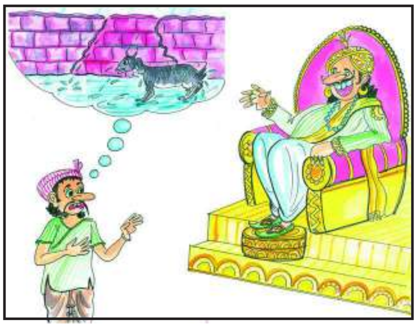
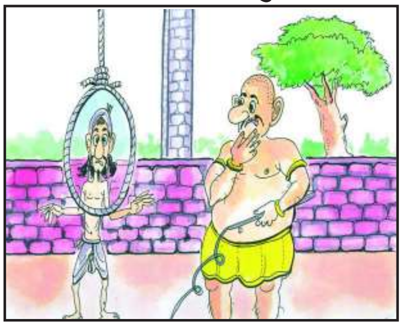
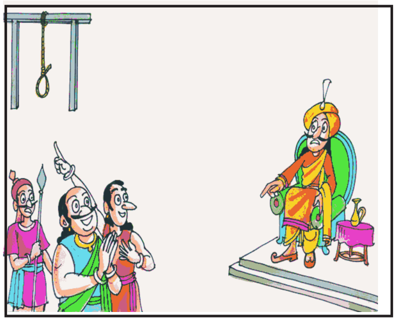

हमने इस नाटक का संकलन किया है। नाटक का नाम............... है। इसके पात्र हैं-

1. ....
2. ....
3. ....
4. .... आदि।

पठन हेतु

उलझन

पापा कहते बनो डॉक्टर
माँ कहती इंजीनियर!
भैया कहते इससे अच्छा
सीखो तुम कंप्यूटर!

चाचा कहते बनो प्रोफ़ेसर
चाची कहती अफ़सर
दादी कहती आगे चलकर
बनना तुम्हें कलेक्टर!

बाबा कहते फ़ौज़ में जाकर
जग में नाम कमाओ!
दीदी कहती घर में रह कर
ही उद्योग लगाओ!

सबकी अलग-अलग अभिलाषा
सबका अपना नाता!
लेकिन मेरे मन की उलझन
कोई समझ न पाता!

- सुरेंद्र विक्रम

कुछ रंग भरे फूल
कुछ खट्ठे-मीठे फल
थोड़ी बाँसुरी की धुन
थोड़ा जमुना का जल
कोई लाके मुझे दे!

एक सोना जड़ा दिन
एक रूपों भरी रात
एक फूलों भरा गीत
एक गीतों भरी बात
कोई लाके मुझे दे!

एक छाता छाँव का
एक धूप की घड़ी
एक बादलों का कोट
एक दूब की छड़ी
कोई लाके मुझे दे!

एक छुट्टी वाला दिन
एक अच्छी-सी किताब
एक मीठा-सा सवाल
एक नन्हा सा जवाब
कोई लाके मुझे दे!

- दामोदर अग्रवाल

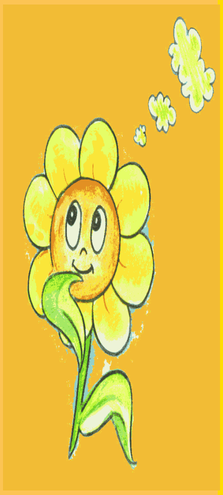

6 अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी

उन्मुखीकरण

पशु-पक्षियों की भी भाषा होती है। इसका मतलब वे एक-दूसरे का आशय बखूबी समझ लेते हैं। यह बात तो है कि पशु-पक्षियों की मनुष्यों जैसी सुविकसित भाषा नहीं होती, पर वे सीधी-सादी आवाज़ों और क्रियाओं से अपने भाव व्यक्त कर सकते हैं। ये बड़ी आसानी से खुशी, भय, चेतावनी, आमंत्रण जैसी कई भावनाएँ दर्शा सकते हैं। किसी पक्षी द्वारा किये गये संकेत अन्य पक्षी भी पहचान सकते हैं।

प्रश्न

1. आवाज़ का पर्याय क्या है?
2. किसी प्राणी की अनोखी विशेषता बताइए।
3. इस गद्यांश के लिए उचित शीर्षक दीजिए।

उद्देश्य

छात्रों को पत्र लेखन की विविध शैलियों का ज्ञान कराना, उनके लेखन सृजन के विकास के साथ-साथ उन्हें अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी का महत्व बताना है।

विधा विशेष

पत्र गद्य की एक प्रमुख विधा है। पत्र विधा पाठ में प्रेषक अपने विषय से जुड़ा पत्र पावक (पत्र पाने वाला) के नाम लिखता है। इसमें एक मित्र अपने दूसरे मित्र को हिंदी सीखने तथा उससे होने वाले लाभों के बारे में बता रहा है।

छात्रों के लिए सूचनाएँ

1. विषय प्रवेश ध्यान से पढ़िए, पाठ्य विषय समझिए।
2. पाठ ध्यान से पढ़िए, जिस शब्द का अर्थ समझ में नहीं आता उसके नीचे रेखा खींचिए।
3. रेखांकित शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।
4. समझ में न आने वाले अंश हो तो छात्र समूहों में या अध्यापक से चर्चा कीजिए।

विषय प्रवेश : *हिंदी एक ऐसी भाषा है जो भारतीयों की साँसों में बसी है। यह सबकी संस्कृति, सभ्यता व गरिमा का प्रतीक है। गाँधी जी ने अपना जीवन देश की स्वतंत्रता के साथ-साथ हिंदी की सेवा में समर्पित कर दिया था। अब हिंदी न केवल भारत की बल्कि विश्व की भाषा बन चुकी है। संसार के विविध क्षेत्रों में हिंदी करोड़ों लोगों की जीविका बन चुकी है।*

हैदराबाद,
8-9-2014.

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो? आशा करता हूँ कि तुम अपने परिवार के साथ सकुशल हो। यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि तुम हिंदी से जुड़े विविध कार्यक्रमों में भाग ले रहे हो।

तुमने अपने पत्र में जानना चाहा कि हिंदी भाषा का अपने जीवन में क्या महत्व है? मैं तुम्हारी जिज्ञासा का नीचे समाधान दे रहा हूँ।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में देश को एकता के सूत्र में बाँधने के लिए एक भाषा की आवश्यकता हुई। यह काम हिंदी से ही साध्य हो सका। आज हमें एक से अधिक भाषाएँ सीखना ज़रूरी है। जिनमें हिंदी और अंग्रेज़ी का स्थान महत्वपूर्ण है। हिंदी से हम सारे भारत की पहचान अच्छी तरह से कर सकते हैं। भारत के अलग-अलग प्राँतों में अलग-अलग भाषाएँ बोली जाती हैं। हमें भारत के सभी प्राँतों से जुड़ने के लिए एक भाषा की आवश्यकता होती है जिसे सारे भारत के वासी जानते हैं। वैसी भाषा ही हिंदी है, जो सारे भारतीयों को एकता के सूत्र में बाँधती है। हिंदी अपने शाब्दिक अर्थ से भी भारतीय कहलाती है। इसलिए देश के वर्तमान और भविष्य को ध्यान में रखकर भारतीय संविधान ने अनुच्छेद 343 (1) के तहत हिंदी को 14 सितंबर, 1949 को राजभाषा के रूप में गौरवान्वित किया है। तब से हम हर वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाते हैं।

आज भारत के अलावा बंग्लादेश, नेपाल, म्यांमार, भूटान, फिज़ी, गुयाना, सूरीनाम, त्रिनिडाड एवं टुबेगो, दक्षिण अफ्रिका, बहरीन, कुवैत, ओमान, कत्तर, सौदी अरब गणराज्य, श्रीलंका, अमेरिका, इंग्लैंड, जर्मनी, जापान, मॉरिशस, ऑस्ट्रेलिया आदि देशों में हिंदी की माँग बढ़ती ही जा रही है। विदेशों में भी हिंदी की रचनाएँ लिखी जा रही हैं, जिसमें वहाँ के साहित्यकारों का भी विशेष योगदान है। ये हम सब के लिए गर्व की बात है कि विदेशों में भारतीयों से आपसी व्यवहार करने के लिए वहाँ के लोग भी हिंदी सीख रहे हैं। इस तरह हिंदी की माँग आज विश्वभर में बढ़ती ही जा रही है। इसलिए भारत के अलावा अन्य देशों में भी कई संस्थाएँ हिंदी के प्रचार व प्रसार में जुटी हुई हैं। जिनमें केंद्रीय हिंदी संस्थान हिंदी शिक्षण प्रशिक्षण कार्यों से देश विदेश में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। आज विश्व भर में क़रीब डेढ़ सौ से अधिक विश्वविद्यालय हिंदी संबंधी कोर्सों का

संचालन कर रहे हैं। बैंक, मीडिया, फिल्म उद्योग आदि क्षेत्रों में हिंदी की उपयोगिता दिन-ब-दिन बढ़ती ही जा रही है। इस तरह आज हिंदी नये-नये रोज़गारों का प्रमुख आधार बन चुकी है। हिंदी से अपने भविष्य का निर्माण करने वालों के लिए www.rajbhasha.nic.in, www.ildc.gov.in, www.bhashaindia.com, www.ssc.nic.in, www.parliamentofindia.nic.in, www.ibps.in, www.khsindia.org, www.hindinideshalaya.nic.in आदि वेबसाइट सेवा में तत्पर हैं। यह हमारे लिए गर्व की बात है कि सारा विश्व हिंदी का महत्व जान चुका है इसका प्रमाण यह है कि सारे विश्व में 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस मनाया जाता है। इस तरह हिंदी अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शोभित है।

हाँ, तुमने आगे की पढ़ाई के लिए द्विितीय भाषा के रूप में हिंदी विषय का चयन करने की सलाह पूछी थी। हम जान चुके हैं कि आज राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी का महत्वपूर्ण स्थान है। हम इससे अपने उज्ज्वल भविष्य का निर्माण कर सकते हैं। इसलिए आगे की पढ़ाई के लिए प्रथम भाषा हो या द्विितीय भाषा, हिंदी का चयन करना ही लाभदायक है। मुझे पूरा विश्वास है कि तुम हिंदी से जुड़कर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपने देश का नाम रोशन करोगे।

घर में बड़ों को मेरा प्रणाम कहना। अपने स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रखना।

तुम्हारा प्रिय मित्र,
बशीर अहमद

पता :
श्री एस. अभिनव कुमार,
दसवीं कक्षा,
ए.पी. मॉडल स्कूल, वेलदंडा,
महबूबनगर - 509360.

प्रश्न

1. भारत देश को स्वतंत्र कराने में हिंदी भाषा का क्या योगदान रहा होगा?
2. हिंदी भाषा की क्या विशेषता है?
3. हिंदी भाषा सीखने से क्या-क्या लाभ हैं?

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(अ) प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. 'हिंदी विश्वभाषा है।' इस कथन के बारे में अपने विचार व्यक्त कीजिए।
2. 'भारत में अनेकता में एकता का प्रतीक हिंदी है।' कैसे?

(आ) पाठ के आधार पर निम्न प्रश्नों के उत्तर हाँ या नहीं में दीजिए।

1. हिंदी देश को एकता के सूत्र में बाँधती है। ( )
2. 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है। ( )
3. 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस मनाया जाता है। ( )
4. हिंदी भाषा से रोज़गार की संभावनाएँ अधिक हैं। ( )

(इ) नीचे दिये गये वाक्य पाठ के आधार पर उचित क्रम में लिखिए।

1. भारतीय हिंदी शाब्दिक अर्थ भी कहलाती है से अपने
2. हिंदी 14 सितंबर मनाते हैं को दिवस
3. तरह इस हिंदी अंतर्राष्ट्रीय पर शोभित है स्तर
4. स्वास्थ्य ध्यान पूरा रखना का अपने

(ई) नीचे दिया गया विज्ञापन पढ़िए। प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

भारतीय स्टेट बैंक

विज्ञापन क्र.सं.सीआरपी.डी./एससीओ/2013-14/01
भारतीय स्टेट बैंक में राजभाषा अधिकारियों की भर्ती

भारतीय स्टेट बैंक में राजभाषा अधिकारियों की (सहायक प्रबंधक - राजभाषा) भर्ती के लिए भारतीय नागरिकों से आवेदन आमंत्रित किये जाते हैं। योग्य आवेदक आवेदन करने के लिए हमारी वेबसाइट http://www.statebankofindia.com अथवा http://www.sbi.co.in पर जाकर अन्य विवरण प्राप्त कर सकते हैं। आवेदक शुल्क भेजने से पूर्व विज्ञापन में दिया गया विवरण पूरी तरह से पढ़ लें।

आवेदन आरंभ हो रहे हैं : 25.05.2013
पंजीकरण की अंतिम तिथि : 13.07.2013

स्थान : मुंबई
दिनांक : 10.05.2013

1. यह विज्ञापन किस बैंक का है?
2. किस नौकरी के लिए यह विज्ञापन दिया गया है?
3. आवेदन करने से पहले वेबसाइट से अन्य जानकारी प्राप्त करने के लिए क्यों कहा गया होगा?

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

(अ) इन प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए।

1. सांस्कृतिक दृष्टि से हिंदी का क्या महत्व है?
2. हिंदी देश को जोड़ने वाली कड़ी है। इसे अपने शब्दों में सिद्‌ध कीजिए।

(आ) राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से हिंदी महत्वपूर्ण भाषा है। इस पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

(इ) 'हिंदी भाषा' पर एक छोटा सा निबंध लिखिए।

(ई) मनोरंजन की दुनिया में हिंदी के महत्व पर प्रकाश डालिए।

भाषा की बात

(अ) कोष्ठक में दी गयी सूचना पढ़िए और उसके अनुसार कीजिए।

1. भाषा, समाधान, संकल्प (एक-एक शब्द का वाक्य प्रयोग कीजिए और उसके पर्याय शब्द लिखिए।)
2. एकता, स्वदेश, प्राचीन (एक-एक शब्द का विलोम शब्द लिखिए और उससे वाक्य प्रयोग कीजिए।)
3. परीक्षा, संस्था, दिशा (एक-एक शब्द का वचन बदलिए और वाक्य प्रयोग कीजिए।)

(आ) सूचना पढ़िए और उसके अनुसार कीजिए।

1. सकुशल, अनुक्रम, अनुचित (उपसर्ग पहचानिए।)
2. वार्षिक, खुशी, भारतीय (प्रत्यय पहचानिए।)
3. देश को एकता के सूत्र में बाँधने के लिए एक भाषा की आवश्यकता हुई। (कारक पहचानिए।)

(इ) सूचना पढ़िए और उसके अनुसार कीजिए।

1. सलाह, सरकार, संविधान, संस्कृति, समाधान (लिंग की पहचान कीजिए।)
2. जो विश्व के सभी देशों से जुड़ा हो। (एक शब्द में लिखिए।)
3. अद्‌वितीय (अनेक शब्दों में लिखिए।)

(ई) नीचे दिये गये वाक्य रचना की दृष्टि से समझिए।

1. मुझे पूरा विश्वास है कि तुम हिंदी से अपना भविष्य बनाओगे ।
2. जो जानकारी दी गयी है उसे समझिए।
3. तुमने पूछा कि हिंदी का क्या महत्व है?

परियोजना कार्य

इस पुस्तक के पहले पाठ से पाँचवें पाठ तक आये चित्रों में अपने मनपसंद चित्र का चयन कीजिए और उसके बारे में पाँच वाक्य लिखिए। उसका प्रदर्शन कक्षा में कीजिए।

उपवाचक

दो कलाकार

- मन्नू भंडारी

"ए रूनी, उठ।" और चादर खींचकर चित्रा ने सोती हुई अरुणा को झकझोर कर उठा दिया। "अरे! क्या है?" आँखें मलते हुए तनिक खिझलाहट भरे स्वर में अरुणा ने पूछा। चित्रा उसका हाथ पकड़कर खींचती हुई ले गयी और बोली, "देख, मेरा चित्र पूरा हो गया।"

"ओह! तो इसे दिखाने के लिए तूने मेरी नींद ख़राब कर दी।"

"अरे! ज़रा इस चित्र को तो देख। न पा गयी पहला इनाम तो नाम बदल देना।"

चित्र को चारों ओर घुमाती हुई अरुणा बोली, "किधर से देखूँ, यह तो बता दे? हज़ार बार तुझसे कहा कि जिसका चित्र बनायें, उसका नाम लिख दिया कर, जिससे ग़लतफ़हमी न हुआ करें, वरना तू बनाये हाथी ही और समझें उल्लू।" तस्वीर पर आँखें गड़ाती हुई बोली, "किसी तरह नहीं समझ पा रही हूँ आख़िर यह किस जीव की तस्वीर है।"

"तो आपको यह कोई जीव नज़र आ रहा है? ज़रा अच्छी तरह देख और समझने की कोशिश कर।"

"अरे! यह क्या? इसमें तो सड़क, आदमी, ट्रैम, बस, मोटर और मकान सब एक-दूसरे पर चढ़ रहे हैं। मानो सबकी खिचड़ी पकाकर रख दी हो। क्या घनचक्कर बनाया है?" यह कहकर अरुणा ने चित्र रख दिया।

"ज़रा सोचकर बता कि यह किसका प्रतीक है?"

"तेरी बेवकूफ़ी का। आयी है बड़ी प्रतीक वाली।"

"अरे जनाब! यह चित्र तो आज की दुनिया में 'कन्फ्यूजन' का प्रतीक है, समझी।"

"मुझे तो तेरी दिमाग़ के कन्फ्यूजन का प्रतीक आ रहा है, बिना मतलब ज़िंदगी ख़राब कर रही है।" और अरुणा मुँह धोने के लिए बाहर चली गयी। लौटी तो देखा तीन-चार बच्चे उसके कमरे के दरवाज़े पर खड़े उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। आते ही बोली, "आ गये बच्चो! चलो, मैं अभी आयी।"

"क्या यह बंदर पाल रखी है तूने?" फिर ज़रा हँसकर चित्रा बोली, "एक दिन तेरी पाठशाला का चित्र बनाना होगा। लोगों को दिखाया करेंगे कि हमारी एक मित्र साहिबा थीं जो बस्ती के बच्चों को पढ़ा-पढ़ाकर ही अपने आप को भारी पंडिताइन और समाज सेविका समझती थीं।"

चार बजते ही कॉलेज से सारी लड़कियाँ लौट आयीं, पर अरुणा नहीं लौटी। चित्रा चाय के लिए उसकी प्रतीक्षा कर रही थी।

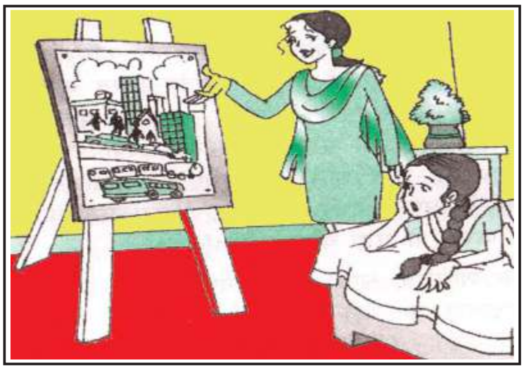

"पता नहीं, कहाँ-कहाँ भटक जाती है, बस इसके पीछे बैठे रहो।"

"अरे! क्यों बड़-बड़ कर रही है? ले, मैं आ गयी। चल, बना चाय। मिलकर ही पियेंगे।"

"ये ले कोई चिट्ठी आयी है।"

अरुणा लिफाफ़ा फाड़कर पत्र पढ़ने लगी। जब उसका पत्र समाप्त हो गया तो चाय पीते-पीते चित्रा बोली, ''आज पिताजी का पत्र आया है, लिखा है, जैसे ही यहाँ कोर्स समाप्त हो जायें, मैं विदेश जा सकती हूँ। मैं तो जानती थी कि पिताजी कभी मना नहीं करेंगे।''

''हाँ भाई! धनी पिता की इकलौती बिटिया ठहरी। तेरी इच्छा कभी खाली जा सकती है? पर सच कहती हूँ मुझे तो सारी कला इतनी निरर्थक लगती है, इतनी बेमतलब लगती है कि बता नहीं सकती। किस काम की ऐसी कला, जो आदमी को आदमी न रहने दे।'' अरुणा आवेश से बोली।

''तो तुम मुझे आदमी नहीं समझती, क्यों?''

''तुझे दुनिया से कोई मतलब नहीं, दूसरों से कोई मतलब नहीं। बस चौबीस घंटे अपने रंगों और तूलियों में डूबी रहती है। दुनिया में कितनी बड़ी घटना घट जाये पर यदि उसमें तेरे चित्र के लिए आइडिया नहीं तो तेरे लिए वह घटना कोई महत्व नहीं रखती। हर घड़ी, हर जगह, हर चीज़ में तू अपने चित्रों के लिए मॉडल खोजा करती है। कागज़ पर इन निर्जीव चित्रों को बनाने की जगह दो-चार की ज़िंदगी क्यों नहीं बना देती। तेरे पास सामर्थ्य है, साधन है।''

''वह काम तो तेरे लिए छोड़ दिया। मैं चली जाऊँगी तो जल्दी से सारी दुनिया का कल्याण करने के लिए झंडा लेकर निकल पड़ना।'' और चित्रा हँस पड़ी।

तीन दिनों से मूसलधार वर्षा हो रही थी। रोज़ अख़बारों में बाढ़ की ख़बरें आती थीं। बाढ़ पीड़ितों की दशा बिगड़ती जा रही थी और वर्षा थी कि थमने का नाम नहीं लेती। अरुणा सारा दिन चंदा इकट्ठा करने में व्यस्त रहती। एक दिन आख़िर चित्रा ने कह दिया – ''तेरे इंतेहान सिर पर आ रहे हैं, कुछ पढ़ती-लिखती है कि नहीं, सारा दिन बस भटकती रहती है। माता-पिता क्या सोचेंगे कि इतना सारा पैसा पानी में बहा दिया।''

''आज शाम को स्वयंसेवकों का एक दल जा रहा है, प्रिंसिपल से अनुमति ले ली है, मैं भी उसके साथ जा रही हूँ।'' चित्रा की बात को बिना सुने उसने कहा।

शाम को अरुणा चली गयी। पंद्रह दिन बाद वह लौटी तो उसकी हालत काफ़ी ख़राब हो रही थी। सूरत ऐसी निकल आयी थी कि मानो छह महीने से बीमार है। चित्रा उस समय गुरुजी के पास गयी हुई थी। अरुणा नहा-धोकर, खा-पीकर लेटने लगी। तभी उसकी नज़र चित्रा के नये चित्रों की ओर गयी। तीन चित्र बने रखे थे। तीनों बाढ़ के चित्र थे जो दृश्य अपनी आँखों से देखकर आ रही थी वैसे ही दृश्य यहाँ पर अंकित थे। उसका मन न जाने कैसा-कैसा हो गया।

शाम को चित्रा लौटी तो अरुणा को देखकर बड़ी प्रसन्न हुई। ''क्यों चित्रा, तेरा जाने का तय हो गया?''

''हाँ, अगले बुध को मैं घर जाऊँगी और एक सप्ताह बाद हिंदुस्तान की सीमा के बाहर चली जाऊँगी।'' उल्लास उसके स्वर में छलक रहा था।

''सच कह रही है, तू चली जाएगी चित्रा, छह साल से साथ रहते-रहते यह बात मैं तो भूल गयी कि कभी हमको अलग भी होना पड़ेगा। तू चली जाएगी तो मैं कैसे रहूँगी?'' उदासी भरे स्वर में अरुणा ने पूछा। लगा जैसे स्वयंसेवी पूछ रही हो।

कितना स्नेह था दोनों में, सारा हॉस्टल उनकी मित्रता को ईर्ष्या की दृष्टि से देखता था। आज चित्रा को जाना था। अरुणा सवेरे से ही उसका सारा सामान ठीक कर रही थी। एक-एक करके चित्रा सबसे मिल आयी, बस गुरुजी से मिलना रह गया था, सो उनका आशीर्वाद लेने चल पड़ी। तीन बज गये थे, पर वह लौटी नहीं। पाँच बजे की गाड़ी से वह जाने वाली थी। अरुणा ने सोचा कि वह खुद जाकर देख आये कि आख़िर बात क्या हो गयी। तभी हड़बड़ाती सी चित्रा ने प्रवेश किया। ''बड़ी देर हो गयी है न। अरे! क्या करूँ कि बस कुछ ऐसा हो गया, कि रुकना ही पड़ा।''

''आख़िर क्या हो गया ऐसा, जो रुकना ही पड़ा, सुनें तो।'' दो-तीन कंठ एक साथ बोले, ''गर्ग स्टोर के सामने पेड़ के नीचे अक्सर भिखारिन रहा करती थीं न! लौटी तो देखा कि वह गुज़र गई और उसके दोनों बच्चे उसके सूखे शरीर से चिपककर बुरी तरह रो रहे हैं। जाने क्या था पूरे दृश्य में कि मैं अपने को रोक नहीं सकी। एक रफ़ सा स्केच बना ही डाला। बस इसी में देर हो गयी।''

साढ़े चार बजे चित्रा हॉस्टल के फाटक पर आ गयी, पर तब तक अरुणा का कहीं पता नहीं था। बहुत सारी लड़कियाँ उसे छोड़ने स्टेशन तक भी गयीं, पर चित्रा की आँखें बराबर अरुणा को ढूँढ़ रही थी। पाँच भी बज गये, रेल चल पड़ी पर अरुणा न आयी, सो न आयी।

विदेश जाकर चित्रा तन-मन से अपने काम में जुट गयी। उसकी लगन ने उसकी कला को निखार दिया। विदेश में उसके चित्रों की धूम मच गयी। भिखारिन और दो अनाथ बच्चों के उस चित्र की प्रशंसा में तो अख़बारों के कालम के कालम भर गये। शोहरत के ऊँचे कगार पर बैठ, चित्रा जैसे अपना पिछला सब कुछ भूल गयी। पहले वर्ष तो अरुणा से पत्र व्यवहार बड़े नियमित रूप से चला। फिर कम होते-होते एकदम बंद हो गया। पिछले एक साल से तो उसे यह भी मालूम नहीं कि वह कहाँ है? अनेक प्रतियोगिताओं में उसका 'अनाथ' शीर्षक वाला चित्र प्रथम पुरस्कार पा चुका था। जाने क्या था उस चित्र में, जो देखता चकित रह जाता। तीन साल बाद जब वह भारत लौटी तो बड़ा स्वागत हुआ उसका। अख़बारों में उसकी कला पर, उसके जीवन पर अनेक लेख छपे। पिता अपनी इकलौती बिटिया की इस सफलता पर बहुत प्रसन्न थे। दिल्ली में उसके चित्रों की प्रदर्शनी का विराट आयोजन किया गया। उद्घाटन करने के लिए उसे ही बुलाया गया।

उस भीड़-भाड़ में अचानक उसकी भेंट अरुणा से हो गयी। 'रूनी' कहकर चित्रा भीड़ की उपस्थिति को भूलकर अरुणा के गले लिपट गयी।

''तुझे कब से चित्र देखने का शौक़ हो गया, रूनी?''

''चित्रों को नहीं, चित्रा को देखने आयी थी। तू तो एकदम भूल ही गयी।''

''अरे! ये बच्चे किसके हैं?'' दो प्यारे से बच्चे अरुणा से सटे खड़े थे। लड़के की उम्र दस साल की होगी। तो लड़की की उम्र कोई आठ।

''मेरे बच्चे हैं, और किसके। यह तुम्हारी चित्रा मौसी हैं, नमस्ते करो, अपनी मौसी को।'' अरुणा ने आदेश दिया।

बच्चों ने बड़े आदर से नमस्ते किया। पर चित्रा अवाक् होकर कभी बच्चों को, कभी अरुणा का मुँह देख रही थी। तभी अरुणा ने टोका। ''कैसी मौसी है, प्यार तो कर।'' और चित्रा ने दोनों पर प्यार से हाथ फेरा। अरुणा ने कहा ''तुम्हारी यह मौसी बहुत अच्छी तस्वीरें बनाती हैं, ये सारी तस्वीरें इन्हीं की बनायी हुई हैं।''

''आप हमें सब तस्वीरें दिखाइए मौसी'' बच्चों ने फ़रमाइश की। चित्रा उन्हें तस्वीरें दिखाने लगी। घूमते-घूमते वे उसी भिखारिन वाली तस्वीर के सामने आ पहुँचे। चित्रा ने कहा, ''यही वह तस्वीर है रूनी, जिसने मुझे इतनी प्रसिद्धि दी।''

''ये बच्चे रो क्यों रहे हैं मौसी'' तस्वीर को ध्यान से देखकर बालिका ने पूछा।

''उनकी माँ गुज़र गयी है। देखती नहीं, इतना भी नहीं समझती।'' बालक ने मौक़ा पाते ही अपने बड़प्पन और ज्ञान की छाप लगायी।

''ये सचमुच के बच्चे थे? मौसी!'' बालिका का स्वर करुण से करुणतर होता जा रहा था।

''अरे! सचमुच के बच्चों को देखकर ही तो बनायी थी यह तस्वीर।''

''मौसी, हमें ऐसी तस्वीर नहीं, अच्छी-अच्छी तस्वीरें दिखाओ, राजा-रानी की, परियों की।''

उन तस्वीरों को और अधिक देर तक देखना बच्चों के लिए असह्य हो उठा था। तभी अरुणा के पति आ पहुँचे। साधारण बातचीत के पश्चात अरुणा ने दोनों बच्चों को उनके हवाले करते हुए कहा, ''आप ज़रा बच्चों को प्रदर्शिनी दिखाइए, मैं चित्रा को लेकर घर चलती हूँ।''

बच्चे इच्छा न रहते हुए भी पिता के साथ विदा हुए। चित्रा को दोनों बच्चे बड़े ही प्यारे लगे। वह उन्हें देखती रही। जैसे ही वे आँखों से ओझल हुए उसने पूछा, ''सच-सच बता रूनी, ये प्यारे-प्यारे बच्चे किसके हैं?''

''कहा तो, मेरे।'' अरुणा ने हँसते हुए कहा।

''अरे! बता न, मुझे ही बेवकूफ़ बनाने चली है।'' एक क्षण रुककर अरुणा ने कहा, ''बता दूँ?'' और फिर उस भिखारिन वाले चित्र के दोनों बच्चों पर उँगली रखकर बोली, ''यही वे दोनों बच्चे हैं।''

''क्या............'' चित्रा की आँखें विस्मय से फैली रह गयीं?

''क्या सोच रही चित्रा?''

''कुछ नहीं......... मैं........ सोच रही थी कि.........।'' पर शब्द शायद उसके विचारों में खो गये।

-(मन्नु भण्डारी की कहानी पर आधारित)

प्रश्न :

1. अरुणा व चित्रा दोनों के स्वभाव के बारे में अपने विचार बताइए।
2. चित्रा ने विदेश जाकर क्या किया? आप के विचार में उसका विदेश जाना सही था? क्यों?
3. अरुणा की ममता पर अपने विचार बताइए।

इकाई - *III*

7. भक्ति पद

-रैदास, मीराबाई

उन्मुखीकरण

गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागौ पाय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय।।

प्रश्न

1. भगवत भक्ति का ज्ञान कौन देता है?
2. गुरु को किससे श्रेष्ठ बताया गया है? क्यों?
3. 'निराडंबर भक्ति भावना' का क्या महत्व है?

उद्देश्य

छात्रों को प्राचीन साहित्य से अवगत कराते हुए उनमें काव्य रचना की विविध शैलियों का ज्ञान कराना है। भारतीय साहित्य व संस्कृति के प्रति रुचि उत्पन्न कर निराडंबर भक्ति मार्ग का महत्व बताना है।

विधा विशेष

इसमें एक चौपाई और एक पद है। चौपाई मात्रिक सम छंद है। चौपाई और पद विशेष लय और ताल से गाये जाते हैं। जो बच्चों के रागात्मक मन को छू लेते हैं। चौपाई छंद चार पंक्तियों का होता है, इसकी प्रत्येक पंक्ति में सोलह मात्राएँ होती हैं।

छात्रों के लिए सूचनाएँ

1. विषय प्रवेश ध्यान से पढ़िए, पाठ्य विषय समझिए।
2. पाठ ध्यान से पढ़िए, जिस शब्द का अर्थ समझ में नहीं आता उसके नीचे रेखा खींचिए।
3. रेखांकित शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।
4. समझ में न आने वाले अंश हो तो छात्र समूहों में या अध्यापक से चर्चा कीजिए।

विषय प्रवेश : *प्राचीन काल से ही भगवत-स्मरण, भगवत-भक्ति को महत्व दिया गया है। भगवान के नाम रूपी नाव से ही संसार रूपी सागर से तर सकते हैं। इसकी सही राह का मार्गदर्शन गुरु द्‌वारा होता है। ऐसी ही भक्ति संबंधी रैदास की चौपाइयाँ और मीराबाई के पद हम इस पाठ के अंतर्गत पढ़ेंगे।*

कवि : रैदास
जीवनकाल : सन् 1482 – सन् 1527
प्रसिद्‌ध रचना : 'गुरु ग्रंथ साहिब' में इनके पद संकलित हैं।
विशेष : ज्ञानमार्गी शाखा के प्रमुख कवियों में से एक।

प्रभुजी, तुम चंदन हम पानी।
जाकी अँग-अँग बास समानी।।
प्रभुजी, तुम घन-बन हम मोरा।
जैसे चितवहि चंद्र चकोरा।।
प्रभुजी, तुम मोती हम धागा।
जैसे सोनहि मिलत सुहागा।।
प्रभुजी, तुम स्वामी हम दासा।
ऐसी भक्ति करै रैदासा।।

प्रश्न
1. प्रभु के प्रति रैदास की भक्ति कैसी है?
2. कवि ने अपने आप को मोर क्यों माना होगा?

कवयित्री : मीराबाई
जीवनकाल : सन् 1498 – सन् 1573
प्रसिद्‌ध रचना : *मीराबाई पदावली*
विशेष : कृष्णोपासक कवयित्रियों में श्रेष्ठ। माधुर्य भाव प्रयोग में पटु।

पायो जी म्हें तो राम रतन धन पायो।
वस्तु अमोलक दी म्हारे सतगुरु, किरपा कर अपनायो।
जनम-जनम की पूँजी पायी, जग में सभी खोवायो।
खरच न खूटै, चोर न लूटै, दिन-दिन बढ़त सवायो।
सत की नाँव खेवटिया सतगुरु, भवसागर तर आयो।
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर, हरख-हरख जस पायो।।

3. संत किसे कहते हैं?
4. श्रीकृष्ण के प्रति मीरा की भक्ति कैसी है?

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(अ) प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. रैदास व मीरा की भक्ति भावना में क्या अंतर है? स्पष्ट कीजिए।
2. हमारे जीवन में भक्ति भावना का क्या महत्व है? चर्चा कीजिए।

(आ) पंक्तियाँ उचित क्रम में लिखिए।

1. प्रभुजी, तुम पानी हम चंदन।
2. मीरा के प्रभु नागर गिरिधर, हरख-हरख पायो जस।।

(इ) नीचे दी गई पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए।

1. सत की नाँव खेवटिया सतगुरु, भवसागर तर आयो।
2. प्रभुजी, तुम चंदन हम पानी, जाकी अँग-अँग बास समानी।

(ई) पद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

मैया मोरि मैं नहिं माखन खायो,
भोर भयो गैयन के पाछे मधुबन मोहि पठायो।
चार पहर बंसीबट भटक्यो साँझ परे घर आयो,
मैं बालक बहिंयन को छोटो छींको केहि विधि पायो।
ग्वाल बाल सब बैर परे हैं बरबस मुख लपटायो,
यह ले अपनी लकुटी कमरिया बहुतहि नाच नचायो।
तब बिहंसी जसोदा, लै उर कंठ लगायो। - महाकवि सूरदास

1. कृष्ण किनसे बातें कर रहे हैं?
   (अ) यशोदा (आ) देवकी (इ) सीता (ई) पार्वती
2. कृष्ण गायों को चराने कहाँ जाते हैं?
   (अ) मधुबन (आ) शांतिवन (इ) राजवन (ई) सुंदरवन
3. कृष्ण घर कब लौटते हैं?
   (अ) सुबह (आ) दोपहर (इ) शाम (ई) रात
4. कृष्ण की बाहें कैसी हैं?
   (अ) छोटी (आ) मोटी (इ) चौड़ी (ई) लंबी
5. 'बैर' शब्द का अर्थ क्या है?
   (अ) मित्र (आ) मित्रता (इ) शत्रु (ई) शत्रुता

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

(अ) इन प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए।

1. रैदास जी ने ईश्वर की तुलना चंदन, बादल और मोती से की है। आप ईश्वर की तुलना किससे करना चाहेंगे? और क्यों?
2. मीरा की भक्ति भावना कैसी है? अपने शब्दों में लिखिए।

(आ) 'मीरा के पद' का भाव अपने शब्दों में लिखिए।

(इ) भक्ति भावना से संबंधित छोटी-सी कविता का सृजन कीजिए।

(ई) भक्ति और मानवीय मूल्यों के विकास में भक्ति साहित्य किस प्रकार सहायक हो सकता है?

भाषा की बात

(अ) सूचना पढ़िए। वाक्य प्रयोग कीजिए।

1. प्रभु, पानी, चंद्र (एक-एक शब्द का वाक्य प्रयोग कीजिए और उसके पर्याय शब्द लिखिए।)
2. स्वामी, गुरु, दिन (एक-एक शब्द का विलोम शब्द लिखिए और उससे वाक्य प्रयोग कीजिए।)
3. चदंन, सबी, भक्ति (वर्तनी सही कीजिए।)

(आ) सूचना पढ़िए। उसके अनुसार कीजिए।

1. बन, रतन, किरपा (तत्सम रूप लिखिए।)
2. जग, नाँव, अमोलक (अर्थ लिखिए।)

(इ) वचन बदलकर वाक्य फिर से लिखिए।

1. <u>मोती</u> सागर में मिलता है।
2. धागे से <u>माला</u> बनती है।
3. <u>मोर</u> सुंदर पक्षी है।

(ई) 1. नीचे दिया गया उदाहरण समझिए। पाठ के अनुसार उचित शब्द लिखिए।

हे प्रभुजी! तुम
- चंदन।
- ....।
- ....।
- ....।

हे प्रभुजी! हम
- पानी ।
- ....।
- ....।
- ....।

2. कविता में प्रयुक्त होने वाले वर्ण, मात्रा, यति आदि के संगठन को छंद कहते हैं। चौपाई छंद एक मात्रिक सम छंद है। इसमें चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में सोलह मात्राएँ होती हैं।

उदाहरण :

I I S I I S I I I I S S
प्रभुजी, तुम चंदन हम पानी।
S S I I I I S I I S S
जाकी अँग-अँग बास समानी।।
I I S I I I I I I I I S S
प्रभुजी, तुम घन-बन हम मोरा।
S S I I I I S I I S S
जैसे चितवहि चंद्र चकोरा।।

परियोजना कार्य

"भगवान की उपासना सच्चे हृदय से की जाती है न कि ठाट-बाट और आडंबरों से" इस भावना को दर्शाने वाली किसी कविता का संग्रह कर कक्षा में प्रदर्शन कीजिए।

नीतिज्ञ के लिए यश और धन की कमी नहीं है। - प्रेमचंद

8 स्वराज्य की नींव

- विष्णु प्रभाकर

उन्मुखीकरण

शासक का यह दायित्व होता है कि सबका बराबर ध्यान रखना चाहिए। विपत्ति की हालत में धैर्य और समयस्फूर्ति से काम लेना चाहिए। क़ानून और नियमों का समान रूप से अनुसरण करना चाहिए। जो शासक अधिकार में क्षमा का गुण रखता है, निस्संदेह वह आदर्श शासक कहलाता है।

प्रश्न

1. शासक को विपत्ति की हालत में कैसे काम लेना चाहिए?
2. आपकी नज़र में आदर्श शासक के लक्षण क्या हो सकते हैं?
3. सुव्यवस्थित शासन के गुण क्या हो सकते हैं?

उद्देश्य

छात्रों को साहित्य में एकांकी विधा से परिचित कराना, एकांकी की भाषा व रचना शैली से अवगत कराना और एकांकी लेखन के लिए प्रोत्साहित करना एवं इसके साथ-साथ छात्रों में देश के लिए समर्पित होने की भावना का विकास करना इसका उद्देश्य है।

विधा विशेष

एकांकी साहित्य की वह विधा है, जो नाटक के समान अभिनय से संबंधित है। एकांकी का अर्थ है- एक अंक वाला। एकांकी में किसी एक ही समस्या को बताया जाता है। यह एक ऐतिहासिक घटना प्रधान एकांकी है।

लेखक परिचय

विष्णु प्रभाकर का जन्म सन् 1912 में हुआ। वे आदर्शप्रिय व्यक्ति थे। इन्हें प्रेमचंद परंपरा का 'आदर्शोन्मुख यथार्थवादी' लेखक कहा जाता है। 'आवारा मसीहा' नामक रचना पर इन्हें 'सोवियत लैंड नेहरु पुरस्कार' से सम्मानित किया गया है। भारत सरकार ने इन्हें 'पद्म भूषण' सम्मान से सम्मानित किया है।

छात्रों के लिए सूचनाएँ

1. विषय प्रवेश ध्यान से पढ़िए, पाठ्य विषय समझिए।
2. पाठ ध्यान से पढ़िए, जिस शब्द का अर्थ समझ में नहीं आता उसके नीचे रेखा खींचिए।
3. रेखांकित शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।
4. समझ में न आने वाले अंश हो तो छात्र समूहों में या अध्यापक से चर्चा कीजिए।

विषय प्रवेश : *"खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी" सुभद्रा कुमारी चौहान की यह पंक्ति लक्ष्मीबाई की वीरता को प्रकट करती है। लक्ष्मीबाई ने यह सिद्‌ध कर दिखाया कि अबला हमेशा अबला नहीं रहती। आवश्यकता पड़ने पर वह सबला भी बन सकती है। लक्ष्मीबाई ने सच्चे अर्थों में देश की स्वतंत्रता की नींव रखी थी। प्रस्तुत पाठ में देश के प्रति उनकी कर्मपरायणता के बारे में बताया जा रहा है।*

(पात्र : लक्ष्मीबाई, जूही, मुंदर, रघुनाथराव, तात्या, सेनानायक)

(रंगमंच पर युद्‌धभूमि का दृश्य अंकित किया जा सकता है। कैंप कहीं पास ही लगा हुआ है। महारानी लक्ष्मीबाई के तंबू का एक भाग दिखायी देता है। परदा उठने पर महारानी लक्ष्मीबाई अपनी सखी जूही के साथ उत्तेजित अवस्था में मंच पर प्रवेश करती हैं। दोनों लाल कुर्ती के सैनिकों की वेशभूषा में हैं।)

लक्ष्मीबाई: मेरे देखते-देखते क्या से क्या हो गया जूही। झाँसी, कालपी, ग्वालियर कहाँ गये। परंतु मंज़िल है कि पास आकर भी हर बार दूर चली जाती है। स्वराज्य को आते हुए देखती हूँ, परंतु दूसरे ही क्षण मार्ग में हिमालय अड़ जाता है। उसे पार करती हूँ तो महासागर की डरावनी लहरें थपेड़े मारने लगती हैं। उनसे जूझती हूँ तो नाविक सो जाते हैं। देखो जूही, उधर क्षितिज पर देखो। कैसी लपलपाती हुई लपटें उठ रही हैं। सारा आकाश धूम घटाओं से छाया हुआ है। प्रलय की भूमिका है, लेकिन राव साहब हैं कि रक्तमंडल की छाया में ऐशो आराम में मशगूल हैं। (आवेश में आते-आते सहसा मौन हो जाती है। जूही कुछ कहने के लिए मुँह खोलती है कि महारानी फिर बोल उठती है।) जूही, जूही, मैंने प्रतिज्ञा की थी कि मैं अपनी झाँसी नहीं दूँगी। लेकिन झाँसी हाथ से निकल गयी जूही। (सहसा तीव्र होकर) नहीं, नहीं, झाँसी हाथ से नहीं निकली। मैं अपनी झाँसी नहीं दूँगी। मैं अकेली हूँ, लेकिन उससे क्या? मैं अकेली ही झाँसी लेकर रहूँगी।

जूही : कौन कहता है, आप अकेली हैं महारानी, आप तो गीता पढ़ती हैं। फिर यह निराशा कैसी?

लक्ष्मीबाई: मैं निराश नहीं हूँ। मैं जानती हूँ कि मैं झाँसी लेकर रहूँगी, लेकिन क्या तुम नहीं जानती कि उस दिन बाबा गंगादास ने मुझसे क्या कहा था? "जब तक हमारे समाज में छुआछूत और ऊँच-नीच का भेद नहीं मिट जाता, जब तक हम विलासप्रियता को छोडकर जनसेवक नहीं बन जाते, तब तक स्वराज्य नहीं मिल सकता। वह मिल सकता है केवल सेवा, तपस्या और बलिदान से।"

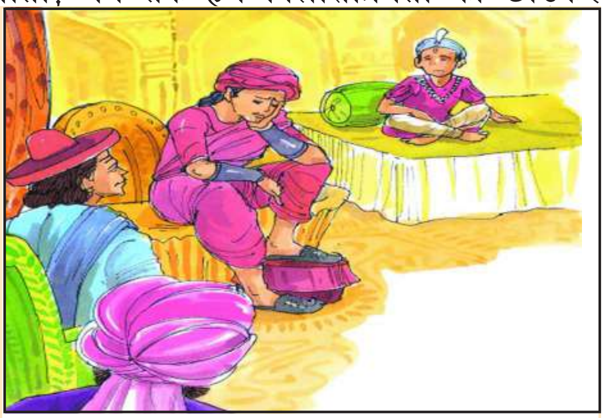

जूही : लेकिन महारानी, उन्होंने यह भी तो कहा था कि स्वराज्य प्राप्ति से बढ़कर है स्वराज्य की स्थापना के लिए भूमि

तैयार करना, स्वराज्य की नींव का पत्थर बनना। सफलता और असफलता दैव के हाथ में है। लेकिन नींव के पत्थर बनने से हमें कौन रोक सकता है? वह हमारा अधिकार है।

लक्ष्मीबाई: (मुस्कुराकर) शाबाश मेरी कर्नल, तुम लोगों से मुझे यही आशा है। जिस स्वराज्य की नींव तुम जैसी नारियाँ बनने जा रही हैं, वह निश्चय ही महान होगा। मुझे इस बात की चिंता नहीं है कि वह मेरे जीवनकाल में आता है या नहीं आता, लेकिन मुझे इस बात का दुख अवश्य है कि हमारे पास तात्या जैसे सेनापति हैं, फिर भी हमारी सेना में अनुशासन नहीं है। हमारे पास ग्वालियर का क़िला है, फिर भी हम कुछ नहीं कर पा रहे हैं। क्यों? जानती हो क्यों?

जूही : जानती हूँ महारानी, हम विलासिता में डूब गये हैं।

(तभी मुस्कुराती हुई मुंदर वहाँ प्रवेश करती है।)

मुंदर : कौन कहता है कि हम विलासिता में डूब गये हैं? विलासिता में डूबे हैं राव साहब। बाँदा के नवाब, सेनापति तात्या।

1. लक्ष्मीबाई किससे बातें कर रही हैं?
2. उन्हें किस बात की चिंता सता रही है?

जूही : (सहसा) नहीं, मुंदर। सेनापति नहीं।

मुंदर : (मुस्कुराती है।) ओह, समझी! तुम तो उनका पक्ष लोगी ही।

जूही : (दृढ़ स्वर में) मैं उसका पक्ष नहीं लेती, लेकिन जो तथ्य है, उसको छिपाया नहीं जा सकता। सरदार तात्या राव साहब को अपने तन-मन का स्वामी मानते हैं।

मुंदर : और तुम उनको अपना स्वामी मानती हो।

जूही : हाँ, मैं उनको अपना स्वामी मानती हूँ और मानती रहूँगी। लेकिन उनसे भी अधिक मैं महारानी को अपना स्वामी मानती हूँ और महारानी से भी बढ़कर मैं अपने देश को अपना स्वामी मानती हूँ। देश के लिए मैं सरदार को भी ठुकरा सकती हूँ, ठुकरा चुकी हूँ।

मुंदर : (सकपकाकर) जूही तू तो नाराज़ हो गयी। मेरा यह मतलब नहीं था। मैं तो केवल इतना ही कहना चाहती थी कि जब तूने उन्हें अपना स्वामी मान लिया है तो तू उन्हें रोकती क्यों नहीं?

लक्ष्मीबाई: जूही ने उन्हें रोका है मुंदर। मैं जानती हूँ। जब राव साहब के कहने पर तात्या इसे नाचने के लिए बुलाने को आये थे तो इसने उनको बुरी तरह दुत्कार दिया था।

जूही : हाँ रानी, मैं स्वराज्य के लिए नाच सकती हूँ। बराबर नाचती रही हूँ, परंतु विलासिता में डूबने के लिए अपनी कला को किसी के गले की फाँसी नहीं बना सकती हूँ। जो मुझको ऐसा करने के लिए कहते हैं, उनको मैं ठोकर ही मार सकती हूँ।

लक्ष्मीबाई: (दीर्घ निश्वास लेकर) ठोकर ही तो नहीं मार सकती जूही। यही दर्द तो हमें कचोट रहा है। अगर ठोकर मार कर हम उनकी मदहोशी दूर कर सकते तो बात

ही क्या थी?

जूही : बाई साहब, मैं औरों की बात नहीं जानती। मुझे आज्ञा दीजिए, मैं ठोकर मारने को तैयार हूँ।

मुंदर : और मैं भी तैयार हूँ बाई साहब। चलो, हम सब चलकर उनकी नींद हराम कर दें।

लक्ष्मीबाई : नहीं मुंदर, नहीं। हम उनकी नींद हराम नहीं कर सकते। अब तो दुश्मन की ठोकरें ही उनको उस नींद से जगा सकती है।

जूही : दुश्मन की ठोकर? यह आप क्या कह रही हैं?

लक्ष्मीबाई : हाँ जूही, दोस्त की ठोकर अविश्वास की खाई को और भी चौड़ा कर देती हैं। क्या तुम नहीं जानती कि हम एक-दूसरे को किस दृष्टि से देखते हैं? क्या ऐसी स्थिति में मेरे कुछ कहने से शंकाओं की घटा और भी गहरा नहीं उठेगी?

मुंदर : बाई साहब ठीक कहती हैं। शंकाएँ अविश्वास पैदा करेंगी और उस अविश्वास से उत्पन्न निराशा को दूर करने के लिए पायल की झंकार और भी झनक उठेगी। श्रीखंड और लड्डुओं पर जान देने वाले ब्राह्मणों के आशीर्वाद का स्वर और भी तेज़ हो उठेगा। (सहसा कहीं दूर तोपों का स्वर उठता है।)

लक्ष्मीबाई : और जूही तू अगर तात्या को खोज सके तो तुरंत उन्हें यहाँ आने के लिए कह।

जूही : खोज क्यों नहीं सकती? आपकी आज्ञा होने पर मैं उन्हें पाताल से भी खींचकर ला सकती हूँ। (जाने को मुड़ती है कि रघुनाथराव तेज़ी से प्रवेश करते हैं।)

रघुनाथराव : महारानी, आपने सुना?

लक्ष्मीबाई : क्या रघुनाथ?

रघुनाथराव : महारानी, जनरल रोज की सेना ने मुरार में पेशवा की सेना को हरा दिया।

जूही : (काँपकर) क्या पेशवा की सेना हार गयी?

लक्ष्मीबाई : पेशवा की सेना हार गयी, यह अच्छा ही हुआ। अब पेशवा की आँखें खुलेंगी। रघुनाथ अपनी सेना को तैयार होने की आज्ञा दो। रोज ग्वालियर का क़िला नहीं ले सकेगा।

रघुनाथ : मैं जानता हूँ, वह कभी नहीं ले सकेगा। मैं अभी सेना को कूच के लिए तैयार करता हूँ। केवल आपको सूचना देने के लिए आया था। (जाता है।)

लक्ष्मीबाई : और जूही तुम भी जाओ। (सहसा बाहर देखकर) लेकिन ठहरो, शायद सेनापति तात्या इधर ही आ रहे हैं।

जूही : (बाहर देखकर) जी हाँ, ये तो सरदार तात्या ही हैं। (सरदार तात्या का प्रवेश)

लक्ष्मीबाई : कहिए सरदार तात्या, आज आप इधर कैसे भूल पड़े?

तात्या : बाई साहब, मैं किसी के लिए सरदार हो सकता हूँ, पर आपके लिए तो सेवक ही हूँ।

लक्ष्मीबाई : (व्यंग्य से) इतने बड़े सेनापति को इस प्रकार एक नारी के सामने झुकते लज्जा नहीं आती? खैर, छोड़ो इस बात को। यह तुम्हारी विनम्रता है। लेकिन यह तोपों की आवाज़ कैसी आ रही है? कौनसा उत्सव मनाया जा रहा है? शायद चाटुकारों में जागीर बाँटना अभी खत्म नहीं हुआ है?

तात्या : बाई साहब, आपको हमें लज्जित करने का पूरा अधिकार है। हम इसी योग्य हैं, लेकिन जो कुछ हो रहा है, वह आप जानती ही हैं।

लक्ष्मीबाई : शायद ब्रह्मभोज के उपलक्ष्य में ये तोपें चल रही हैं। श्रीखंड और लड्डुओं के लिए घी शक्कर की कमी तो नहीं पड़ी।

जूही : सरकार इस बार इनको माफ़ कर दीजिए।

तात्या : (व्यग्र होकर) बाई साहब, आप यूँ कब तक फटकारती रहेंगी?

लक्ष्मीबाई : तो मैं भी तैयार हूँ। तात्या तुमसे मुझे बहुत आशाएँ थीं। तुम्हारे रहते यह सब क्या हो गया?

जूही : सरकार, ये स्वामिभक्त हैं।

लक्ष्मीबाई : लेकिन आज हमें देशभक्तों की आवश्यकता है। खैर, अब भी कुछ नहीं बिगड़ा। अब भी बहुत कुछ किया जा सकता है।

तात्या : इसीलिए तो आया हूँ बाई साहब। आप जो कहेंगी वही करूँगा। जो योजना बनाएँ, उसी पर चलूँगा।

लक्ष्मीबाई : तो जाओ, तलवार संभाल लो। नूपुरों की झंकार के स्थान पर तोपों का गर्जन होने दो। भूल जाओ राग-रंग। याद रखो, हमें स्वराज्य लेना है। हमें रणभूमि में मौत से जूझना है।

तात्या : महारानी आपकी जय हो। मैं युद्ध के लिए तैयार होकर आया हूँ।

लक्ष्मीबाई : जानती हूँ। लेकिन सेनापति, इस बार यह याद रखना कि यदि दुर्भाग्य से विजय न मिल सकी तो तुम्हें सेना और सामग्री दोनों दुश्मन के घेरे से निकालकर ले जाना है।

तात्या : ऐसा ही होगा।

लक्ष्मीबाई : तात्या, मेरा मन कहता है कि यह मेरे जीवन का अंतिम युद्ध है। जीत हो या हार, मुझे किसी बात की चिंता नहीं। चिंता केवल इस बात की है, हमारी वीरता कलंकित न होने पाये।

तात्या : बाई साहब, वीरता आपको पाकर धन्य है। आपके रहते कलंक हमारी छाया को भी नहीं छू सकेगा। आज्ञा दीजिए, प्रणाम।

लक्ष्मीबाई : प्रणाम तात्या, मैं सीधी युद्धभूमि में जा रही हूँ, देर न लगाना। (तात्या चला जाता है।)

मुंदर : सरकार आज मैं बराबर आपके साथ रहूँगी।

जूही : और मैं तोपखाना सँभालूँगी।

लक्ष्मीबाई : और हम सब मिलकर या तो स्वराज्य प्राप्त करके रहेंगे या स्वराज्य की नींव का पत्थर बनेंगे।

(परदा गिरता है।)

3. लक्ष्मीबाई तात्या से क्यों नाराज़ थीं? तात्या ने उन्हें क्या आश्वासन दिया?
4. लक्ष्मीबाई साहसी नारी थीं? उदाहरण के द्वारा सिद्ध कीजिए।

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(अ) प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. मार्ग में हिमालय के अड़ने, डरावनी लहरों के थपेड़े मारने, नाविकों के सो जाने से क्या अभिप्राय है?
2. यह एकांकी सुनने के बाद उस समय की किन परिस्थितियों का पता चलता है?

(आ) पाठ पढ़िए। प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. तात्या कौन थे?
2. बाबा गंगादास ने रानी लक्ष्मीबाई से क्या कहा था?
3. रानी लक्ष्मीबाई ने क्या प्रतिज्ञा की थी?
4. जूही तात्या का पक्ष क्यों लेती है?

(इ) पाठ के आधार पर आशय स्पष्ट कीजिए।

1. स्वराज्य प्राप्ति से बढ़कर है स्वराज्य की स्थापना के लिए भूमि तैयार करना, स्वराज्य की नींव का पत्थर बनना।
2. शंकाएँ अविश्वास पैदा करेंगी और उस अविश्वास से उत्पन्न निराशा को दूर करने के लिए पायल की झंकार और भी झलक उठेगी।

(ई) गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

भारत का संविधान सभी महिलाओं को समानता का अधिकार (अनुच्छेद 14), राज्य द्वारा कोई भेदभाव नहीं करने (अनुच्छेद 15 (1)), अवसर की समानता (अनुच्छेद 16), और समान कार्य के लिए समान वेतन (अनुच्छेद 39 (घ)) का आश्वासन देता है। इसके अतिरिक्त यह महिलाओं और बच्चों के पक्ष में राज्य के द्वारा विशेष प्रावधान (अनुच्छेद 15 (3)) बनाने की अनुमति देता है। महिलाओं की गरिमा को ठेस पहुँचाने वाली अपमानजनक प्रथाओं का उन्मूलन (अनुच्छेद 51 (अ),(ई)) के भी अधिकार देता है। इन सबका पालन करना हमारा कर्तव्य है।

1. यहाँ किसके बारे में बताया गया है?
2. अनुच्छेद 15 (1) में क्या बताया गया है?
3. किस अनुच्छेद के अनुसार महिलाओं को समान कार्य के लिए समान वेतन की बात कही गयी है?

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

(अ) इन प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए।

1. एकांकी के आधार पर बताइए कि 'स्वराज्य की नींव' का क्या तात्पर्य है?
2. महारानी लक्ष्मीबाई का कौनसा कथन तुम्हें अच्छा लगा? क्यों?

(आ) वीरांगना लक्ष्मीबाई देशभक्ति की एक अद्‌भुत मिसाल थीं? स्पष्ट कीजिए।

(इ) 'स्वराज्य की नींव' एकांकी को अपने शब्दों में कहानी के रूप में लिखिए।

(ई) साहस, वीरता, आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता के महत्व पर दो-दो वाक्य लिखिए।

भाषा की बात

(अ) सूचना पढ़िए। वाक्य प्रयोग कीजिए।

1. नारी, मित्र, प्रेम (एक-एक शब्द का वाक्य प्रयोग कीजिए और उसके पर्याय शब्द लिखिए।)
2. असफलता, विश्वास (एक-एक शब्द का विलोम शब्द लिखिए। वाक्य प्रयोग कीजिए।)
3. शंका, क़िला, सूचना (एक-एक शब्द का वचन बदलिए और वाक्य प्रयोग कीजिए।)

(आ) सूचना पढ़िए। उसके अनुसार कीजिए।

1. स्वराज्य, निराशा (उपसर्ग पहचानिए।)
2. वीरता, ऐतिहासिक (प्रत्यय पहचानिए।)

(इ) उदाहरण देखिए। उसके अनुसार वाक्य बदलिए।

उदाहरण : राजू पुस्तक पढ़ता है। - राजू से पुस्तक पढ़ी जाती है।

1. लड़का भोजन करता है। 2. रानी ने आज्ञा दी। 3. लक्ष्मीबाई ने जूही से कहा।

(ई) रेखांकित शब्दों के स्थान पर नीचे दिये गये एक-एक शब्द का प्रयोग कर वाक्य बनाइए।

कक्षा में एक <u>लड़का</u> आया। सब <u>लड़के</u> कक्षा में पहुँच चुके थे। <u>लड़कों</u> में अनुशासन बना था।

1. लड़की 2. छात्र 3. छात्रा 4. बालक 5. बालिका

परियोजना कार्य

देशभक्ति से संबंधित किसी एकांकी का संकलन कर कक्षा में प्रदर्शन कीजिए।

पठन हेतु

माँ मुझे आने दे!

स्त्री और पुरुष दोनों समाज रूपी शक्ति के दो रूप हैं। समाज के निर्माण में दोनों का समान महत्व है। वेदों में स्त्री की तुलना देवी से की गयी है। कहते हैं जहाँ नारी का वास होता है वहाँ देवता बसते हैं। लेकिन सामाजिक विषमताओं के कारण आज भी भ्रूणहत्याएँ देखी जा रही हैं। ऐसी घटनाएँ सामाजिक, मानवीय अपराध है। ऐसे अपराध को समाप्त करना बेहद ज़रूरी है। इसी भाव को मुख्य विषय बनाते हुए कवयित्री मृदुल जोशी ने इस तरह लिखा है-

माँ चाहिए। बहन चाहिए।
पत्नी चाहिए।
फिर बेटी क्यों नहीं चाहिए?
"अनदेखी बिटियाँ करे पुकार।
मत करो यह अत्याचार।।"

माँ मुझे आने दे, डर मत आने दे।
फैलूँगी तेरे आँगन में हरियाली बनकर
लिपटूँगी तेरे आँचल में खुशबू बनकर
मेरी किलक और ठुमकते कदमों में
घर का सन्नाटा बिखर जाएगा
जो पसरा है पिता के दंभ
भाई की उद्दंडता के कारण सदियों से।
पोछ दूँगी अँधेरा, जो तेरे माथे की सिलवटों में सिमटा है
कभी-कभी झर जाता है ओस की बूँदों-सा, आँखों की कोरों से।
आने तो दे, धुल जाएगा सारा का सारा रुखीला अहसास
अकड़ीला मिज़ाज जो चिपका है घर की सारी की सारी दीवारों
बंद दरवाज़ों खिड़कियों में।
तेरी आँखों में तैरते ये समुंदर ये आसमान के अक्स
मैंने देख लिए हैं माँ।
माँ... जा सकती हूँ मैं दूर-पार, उस झिलमिलाती दुनिया में
ला सकती हूँ वहाँ से चमकीले टुकड़े तेरे सपनों के,
समुंदर की लहरों के थपेड़ों में ढूंढ़ सकती हूँ मैं
मोती और सीपी और नाविकों के किस्से।
कर सकती हूँ माँ, मैं सब-कुछ जो रोशनी-सा चमकीला
रंगों-सा चटकीला हो, पर आने तो दे, डर मत माँ...मुझे आने दे।

– मृदुल जोशी

माँ का हृदय बच्चे की पाठशाला है। - बीचर

9 दक्षिणी गंगा गोदावरी - *काका कालेलकर*

उन्मुखीकरण

कल-कल करतीं नदियाँ सारी,
छम-छम करतीं बूँदें प्यारी।
सर-सर करतीं हवा ये न्यारी,
जन-जन होवें यूँ बलिहारी।।

प्रश्न

1. यहाँ पर किसके बारे में बताया गया है?
2. दक्षिण भारत की कुछ नदियों के नाम बताइए।
3. गोदावरी नदी के बारे में आप क्या जानते हैं?

उद्देश्य

छात्रों को यात्रा-वृत्तांत साहित्यिक विधा का ज्ञान कराते हुए उनमें लेखन करने की प्रवृत्ति का विकास करना, यात्रा-वृत्तांत की भाषा शैली से परिचित कराना और इसके साथ-साथ लेखक काका कालेलकर का परिचय कराते हुए उनकी भाषा व रचना शैली का ज्ञान कराना इस पाठ का उद्‌देश्य है।

विधा विशेष

यात्रा-वृत्तांत यह गद्‌य की एक प्रमुख विधा है। यात्रा-वृत्तांत पाठ में लेखक किसी दर्शनीय स्थल से संबंधित अपनी यात्रा की अनुभूतियों को रोचक और ज्ञानवर्धक ढंग से प्रस्तुत करता है। प्रस्तुत पाठ 'दक्षिणी गंगा गोदावरी' भी श्री काका कालेलकर द्‌वारा रचित यात्रा-वृत्तांत पाठ है जो उनकी रचना 'सप्त सरिता' से लिया गया है। इसमें लेखक ने गोदावरी नदी के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन किया है।

लेखक परिचय

काका कालेलकर का पूरा नाम दत्तात्रेय बालकृष्ण कालेलकर है। उनका जन्म सन् 1885 में और मृत्यु सन् 1991 में हुई। इन्होंने आजीवन गांधीवादी विचारधारा का पालन किया। इन्होंने हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, वर्धा के माध्यम से हिंदी की खूब सेवा की। वे राज्यसभा के सदस्य भी रह चुके हैं।

छात्रों के लिए सूचनाएँ

1. विषय प्रवेश ध्यान से पढ़िए, पाठ्य विषय समझिए।
2. पाठ ध्यान से पढ़िए, जिस शब्द का अर्थ समझ में नहीं आता उसके नीचे रेखा खींचिए।
3. रेखांकित शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।
4. समझ में न आने वाले अंश हो तो छात्र समूहों में या अध्यापक से चर्चा कीजिए।

विषय प्रवेश : *गोदावरी नदी धीर-गंभीर माता और पूर्वजों की अधिष्ठात्री देवी मानी जाती है। इसके जल में अमोघ शक्ति है। इसके तट पर अनेक शूरवीरों, तत्व-ज्ञानियों, साधु-संतों, राजनीतिज्ञों और ईश्वर भक्तों ने जन्म लिया है। ऐसी पावन और पवित्र गोदावरी नदी के प्राकृतिक सौंदर्य का जो वर्णन काका कालेलकर के द्‌वारा हुआ है, चलिए इसके बारे में हम जानेंगे।*

चेन्नई से राजमहेंद्री जाते हुए बेजवाड़े से आगे सूर्योदय हुआ। बरसात के दिन थे, इसलिए पूछना ही क्या? जहाँ-तहाँ विविध छटा वाली हरियाली फैल रही थी।

पूर्व की तरफ़ एक नहर रेल की पटरी के किनारे-किनारे बह रही थी। पर किनारा ऊँचा होने के कारण पानी हमें कभी-कभी ही दिख पड़ता। सिर्फ़ तितली की तरह अपने-अपने पाल कतार में खड़ी हुई नौकाओं पर ही हमें नहर का अनुमान करना पड़ता था। बीच-बीच में छोटे-छोटे तालाब भी मिलते। इनमें रंग-बिरंगे बादलों वाला आसमान नहाने के लिए उतरता हुआ दिखाई पड़ता और इससे पानी की गहराई और भी अथाह हो जाती। कहीं-कहीं चंचल कमलों के बीच खामोश खड़े हुए बगुलों को देखकर सवेरे की ठंडी-ठंडी हवा का अभिनंदन करने को मन मचल पड़ता। इस तरह कविता-प्रवाह में बहकर जाते हुए कोव्वूर स्टेशन आ गया। मन में यह उमंग भरी थी कि अब यहाँ से गोदावरी मैया के भी दर्शन होने लगेंगे।

पुल पर से गुज़रते समय दाएँ देखें या बाएँ, हम उसी उधेड़-बुन में थे। पुल आ गया और भागमती गोदावरी का अत्यंत विशाल पाट दिखाई पड़ा। मैंने गंगा, सिंधु, शोणभद्र, ऐरावती- जैसी महानदियों के विशाल प्रवाह भरकर देखे हैं। बेजवाडे में कृष्णा माता के दर्शन पर मैं गर्व करता रहूँगा। लेकिन, राजमहेंद्री के आगे गोदावरी की शान-शौकत कुछ निराली ही है।

इस जगह पर मैंने जितने भव्य काव्य का या प्रकृति के ठाट-बाट का अनुभव किया, उतना शायद ही कहीं दूसरी जगह किया हो। पश्चिम की तरफ़ नज़र फैलाई तो दूर-दूर तक पहाड़ियों की श्रेणियाँ नज़र आई। आसमान में बादल घिरे रहने से सूरज की धूप का कहीं नामोनिशान तक न था। बादलों का रंग साँवला होने के कारण गोदावरी के धूलि-धूसरित मटमैले जल की झाँई और भी गहरी हो रही थी। ऊपर की और नीचे की झाँई के कारण इस सारे दृश्य पर वैदिक प्रभाव की शीतल और स्निग्ध सुंदरता छाई हुई थी। और पहाड़ी पर कुछ उतरे हुए धौले-धौले बादल तो बिल्कुल ऋषि-मुनियों जैसे लगते थे। इस सारे दृश्य का वर्णन कैसे किया जा सकता है? यह इतना सारा पानी कहाँ से आता होगा?

1. सूर्योदय के समय प्रकृति का वातावरण कैसा दिखायी देता है?
2. लेखक ने ऐसा क्यों कहा होगा कि राजमहेंद्री के आगे गोदावरी की शान शौकत निराली है?

विपत्तियों में से विजय-सहित पार हुआ राष्ट्र जिस तरह वैभव की नयी-नयी छटाएँ दिखलाता है और चारों तरफ़ अपनी समृद्धि फैलाता जाता है, उसी तरह गोदावरी का अखंड प्रवाह पहाड़ों में से निकल कर अपने गौरव को साथ में लिए आता हुआ दिखाई पड़ता है। छोटे-बड़े जहाज़ तो नदी के बच्चे हैं, जो माता के स्वभाव से परिचित होने के कारण उसकी गोद में मनमाना नाचें, खेलें, उछलें और कूदें, तो उन्हें इससे रोकने वाला कौन है? लेकिन बच्चों की उपमा तो इन नावों की अपेक्षा प्रवाह में जहाँ-तहाँ पड़ते हुए भँवरों को देनी चाहिए। कुछ देर दिख पड़े, थोड़ी ही देर में भयानक तूफ़ान का स्वाँग रचा और एक ही पल में खिल-खिलाकर हँस पड़े। ये भँवर न जाने कहाँ से आते और कहाँ चले जाते हैं।

ऐसे लंबे-चौड़े भारी पाट के दरमियान अगर टापू न हों तो इनकी कमी ही रह जाए। गोदावरी के टापू प्रसिद्ध हैं। कई तो पुराने धर्म की तरह जहाँ के तहाँ स्थिर-रूप होकर जमे हुए हैं और कई एक कवि की प्रतिभा की तरह क्षण-क्षण भर में स्थल की नवीनता उत्पन्न कर लेते और नया-नया रूप ग्रहण करते हैं। इन टापुओं में अनासक्त बगुलों को छोड़ और कौन रहने जाए? और जब बगुले चलते हैं तो वे उन पर अपने पैरों के गहरे निशान छोड़े बगैर और जगह कैसे जाएँ? अपने धवल चरित का अनुकरण करने वालों के लिए चरणचिह्नों द्वारा अगर वे दिशा सूचित न करें, तो बगुले ही कैसे?

3. लेखक ने भँवरों को बच्चों की उपमा क्यों दी होगी?
4. गोदावरी नदी के टापुओं की क्या विशेषताएँ हो सकती हैं?

नदी का किनारा यानी मनुष्य की कृतज्ञता का अखंड उत्सव! किनारे पर के सफेद महल और मंदिर और उनके ऊँचे-ऊँचे शिखर ही एक अखंड उपासना है। परंतु इतने ही से काव्य संपूर्ण नहीं हो जाता। इसलिए भक्त लोग नदी की लहरों पर से मंदिरों के घंटा-नाद की लहरों को इस पार से उस पार तक पहुँचाते रहते हैं। संस्कृति के उपासक भारतवासी इस जगह गंगाजल के आधे कलश गोदावरी में उँड़ेलते और फिर गोदावरी के जल से कलश भर कर ले जाते हैं। कितनी भव्य विधि है। कितना पवित्र काव्य है। यह भक्ति-रस तो हृदय में भरा हुआ है और मंदिरों के घंटा-नाद और इस हृदय-नाद को तो पूर्व स्मृति ने ही सुनाया। कानों को तो सिर्फ़ इंजन की आवाज़ सुनाई पड़ रही थी। अतः हम आधुनिक संस्कृति के इस प्रतिनिधि से नफ़रत करना छोड़ दें तो रेल के पहिये का ताल कुछ कम आकर्षक नहीं लगता और पुल पर तो उसका विजय-नाद संक्रामक, दूर-दूर तक फैल जाने वाला होकर ही रहता है।

पुल पर गाड़ी अच्छी तरह चलने के बाद मुझे ख्याल आया कि पूरब की तरफ़ देखना तो छूट ही गया। हमने इस तरफ़ घूम कर देखा तो निराली ही रौनक़ नज़र आई। पश्चिम की तरफ़ गोदावरी जितनी चौड़ी थी, उससे भी ज़्यादा पूरब में थी। उसे कई मार्गों से और उत्तेजित होकर समुद्र में मिलना था। सरित्पति से सरिता मिलने जाए, तब उसे संभ्रम, घबराहट और उत्तेजना तो होगी ही पर, गोदावरी तो धीर-गंभीर माता ही ठहरी। उसका संभ्रम भी उदात्त रूप में ही प्रकट हो सकता है। इस ओर के टापू कुछ और किस्म के थे। उनमें वन-श्री की शोभा पूरी-पूरी खिल रही थी। ब्राह्मणों या किसानों के झोंपड़े इस ओर से दिखाई नहीं पड़ते थे। अगर बहते हुए पानी के हमले के सामने टक्कर लेते इन दो टापुओं में किसी ने ऊँचे महल बनाए होते तो वे दूर से ही दिख पड़ते।

कुदरत ने तो सिर्फ़ ऊँचे-ऊँचे पेड़ों की विजय पताकाएँ खड़ी कर रखी थी और बाईं ओर राजमहेंद्री और धवलेश्वर का सुखी जन-समाज आनंद मना रहा था। ऐसे दुर्लभ दृश्य के दर्शन से तृप्त होने से पहले ही दाहिनी ओर नदी के किनारे से सटकर मस्ती और अल्हड़पन के साथ बहते हुए काँस की सफ़ेद कलगियों का स्थावर प्रवाह दूर-दूर तक जाता हुआ नज़र आ रहा था। नदी के पानी में उन्माद था, उसमें लहरें न थीं। कलगियों के इस प्रवाह ने हवा के साथ-साथ जो षड्यंत्र रचा था, उससे वह मनमानी हिलोरें उछाल सकता था। कम हो भी क्यों? लेकिन, काँस की कलगियों का प्रवाह तो बहता ही जा रहा था। गोदावरी के प्रवाह के साथ होड़ करते हुए भी उसे संकोच न होता था। और वह संकोच क्यों करें? गोदावरी माता के विशाल तट पर इसने क्या कम स्तन्य-पान किया था?

माता गोदावरी! राम-लक्ष्मण और सीता से लेकर बूढ़े जटायु तक सबको तूने ही स्तन्य-पान कराया है। तेरे तट पर शूरवीर भी पैदा हुए हैं और बड़े-बड़े तत्व-ज्ञानी भी, साधू-संत भी जन्मे, धुरंधर राजनीतिज्ञ भी और ईश्वर-भक्त भी। चारों वर्णों की तू माता है। मेरे पूर्वजों की तू अधिष्ठात्री देवी है। नयी-नयी आशाओं को लेकर मैं तेरे दर्शन के लिए आया हूँ। तेरे जल में अमोघ शक्ति है, तेरे पानी की एक बूँद का सेवन भी व्यर्थ नहीं जाता।

5. लेखक ने रेल के पहिये की आवाज़ को 'संक्रामक' कहा है।'संक्रामक' से लेखक का क्या आशय होगा?
6. गोदावरी को धीर-गंभीर माता की संज्ञा क्यों दी गयी होगी?

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(अ) प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. लेखक को गोदावरी का जल कैसा लगा होगा?
2. लेखक की जगह तुम होते, तो गोदावरी नदी का वर्णन कैसे करते? बताइए।

(आ) पाठ के आधार पर निम्न प्रश्नों के उत्तर हाँ या नहीं में दीजिए।

1. लेखक को कोव्वूरु स्टेशन पार करने के बाद गोदावरी मैया के दर्शन हुए। (   )
2. गोदावरी की शान-शौकत कुछ निराली है। (   )
3. उपासक गंगा जल के आधे कलश को गोदावरी में उँडेलते हैं। (   )
4. राजमहेंद्री और धवलेश्वर का सुखी जन-समाज दुखित था। (   )

(इ) गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

आचार्य विनोबा भावे का जन्म महाराष्ट्र में हुआ। वे प्रातःकाल बहुत जल्दी उठते थे। प्रतिदिन नियमित रूप से चरखा चलाते थे। बातें कम और काम अधिक करते थे। भूदान आंदोलन विनोबाजी का प्रमुख कार्य था। विनोबाजी ने युवावस्था में ही जनता की सेवा का व्रत लिया था। उनके मन पर गाँधीजी के विचारों का प्रभाव पड़ा। बनारस की सभा में गाँधीजी ने कहा था, ''जब तक देश परतंत्र है, तब तक देश ग़रीब है, ठाट-बाट से रहना पाप है। जब तक देश की जनता दुखी है, आराम से रहना अपराध है।''

1. विनोबाजी के जीवन का प्रमुख कार्य क्या था?

2. बनारस की सभा में गाँधीजी ने क्या कहा?

3. रेखांकित शब्द का वचन बदलकर वाक्य प्रयोग कीजिए।

4. इस गद्यांश के लिए उचित शीर्षक दीजिए।

(ई) इस अवतरण के मुख्य शब्द पहचानकर लिखिए।

पुल पर से गुज़रते समय दाएँ देखें या बाएँ, हम उसी उधेड़-बुन में थे। पुल आ गया और भागमती गोदावरी का अत्यंत विशाल पाट दिखायी पड़ा। बेजवाड़े में कृष्णा माता के दर्शन पर मैं गर्व करता रहूँगा। गोदावरी की शान शौकत कुछ निराली है।

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

(अ) इन प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए।

1. किसी यात्रा का वर्णन करते हुए अपने अनुभवों को प्रस्तुत कीजिए।

2. आंध्र को अन्नपूर्णा एवं भारत का धान्यागार कहलाने में नदियों का योगदान व्यक्त कीजिए।

(आ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर आठ-दस वाक्यों में लिखिए।

1. चेन्नई से राजमहेंद्री जाते समय लेखक की भावनाएँ कैसी थीं?

2. लेखक ने गोदावरी को माता की संज्ञा क्यों दी होगी?

(इ) अपने द्वारा की गयी किसी यात्रा का वर्णन करते हुए मित्र के नाम पत्र लिखिए।

(ई) इस यात्रा-वृत्तांत में लेखक का कौनसा अनुभव आपको अच्छा लगा? क्यों?

भाषा की बात

(अ) सूचना पढ़िए। वाक्य प्रयोग कीजिए।

1. बरसात, सरिता, पहाड़ (एक-एक शब्द का वाक्य प्रयोग कीजिए। पर्याय शब्द लिखिए।)

2. विजय, प्रसिद्ध, दुर्लभ (एक-एक शब्द का विलोम शब्द लिखिए। वाक्य प्रयोग कीजिए।)

3. नहर, तितली, कविता, लहर (वचन बदलिए। वाक्य प्रयोग कीजिए।)

(आ) सूचना पढ़िए। उसके अनुसार कीजिए।

1. सूर्योदय, उन्माद, पवित्र, अत्यंत (संधि विच्छेद कीजिए।)

2. साधु-संत, चरणचिह्न, गंगाजल (समास बताइए।)

(इ) इन्हें समझिए।

1. नदी <u>के</u> पानी <u>में</u> उन्माद था, <u>उसमें</u> लहरें न थीं।

2. गोदावरी <u>के</u> प्रवाह <u>के साथ</u> होड़ करते हुए भी <u>उसे</u> संकोच न होता था।

(ई) नीचे दिये गये क्रिया शब्द समझिए और अकर्मक व सकर्मक क्रियाएँ पहचानिए।

सोना, पढ़ना, पीना, हँसना, कहना, उठना, दौड़ना, खाना, चलना, लिखना

परियोजना कार्य

यात्रा-वृत्तांत विधा की जानकारी प्राप्त कीजिए। उसकी सूची बनाकर कक्षा में प्रदर्शन कीजिए।

उपवाचक

अपने स्कूल को एक उपहार

- ऋतु भूषण

अपने पुराने स्कूल में वह एक मेधावी छात्र रहा था। पिछले पाँच वर्ष से वह हर वर्ष, कक्षा में सबसे आगे था। उसे कहानियों की किताबें पढ़ने का शौक़ था। अतः उसकी अंग्रेज़ी और हिंदी बहुत अच्छी थी। उसे सामान्य ज्ञान की पुस्तकें पढ़ना भी बहुत पसंद था और इससे उसका विज्ञान और इतिहास का ज्ञान भी विकसित हो गया। गणित का तो वह जादूगर था ही। अध्यापक के बोर्ड पर पूरा प्रश्न लिखने से पूर्व ही वह उसका उत्तर बताने के लिए अधीर हो हाथ उठा देता।

पुराने स्कूल में उसके बहुत सारे मित्र थे और सभी अध्यापक भी उसे पसंद किया करते थे। वह सब से खुशी-खुशी मिलता और मुस्कुराकर 'हैलो' कहता। जब भी कोई कठिनाई में होता तो राजू सबसे पहले उसकी मदद के लिए पहुँच जाता। उसके पुराने स्कूल में कभी किसी ने उसकी कमज़ोरी की ओर भी ध्यान नहीं दिया-उसकी टांगें बहुत पतली और दुर्बल थीं। उसके घुटनों में शक्ति नहीं थी और अधिक समय तक वे उसके शरीर का भार बर्दाश्त नहीं कर पाती थीं। अतः वह ज़्यादा देर तक खड़ा नहीं रह पाता था इसीलिए उसे खेलने की मनाही थी। जब भी उनके स्कूल में मैच होता, राजू अपने साथियों को खेलते हुए देखता और ज़ोर-शोर से उनका उत्साह बढ़ाता । जब उसके मित्र मैच हारने लगते तो राजू के प्रेरणादायक शब्दों से उनमें आशा का संचार होता और वे नयी स्फ़ूर्ति से खेलने लगते।

सारी रात राजू अपने पुराने स्कूल के विषय में सोचता रहा और उसने सच्चे मन से प्रार्थना की कि उसका नया स्कूल भी उसके पुराने स्कूल जितना ही अच्छा हो। वैसे राजू यह बात भली-भाँति जानता था कि यदि स्वर्ग में भी स्कूल हो तो वह भी उसके पुराने स्कूल से ज़्यादा अच्छे तो नहीं हो सकता। उसके स्कूल छोड़ते समय सभी मित्र कितने रो रहे थे? उसके संगी-साथी,अध्यापकगण और यहाँ तक कि प्रधानाचार्य ने भी उसके पिता जी से उसे वहीं छोड़ जाने का अनुरोध किया था। लेकिन उनकी किसी बात पर ध्यान नहीं दिया जा सका। उसके पिता जी का तबादला हो गया था और अपने इकलौते बेटे को वहीं पर छोड़ जाने की बात वे सोच भी नहीं सकते थे।

अगले दिन प्रातः राजू जल्दी ही उठ गया और फटाफट उसने अपनी वरदी भी पहन ली। आइने में अपने को देखकर सोचने लगा कि वरदी तो अच्छी लग रही है। हो सकता है कि स्कूल भी अच्छा

ही हो। लेकिन फिर भी उससे नाश्ता नहीं किया जा सका। माता-पिता समझ गये और उन्होंने ज़बरदस्ती नहीं की। पिता जी ने अपनी गाड़ी में स्कूल के फाटक तक छोड़ दिया और अपने बेटे को मुस्कुराकर विदा किया।

राजू धीरे-धीरे चलने लगा। क्योंकि वह तेज़ नहीं चल सकता था। उसकी मधुर मुस्कान को लोग घूरते रहे और कुछ ने तो उसकी टांगों की ओर संकेत करके हँसते हुए उसका मज़ाक भी उड़ाया।

कुछ क्षणों में ही पूरा मैदान और बरामदे कौतूहल से देखने और उसकी ओर इशारा करके हँसने वालों से भर गये। स्कूल के अध्यापक भी पास से ऐसे गुज़रे जैसे कुछ हो ही नहीं रहा है।

जब पहला पीरियड आरंभ हुआ तो अध्यापक ने राजू को कक्षा में सबसे पीछे बिठा दिया। जब राजू से उसका परिचय पूछा गया तो उसने बताया कि वह एक गाँव के स्कूल से आया है। इस पर छात्रों को हँसी आयी। मधुर स्वभाव वाले राजू ने इसके पहले गुस्से को कभी भी महसूस नहीं किया था। वह स्वयं को यही समझाता रहा कि अभी धैर्य रखने की ज़रूरत है, जल्दी ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। लेकिन पूरे दिन हर पीरियड में यही व्यवहार दुहराया जाता रहा।

राजू तो किसी अलग ही मिट्टी का बना हुआ था। उसने यह प्रमाणित करने का निश्चय किया था कि गाँवों के स्कूल शहरों के बराबर ही अच्छे होते हैं। उस शाम राजू ने अपने माता-पिता को कुछ नहीं बताया। उनके जिज्ञासापूर्ण प्रश्नों पर मुस्कुराकर रह गया क्योंकि वह झूठ भी नहीं बोलना चाहता था।

अगला दिन, उससे और अगला, और फिर महीने का हर दिन उसके लिए ऐसा ही रहा। उसकी कक्षा में उसके हाथ उठाने पर भी उसे प्रश्नों का उत्तर नहीं देने दिया गया। उसका कोई मित्र भी नहीं बन पाया था। आधी छुट्टी में जब बाक़ी सभी लड़के खेलने जाते तो वह कक्षा में ही बैठा रहता। अब तक पूरा स्कूल जान गया था कि राजू एक 'गंवार' लड़का है और उसे अपने गाँव के स्कूल का बड़ा 'घमंड' है।

आख़िरकार राजू ने इस स्थिति से निबटने के लिए बड़ी चतुराई से एक योजना बनायी। कक्षा के अध्यापकों द्वारा प्रश्न पूछे जाने पर उसने हाथ उठाना ही बंद कर दिया। परिणामस्वरूप बहुत शीघ्र ही अध्यापकों और छात्रों ने उस पर ध्यान देना बंद कर दिया। राजू यह जानता था कि एक महीने के बाद उसकी वार्षिक परीक्षा होने वाली है। इसलिए उसने घर पर अधिक परिश्रम किया- आख़िर उसे नये स्कूल के समक्ष प्रमाणित करना था कि उसका पुराना गाँव का स्कूल कोई कम नहीं था।

सबने मान लिया था कि राजू को तो फेल होना ही है। जैसे-जैसे समय पास आता गया, सभी लड़के पढ़ने में व्यस्त होते गये पर राजू को किताबें लिए देखकर उस पर हँसने और मज़ाक उड़ाने का समय फिर भी निकाल ही लेते। राजू अब बहुत धैर्यवान हो गया था और चुपचाप मन में मुस्कुराता हुआ अपनी पढ़ाई करता रहा। एक सप्ताह में ही वार्षिक परीक्षा समाप्त हो गयी। राजू दो सप्ताह की छुट्टी के लिए गाँव वापस गया। उसके बाद ही परीक्षा परिणाम निकलना था।

परिणाम निकलने के पहले दिन राजू लौट आया और अगले दिन पूरे आत्मविश्वास से अपने पिता के साथ परीक्षा-फल देखने गया। एक बार फिर वह कक्षा में प्रथम आया था। उसके पिता जी खुश थे लेकिन राजू के हर्ष की तो सीमा ही नहीं थी। प्रथम आने पर वह इतना प्रसन्न कभी नहीं हुआ था, क्योंकि अब उसने अपने स्कूल को सुंदर और समुचित उपहार समर्पित किया है।

प्रश्न :

1. राजू को उसका पुराना स्कूल कैसा लगता था?
2. राजू के प्रति नये स्कूल के साथियों का व्यवहार कैसा था?
3. राजू ने अपने स्कूल को किस तरह उपहार समर्पित किया?

इकाई - IV

10. नीति दोहे

-रहीम, बिहारी

उन्मुखीकरण

फलवाले जो तरु होते हैं धरती तक नम जाते।
बिन फलवाले वृक्ष व्यर्थ ही अपनी अकड़ दिखाते।
बनो वृक्ष फलदार, नम्रता से जीवन सरसाओ।
बुलबुल मीठा बोले, कोयल प्यार सभी से पाये।
पर कौवे की बोली उसको अपमानित करवाये।
बुलबुल कोयल बनो, न बोली कौवे की अपनाओ।

प्रश्न

1. कवि ने बिना फल वाले वृक्षों के विषय में क्या कहा है?
2. फलदार वृक्ष की विशेषता बताइए।
3. बुलबुल और कौए में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उद्देश्य

छात्रों को काव्य रचना में दोहा छंद से परिचित कराना, सृजन करने की प्रेरणा देना और उनमें नैतिक मूल्यों का विकास करना इस पाठ का मुख्य उद्देश्य है।

विधा विशेष

दोहे बहुत प्रभावशाली होते हैं। ये मात्रिक छंद हैं। दोहे के पहले और तीसरे चरण में 13-13 मात्राएँ तथा दूसरे और चौथे चरण में 11-11 मात्राएँ होती हैं। यहाँ दिये गये दोहे नीतिपरक व उपदेशात्मक हैं।

छात्रों के लिए सूचनाएँ

1. विषय प्रवेश ध्यान से पढ़िए, पाठ्य विषय समझिए।
2. पाठ ध्यान से पढ़िए, जिस शब्द का अर्थ समझ में नहीं आता उसके नीचे रेखा खींचिए।
3. रेखांकित शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।
4. समझ में न आने वाले अंश हो तो छात्र समूहों में या अध्यापक से चर्चा कीजिए।

विषय प्रवेश : *नैतिक गुणों के विकास द्वारा ही हम अच्छे-बुरे, सही-ग़लत में भेद कर सकते हैं।*

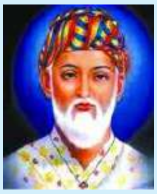

कवि - रहीम, जीवनकाल - 1556 - 1626
प्रसिद्ध रचनाएँ : *रहीम सतसई, बरवै नायिका भेद, श्रृंगार सोरठ*
विशेष : संस्कृत, अरबी, फ़ारसी के विद्वान थे।
अकबर के मित्र, प्रधान सेनापति व मंत्री थे।

कहि रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीत।
बिपति कसौटी जे कसे, तेई साँचे मीत।।

रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी गये न ऊबरै, मोती मानुष चून।।

1. रहीम के अनुसार सच्चे मित्र की पहचान कब होती है?
2. 'साँचे' शब्द का क्या अर्थ है?
3. पानी गये न ऊबरै, मोती मानुष चून - पंक्ति का भाव बताइए।

कवि - बिहारी, जीवनकाल - 1595 - 1663 , प्रसिद्ध रचना - *बिहारी सतसई*
विशेष - इनके दोहे नीतिपरक होते हैं। इनके दोहों के लिए 'गागर में सागर' भर देने वाली बात कही जाती है।

कनक-कनक तैं सौ गुनी, मादकता अधिकाइ।
उहि खाए बौराइ जग, इहिं पाए बौराइ।।

नर की अरु नल नीर की, गति एकै कर जोइ।
जेतौ नीचौ ह्वै चलै, तेतौ ऊँचौ होइ।।

4. किसके मिलने पर मनुष्य पागल हो जाता है?
5. बिहारी ने नर की तुलना किससे की है?
6. बिहारी के अनुसार व्यक्ति को कैसा होना चाहिए?

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(अ) प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. नीति वचनों का हमारे जीवन पर क्या प्रभाव होता है?
2. वस्तु विनियोग की दृष्टि से एक के स्थान पर उससे अधिक वस्तुएँ खरीदना ठीक नहीं है? क्यों?

(आ) पाठ पढ़िए। अभ्यास कार्य कीजिए।

1. पाठ से 'ध्वनि साम्य' वाले शब्द चुनकर लिखिए। जैसे : रीत, मीत
2. रहीम के दोहे में 'पानी' शब्द का प्रयोग कितनी बार हुआ है। उसके अलग-अलग अर्थ क्या हैं?

(इ) भाव स्पष्ट कीजिए।

1. रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
   पानी गये न ऊबरै, मोती मानुष चून।।
2. कनक-कनक तैं सौ गुनी, मादकता अधिकाइ।
   उहि खाए बौराइ जग, इहिं पाए बौराइ।।

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

(अ) इन प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए।

1. रहीम ने जल के महत्व के बारे में क्या बताया है?
2. बिहारी ने सोने की तुलना धतूरे से क्यों की होगी?

(आ) किन्हीं दो दोहों का भाव अपने शब्दों में लिखिए।

(इ) पाठ में दिये गये दोहों के आधार पर कुछ सूक्तियाँ लिखिए।

(ई) पाठ में दिये गये दोहों में आपको कौनसा दोहा बहुत अच्छा लगा? क्यों?

भाषा की बात

(अ) अर्थ के अनुसार बेमेल शब्द पहचानिए।

1. नीर, पीर, जल, पानी - ....
2. मीत, रीत, मित्र, दोस्त - ....
3. जग, संसार, विश्व, मग -..........................

(आ)

1. यमक अलंकार समझिए। यमक का अर्थ 'दो' होता है। किसी शब्द की पुनरावृत्ति भिन्न-भिन्न अर्थों में होती है, तो उसे यमक अलंकार कहते हैं।	उदाहरण : कनक-कनक तैं सौ गुनी, मादकता अधिकाइ। उहि खाए बौराइ जग, इहिं पाए बौराइ।।
2. दोहा छंद समझिए। दोहा मात्रिक छंद है। इसके पहले चरण में तेरह मात्राएँ, दूसरे चरण में ग्यारह मात्राएँ होती हैं। तीसरे चरण में तेरह मात्राएँ और चौथे चरण में ग्यारह मात्राएँ होती हैं।	उदाहरण : I I I I S S S I S I I S S I I S I रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून। S S I S I S I S S S S I I S I पानी गये न ऊबरै, मोती मानुष चून।।

(इ) 1. यमक अलंकार का एक उदाहरण दीजिए।

2. दोहा छंद का एक उदाहरण दीजिए।

(ई) नीचे दिये गये शब्दों में प्रत्यय पहचानकर वाक्य प्रयोग कीजिए।

1. लौकिक 2. नैतिक 3. पौराणिक

परियोजना कार्य

इस पुस्तक में हर पृष्ठ पर एक-एक नीति वाक्य दिया गया है। उनमें से आपकी मनपसंद दस नीतियों की सूची बनाकर कक्षा में प्रदर्शन कीजिए।

परोपकार का प्रत्येक कार्य स्वर्ग की ओर एक क़दम है। - वीवर

11 जल ही जीवन है

– श्री प्रकाश

उन्मुखीकरण

प्रश्न

1. यह विज्ञापन किसके बारे में है?
2. यह विज्ञापन किस समाचार-पत्र का है?
3. इससे क्या संदेश मिलता है?

उद्देश्य

जल हमारे जीवन का एक प्रमुख आधार है। पानी का सही उपयोग करके आने वाली पीढ़ियों के लिए बचा कर रखना चाहिए। इस विषय को लेकर पानी का महत्व व उपयोग और पानी संबंधी जानकारी दी जा रही है।

विधा विशेष

'जल ही जीवन है' यह एक कहानी पाठ है। इस कहानी में वे सभी तत्व हैं जो एक आदर्श कहानी में होने चाहिए। यहाँ भविष्य में घटनेवाली काल्पनिक घटनाओं को आधार बनाकर जल के महत्व को और अधिक बढ़ा दिया है। यह सच है कि कहानी सदा बच्चों की प्यारी विधा रही है। इसी कारण जल का महत्व इस विधा में प्रस्तुत किया जा रहा है।

लेखक परिचय

श्री प्रकाश हिंदी के जाने-माने लेखक हैं। इन्होंने विज्ञान विषय संबंधी ढेर सारे निबंध लिखे हैं। इनके निबंध विचारोत्तेजक हैं। प्रस्तुत रचना "संचार माध्यमों के लिए विज्ञान" नामक पुस्तक से ली गयी है।

छात्रों के लिए सूचनाएँ

1. विषय प्रवेश ध्यान से पढ़िए, पाठ्य विषय समझिए।
2. पाठ ध्यान से पढ़िए, जिस शब्द का अर्थ समझ में नहीं आता उसके नीचे रेखा खींचिए।
3. रेखांकित शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।
4. समझ में न आने वाले अंश हो तो छात्र समूहों में या अध्यापक से चर्चा कीजिए।

विषय प्रवेश : *दुनिया की सभी भाषाओं में जल के अलग-अलग नाम हैं। किंतु सबकी प्यास एक है। जल के बिना जीवन की कल्पना करना असंभव है। जल में जीवन बसता है और जीवन में जल का महत्व। प्रस्तुत पाठ में इसी विषय को उजागर करने का प्रयास किया गया है।*

इक्कीसवीं सदी का अब अंत होने वाला था और बाईसवीं सदी की शुरुआत। पृथ्वी पर मानव ने काफ़ी प्रगति कर ली थी। जनसंख्या पर नियंत्रण कर लिया था। पर्यावरण की समस्या को लगभग हल कर लिया गया था। लोग सुख-चैन से रह रहे थे। अचानक एक दिन समाचार पत्र में एक ख़बर प्रकाशित हुई, जिसे पढ़कर लोग आश्चर्यचकित हो गए। इस ख़बर के अनुसार एक सर्वेक्षण में बताया गया कि पृथ्वी पर निरंतर पानी की कमी होती जा रही है।

वैज्ञानिक, भूवैज्ञानिक थे। वे अपने दोस्तों के साथ बगीचे में बैठे पानी की इस समस्या पर चर्चा कर रहे थे। कुछ देर बाद शाम ढल गयी और सभी लोग अपने - अपने घर चले गये। प्रो. दीपेश वहीं लान पर बैठे आकाश की ओर देखकर कुछ सोच रहे थे कि अचानक उनकी नज़र एक तारे पर पड़ी जो नाचता हुआ पृथ्वी की ओर आ रहा था। पृथ्वी पर उतरते - उतरते वह पुनः आकाश की ओर मुड़ गया।

ओह! यह तो कोई यान है। पर, पृथ्वी पर ऐसे यान का अभी आविष्कार ही नहीं हुआ है, फिर यह यान कहाँ से आया? इस प्रश्न का उत्तर कुछ समझ में आने पर प्रो. दीपेश के होश उड़ गए और दौड़े-दौड़े अपने कमरे में चले गये। उन्होंने अपने मित्र प्रो. विकास को फोन किया और अपने घर बुलाकर सारी बात बतायी।

प्रो. दीपेश की बातें सुनकर प्रो. विकास को ज़्यादा आश्चर्य नहीं हुआ, क्योंकि वे ब्रह्मांड के अन्य ग्रहों पर जीवन की खोज में लगे हुए थे। उन्हें विश्वास था कि इस अनंत ब्रह्मांड में हम अकेले नहीं हैं। किसी न किसी ग्रह पर जीवन ज़रूर है।

प्रो. विकास अगली शाम को प्रो. दीपेश के साथ उनके ही बाग़ में बैठकर प्रतीक्षा कर रहे थे कि शायद वह अंतरिक्ष यान दुबारा इस रास्ते से गुज़रें। उनका इंतजार करना व्यर्थ नहीं गया। दुबारा वह अंतरिक्ष यान उसी रास्ते से गुज़रा, लेकिन वह इस बार वापस अंतरिक्ष में नहीं गया। वह बाग़ में ही उतरा। प्रो. दीपेश और प्रो. विकास आश्चर्यचकित हो उस यान को देख रहे थे। दोनों सोचने लगे कि यह यान यहाँ क्यों उतरा? इस प्रकार पृथ्वी का चक्कर लगाने का क्या मतलब हो सकता है? क्या यह कोई जासूसी यान है, जो पृथ्वी पर जासूसी करने आया है, या पृथ्वी पर किसी हमले की तैयारी करने के लिए? क्या हम जैसे बुद्धिजीवियों का वे अपहरण करना चाहते हैं? ऐसे कई प्रश्न उनके दिमाग़ में बिजली की भाँति दौड़ रहे थे। तभी उस अंतरिक्ष यान का दरवाज़ा खुला और एक मानवाकृति बाहर आई जो हू-ब-हू पृथ्वी वासियों जैसी थी। लेकिन आकार में बड़ी थी।

प्रो. दीपेश और प्रो. विकास उस अंतरिक्षयात्री को देखकर आश्चर्यचकित हो गए कि अंतरिक्ष में अन्य ग्रहों पर भी हम पृथ्वीवासियों की ही भाँति लोग हैं। दोनों ने इसकी कल्पना तो दूसरे ही रुप में की थी। तभी एक आवाज़ गूँजी....

प्रश्न
1. सर्वेक्षण में क्या बताया गया?
2. प्रो. दीपेश के होश क्यों उड़ गये?
3. जासूसी यान से क्या तात्पर्य है?

"हैलो। हम लोग इस ग्रह से एक प्रकाशवर्ष दूर के एक ग्रह के वासी हैं। हम लोग यहाँ एक मिशन के तहत आए हैं।" आवाज़ को सुन प्रो. दीपेश और प्रो. विकास के आश्चर्य की सीमा नहीं रही, क्योंकि उसकी आवाज़ भी हमारी ही तरह थी।

 हम जल की क़ीमत तब तक नहीं पहचानते, जब तक कुआँ सूख न जाए। - थॉमस फुलर

"मिशन। कैसा मिशन? क्या तुम्हारे और साथी भी हैं?" दोनों ने एक साथ उस अंतरिक्षयात्री से पूछा।

"हाँ, मेरे कई साथी इस संपूर्ण नीले ग्रह पर फैले थे। अब हमारा मिशन पूरा हो चुका है इसलिए अब हम अपने ग्रह पर वापस जा रहे हैं?"

"लेकिन तुम्हारा मिशन क्या है? कहीं तुम पृथ्वी पर तबाही तो नहीं मचाना चाहते हो? कहीं तुम इस पर अधिकार करना तो नहीं चाहते? प्रो. विकास ने पूछा।

"नहीं। हम यहाँ तबाही मचाने या अधिकार करने नहीं आए हैं। हम तो आपकी उस विशाल जलराशि की कुछ मात्रा अपने ग्रह पर ले जाने के लिए आए थे।

प्रो. दीपेश और प्रो. विकास को यह समझते देर नहीं लगी कि पृथ्वी का जलस्तर एकाएक क्यों कम हो गया है।

"लेकिन क्यों ले जा रहे हो यहाँ से यह जल? तुम्हें मालूम है कि हम बिना जल के जीवित नहीं रह सकते?"

"मालूम है। इसलिए हम इसकी सिर्फ़ थोड़ी - सी मात्रा अपने ग्रह पर ले जा रहे हैं। हमारे ग्रह के जल में एक विशेष प्रकार के विषाणुओं के मिल जाने के कारण वह ज़हरीला हो गया है। उसके उपयोग से हमारे ग्रह पर महामारी फैल गई है, जिससे वहाँ के लोग मरने लगे हैं। हमने तो उन विषाणुओं को नष्ट कर दिया है, लेकिन जल में घुले ज़हर को अभी तक पहचान नहीं पाए हैं। जल को विषहीन बनाने में समय लगेगा। पानी के अभाव में हमारे लोग मर रहे थे। अपने अस्तित्व के लिए हमने निर्णय लिया कि हम जल्द-से-जल्द अन्य किसी ग्रह की खोज कर वहाँ का पानी अपने ग्रह पर ले जाएँगे। अपने ग्रह के लोगों का जीवन बचाएँगे। हमारी नज़र आपके नीले ग्रह पर पड़ी, जो हमसे अधिक नज़दीक था। हम यहाँ उतर गए। हम लोगों ने यहाँ पर विशाल जलभंडारों को देखा और निर्णय किया कि जब तक हमारे ग्रह पर पानी शुद्ध नहीं हो जाता, तब तक हम लोग यहीं से जल को अपने ग्रह पर ले जाएँगे। हम लोग लगभग एक सप्ताह से जल को विशेष यान की सहायता से ले जा रहे हैं। हम लोग अपना मिशन चुपचाप पूरा करना चाहते थे।"

वह बोला, "मैं वहाँ का राजा होने के नाते आपसे माफ़ी माँगता हूँ। हम लोगों ने बिना आपकी अनुमति के आपकी अमूल्य जलनिधि को चुराया और अपने ग्रह पर ले गये।"

अंतरिक्ष यात्री अपनी बातें समाप्त कर अपने यान में बैठकर अंतरिक्ष की ओर उड़ चले।

प्रो. दीपेश और प्रो. विकास टकटकी लगाए इस अंतरिक्ष यान के बारे में सोच रहे थे। कुछ क्षणों में वह अंतरिक्ष यान उनकी आँखों से ओझल हो गया।

अचानक प्रो. विकास की नज़र एक वस्तु पर पड़ी। उस पर लिखा था, 'हमें आशा है कि आप लोगों ने हम अंतरिक्ष जलचोरों को माफ़ कर दिया होगा। आपसे प्रार्थना है कि आप अपने जलाशयों को साफ़ और सुरक्षित रखें ताकि आपको भी हमारी तरह जलचोर न बनना पड़ें।"

आप ही का अंतरिक्ष जलचोर मित्र ।

('संचार माध्यमों के लिए विज्ञान')

4. मानवाकृति अंतरिक्षयात्री कहाँ से आये थे?
5. वे पृथ्वी पर क्यों आये थे?
6. उनकी प्रार्थना क्या थी?

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(अ) प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. हमारे जीवन में जल का क्या महत्व है?
2. धरती पर हर हिस्से में जल है, किंतु स्वच्छ जल की मात्रा बहुत कम है। ऐसी स्थिति में जल का सदुपयोग कैसे करेंगे?

(आ) पाठ पढ़िए। अभ्यास कार्य कीजिए।

1. हमारे घर पहुँचने वाले जल का उपयोग हम किसके लिए कर रहे हैं?
2. जल की समस्या भविष्य में क्या आपदाएँ ला सकती हैं?
3. जल की समस्या का समाधान क्या है?

(इ) निम्नलिखित पंक्तियों की व्याख्या कीजिए।

1. इस प्रकार पृथ्वी का चक्कर लगाने का क्या मतलब हो सकता है?
2. हम लोग यहाँ एक मिशन के तहत आए हैं।
3. आप अपने जलाशयों को साफ़ और सुरक्षित रखें ताकि आपको भी हमारी तरह जलचोर न बनना पड़ें।

(ई) विज्ञापन पढ़कर कोई चार प्रश्न बनाइए।

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय
भारत सरकार
राष्ट्रीय किशोर स्वास्थ्य कार्यक्रम

भारत सरकार का राष्ट्रीय किशोर कार्यक्रम वर्तमान चिकित्सालय आधारित संभाल से समुदाय आधारित स्वास्थ्य वर्धन एवं रोकथाम की ओर एक नई शुरुआत का संकेत है। जिसका उद्देश्य किशोर जहाँ हैं, वहाँ तक उनके पास पहुँचना यानी कि स्कूलों और समुदायों में।

यह कार्यक्रम छह प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में क्रियाशीलता पर लक्षित है : प्रजनन एवं यौन स्वास्थ्य, न्यूट्रीशन, मानसिक स्वास्थ्य, घरेलू एवं लिंग आधारित हिंसा सहित चोटें एवं हिंसा, नशीले पदार्थों का सेवन एवं असंक्रमणशील बीमारियाँ।

इस कार्यक्रम के अंतर्गत लगभग चौबीस करोड़ किशोरों तक पहुँच की जाएगी।

RKSK

वर्तमान में किशोर स्वास्थ्य पर निवेश करके हम भविष्य में श्रम शक्ति, अभिभावकों एवं नेताओं पर निवेश कर रहे होंगे और इस प्रकार पीढ़ी दर पीढ़ी चलने वाली घटिया स्वास्थ्य के कुचक्र को तोड़ देंगे।

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

(अ) इन प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए।

1. 'जल ही जीवन है।' शीर्षक से आपका क्या अभिप्राय है?
2. जल स्रोतों के रखरखाव के बारे में आप क्या सुझाव देना चाहेंगे?

(आ) आज दुनिया के सभी देशों में जल की समस्या बनी हुई है। इसके समाधान में हम सब की क्या ज़िम्मेदारी है?

(इ) "जल ही जीवन है।" इस विषय पर एक पोस्टर बनाइए।

(ई) आपके गाँव में जल संरक्षण कैसे किया जा रहा है? इसके बारे में बताते हुए कुछ सुझाव दीजिए।

भाषा की बात

(अ) सूचना पढ़िए। उसके अनुसार कीजिए।

1. 'जल' शब्द से कई शब्द बने हैं। जैसे : जलचर। इसी तरह के तीन उदाहरण दीजिए।
2. पाठ में आये विदेशज शब्द चुनकर लिखिए। जैसे : मिशन।

(आ) नीचे दिये गये वाक्य पढ़िए। कोष्ठक में दी गयी सूचना के अनुसार वाक्य बदलिए।

1. यह तो कोई यान है। (भूत काल में बदलिए।)
2. मेरे कई साथी इस संपूर्ण नीले ग्रह पर फैले थे। (भविष्य काल में बदलिए।)
3. पानी के अभाव में हमारे लोग मर रहे थे। (वर्तमान काल में बदलिए।)
4. हम लोग अपना मिशन चुपचाप पूरा करना चाहते थे। (भविष्य काल में बदलिए।)

(इ) नीचे दिया गया उदाहरण पढ़िए। उसके अनुसार एक वाक्य बनाइए।

उदाहरण : पृथ्वी पर मानव ने काफ़ी प्रगति कर ली थी।
पृथ्वी पर किसने काफ़ी प्रगति कर ली थी?

(ई) अर्थ के आधार पर वाक्य पहचानिए।

1. ओह! यह तो कोई यान है।
2. यह यान कहाँ से आया?
3. दोनों ने एक साथ उस अंतरिक्ष यात्री से पूछा।
4. यहाँ का जल शुद्ध होगा।
5. हमारे यहाँ जल होता तो हम पृथ्वी पर न आते।
6. हमें शुद्ध जल चाहिए।
7. आप भी कभी हमारे यहाँ आइए।
8. नदी-नालों में कचरा बहाना मना है।

परियोजना कार्य

'जल संरक्षण' पर पी.पी.टी. बनाकर कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।

पठन हेतु

क्या आपको पता है?

आधुनिक समाज में भाषा का विविध रूपों में प्रयोग होता है। उन्हीं में से एक प्रयोग आज तकनीकी की दुनिया में अत्यधिक महत्वपूर्ण है, जिसे हम पी.पी.टी. के नाम से जानते हैं। कंप्यूटर के द्वारा स्लाइड बनाकर इसे प्रस्तुत किया जाता है। विश्व का एक प्रमुख पॉवर पाइंट प्रेजेंटेशन पठन हेतु यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है।

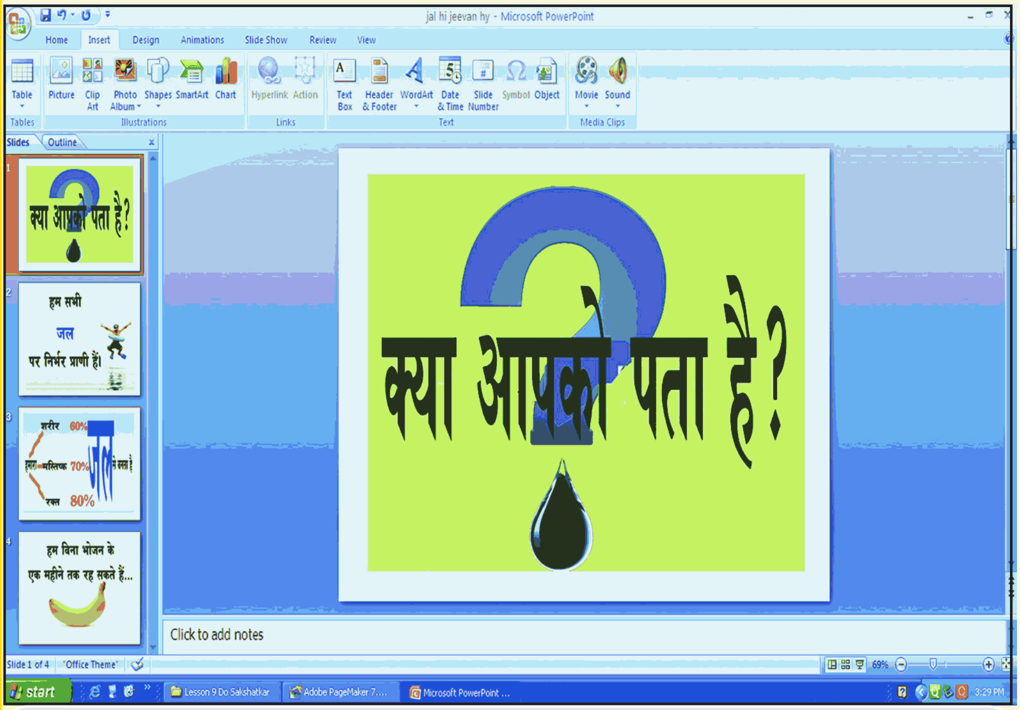

- स्वच्छ जल का उपयोग हम किसके लिए करते हैं?
- यदि जल संकट आता है तो परिस्थिति कैसी होगी?
- जिस तरह जनसंख्या बढ़ रही है उस हिसाब से जल का उपयोग हमें किस तरह करना चाहिए?
- जल संरक्षण के लिए हम क्या-क्या कर सकते हैं?

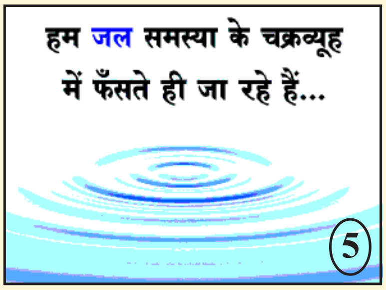

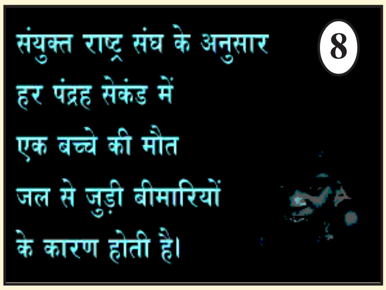

– पी.पी.टी. प्रस्तुतकर्ता जेफ ब्रेनमन

12 धरती के सवाल अंतरिक्ष के जवाब

उन्मुखीकरण

विधाता द्वारा बनायी गयी सृष्टि में अनेक जीव-जंतुओं ने इस संसार में जन्म लिया है। जिसमें पशु-पक्षियों को मानव की तुलना में कुछ विशिष्ट प्राकृतिक गुण प्राप्त हुए हैं। पक्षियों को मुक्त आकाश में विचरण करते देख कर हम यही सोचेंगे कि काश हम भी उनकी तरह आकाश में ऊँची उड़ान भर पाते। इसी आकांक्षा ने विलबर राइट व ओरोविन राइट भाइयों को हवाई जहाज़ की खोज की प्रेरणा दी और उन्होंने आकाश में उड़नेवाले हवाई जहाज़ का आविष्कार किया।

प्रश्न

1. हवाई जहाज़ का आविष्कार किसने किया?
2. उड़ते हवाई जहाज़ को देखकर आपको क्या लगता है? क्यों?
3. पशु-पक्षी और मानव गुणों में क्या अंतर है?

उद्देश्य

देश की सुरक्षा का कार्य अत्यंत महान कार्य है। इसके लिए अनेक प्रकार के नवीन तथा वैज्ञानिक उपकरण अपना विशेष दायित्व निभाते हैं। उन्हीं में कृत्रिम उपग्रह, रॉकेट, मिज़ाइल तथा रासायनिक वायु आदि का आविष्कार हुआ है। इस पाठ के द्वारा छात्रों में देश की सुरक्षा की भावना जागृत कराना और उपकरणों का आविष्कार करने वाले वैज्ञानिकों की जानकारी देना इस पाठ का मुख्य उद्देश्य है।

विधा विशेष

प्रत्यक्ष रूप से प्रश्नोत्तर द्वारा की जाने वाली प्रक्रिया ही साक्षात्कार है। इस पाठ में साक्षात्कार विधा का परिचय दिया गया है। जिसमें भारत के पूर्व राष्ट्रपति मिज़ाइल मैन मान्य अब्दुल कलाम जी का साक्षात्कार, जो कि कुछ छात्रों ने लिया था और टेसी थॉमस, मिज़ाइल वुमन द्वारा इंडिया टुडे साप्ताहिक पत्रिका को दिया गया साक्षात्कार-यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

छात्रों के लिए सूचनाएँ

1. विषय प्रवेश ध्यान से पढ़िए, पाठ्य विषय समझिए।
2. पाठ ध्यान से पढ़िए, जिस शब्द का अर्थ समझ में नहीं आता उसके नीचे रेखा खींचिए।
3. रेखांकित शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।
4. समझ में न आने वाले अंश हो तो छात्र समूहों में या अध्यापक से चर्चा कीजिए।

__विषय प्रवेश :__ ''आज हमारे यहाँ जब भी अंतरिक्ष विज्ञान और मिज़ाइल की बात की जाती है, तो सभी के मस्तिष्क में एक ही नाम गूँजता है- 'ए.पी.जे. अब्दुल कलाम'। सच्चे अर्थों में वे देश के ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया के आदर्श हैं। उन्होंने दुनिया के मानचित्र में भारत को जो स्थान दिलाया है, उसके लिए भारतवासी उनके ऋणी हैं। मैं गर्व के साथ कहना चाहती हूँ कि वे मेरे गुरु हैं।'' इतने सुंदर विचार रखने वाली भारत की प्रथम 'मिज़ाइल वुमन' शिष्या टेसी थॉमस और उनके गुरु ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के बारे में जानने के लिए आगे पढ़ें...

तमिलनाडु के रामेश्वरम की गलियों में समाचार पत्र बेचने वाला एक निर्धन बालक एक दिन सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक तथा भारत का राष्ट्रपति बनेगा, ऐसा किसी ने सपने में भी नहीं सोचा था। किंतु उस ग़रीब बालक ने अपनी प्रतिभा, परिश्रम और लगन से यह सिद्ध कर दिखाया कि मनुष्य के लिए विश्व में कुछ भी असंभव नहीं है। मन में अगर चाह हो तो उसे राह अपने आप मिल जाती है। जी हाँ, यह बालक कोई और नहीं बल्कि हमारे पूर्व राष्ट्रपति और मिज़ाइल मैन के नाम से प्रसिद्ध ''भारत रत्न'' अबुल फ़कीर जैनुलाबुद्दीन अब्दुल कलाम हैं।

राष्ट्रपति कार्यकाल के दौरान कुछ बालकों ने उनका साक्षात्कार लिया था। प्रस्तुत हैं उसी की कुछ झलकियाँ-

बालक : बढ़ती जनसंख्या और अन्य कई प्रकार की सामाजिक समस्याएँ हैं, जो हमारे देश में किसी महामारी की तरह फैली हुई हैं। उनके बारे में जागरूकता लाने के लिए हम छात्र क्या कर सकते हैं?

अब्दुल कलाम : इसमें दो राय नहीं कि हमारे देश के सामने बढ़ती जनसंख्या और अन्य कई सामाजिक समस्याएँ हैं। पर साथ ही हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि पूरे विश्व में भारत ही एकमात्र ऐसा देश है, जहाँ 50 प्रतिशत से भी अधिक युवाशक्ति है। जो देश के आर्थिक विकास में प्रमुख योगदान दे रही है। यह भी देखने में आया है कि जहाँ कहीं भी महिला साक्षरता दर अधिक है, वहाँ यह साक्षरता दर बढ़ती जनसंख्या को नियंत्रित करने में कारगर साबित हुई है। एक छात्र होने के नाते आप सब कम से कम पाँच महिलाओं को शिक्षित करें, जो पढ़ना-लिखना नहीं जानतीं। साथ ही आप उन्हें समाज की उन प्रमुख समस्याओं के बारे में भी बतायें, जिनसे आजकल की महिलाओं को संकट का सामना करना पड़ रहा है।

बालक : भारत के राष्ट्रपति के रूप में आप बाल मज़दूरी की समस्या को समाप्त करने के लिए क्या सुझाव देना चाहेंगे?

अब्दुल कलाम : क़ानूनन बाल मज़दूरी करवाना एक अपराध है। इस दशक के अंत तक हमें इसे जड़ से समाप्त करने का प्रयास करना चाहिए। भारतीय संसद ने भी संविधान

संशोधन अधिनियम 2002 के माध्यम से 6 से 14 वर्ष के बच्चों के लिए शिक्षा पाने के अधिकार को मौलिक अधिकार के रूप में घोषित कर दिया गया है। यह बहुत ज़रूरी है कि बच्चे अभिभावकों को नशाख़ोरी से मुक्ति दिलाने के लिए मुहिम चलायें और प्रौढ़ शिक्षा के माध्यम से उन्हें शिक्षित करने की व्यवस्था भी करें। ऐसी समस्या से तीन अलग-अलग उपायों से निपटा जा सकता है- (क) बच्चा स्वयं अपनी पढ़ाई जारी रखने में रुचि दिखायें। (ख) माता-पिता को शिक्षित करके और (ग) बच्चों से काम लेने वाले मालिकों में आत्म-नियंत्रण की प्रवृत्ति का विकास करके, ताकि वे उन बच्चों को अपने बच्चे जैसा ही समझें।

बालक : वर्तमान में भ्रष्टाचार सार्वजनिक जीवन में लगभग सभी स्तरों पर व्याप्त है। छात्र समुदाय सन् 2020 तक भारत को भ्रष्टाचार से मुक्त कराने के लिए क्या-क्या कर सकता है?

अब्दुल कलाम : सार्वजनिक जीवन में भ्रष्टाचार उन्मूलन के लिए व्यापक आंदोलन की आवश्यकता है। यह आंदोलन अपने घर और विद्यालय से ही आरंभ करना होगा। भ्रष्टाचार उन्मूलन में मेरी दृष्टि में केवल तीन ही तरह के लोग सहायक सिद्ध हो सकते हैं। वे हैं- (क) माता, (ख) पिता और (ग) प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक। यदि ये तीनों बच्चों को ईमानदारी और सच्चाई का पाठ पढ़ाते हैं तो इसके बाद जीवन में शायद ही कोई उनको हिला पाएगा। अतः हर घर में इस तरह के आंदोलन की आवश्यकता है, सार्वजनिक जीवन में भ्रष्टाचार को मिटा सकें। आप सब यह संकल्प लें कि आप सदैव ईमानदार एवं भ्रष्टाचारमुक्त जीवन का निर्वाह करेंगे और दूसरों के लिए आदर्शवान बने रहेंगे।

बालक : बड़े हमेशा बच्चों को कुछ न कुछ उपदेश देते रहते हैं। कुछ लोग कहते हैं कि अनुशासित रहना चाहिए, कुछ लोग कहते हैं खूब पढ़ाई करनी चाहिए, तो कुछ लोग कहते हैं कि ईमानदार बनना चाहिए, कड़ी मेहनत करनी चाहिए आदि। वैसे तो इन बातों का पालन करना महत्वपूर्ण है, किंतु एक छात्र के लिए सबसे महत्वपूर्ण गुण क्या है?

अब्दुल कलाम : एक छात्र के लिए सबसे महत्वपूर्ण है- उसकी अपने प्रति ईमानदारी और दूसरों के प्रति आदर का गुण। ये गुण आपको निस्संदेह आदर्श नागरिक बनायेंगे।

छात्र : एक अंतिम प्रश्न। एक छात्र के रूप में मैं विकसित भारत के आपके स्वप्न को साकार करने की दिशा में क्या कर सकता हूँ?

अब्दुल कलाम : एक छात्र होने के नाते, आप जिस कक्षा में भी पढ़ते हो, उसमें आगे बढ़ने के लिए ख़ूब परिश्रम करें। अपने जीवन में पहले एक लक्ष्य बनायें। फिर उसे प्राप्त करने के लिए आवश्यक ज्ञान और अनुभव प्राप्त करें। बाधाओं से लड़ते हुए उन पर विजय प्राप्त करें। निरंतर प्रयत्नशील रहते हुए सबसे बढ़िया काम करने की ओर बढ़ते रहें। साथ ही नैतिक मूल्यों को भी ग्रहण करें। छात्रों को हमेशा परिश्रमी

बनने का प्रयास करना चाहिए। छुट्टी के दिनों में छात्र ग़रीब और सुविधाओं से वंचित बच्चों को पढ़ाने का काम करें और इसे अपने जीवन में एक उद्देश्य के रूप में लें। छात्र अधिक से अधिक पौधे लगायें। इससे पर्यावरण को संतुलित बने रहने में सहायता मिलेगी। हमारे ये कार्य न केवल हमको, बल्कि हमारे राष्ट्र को भी विकास और समृद्धि के पथ पर ले जायेंगे।

(साभारः हम होंगे कामयाब, ए.पी.जे. अब्दुल कलाम)

1. निरक्षरों को साक्षर बनाने के लिए सरकार द्वारा क्या-क्या क़दम उठाये जा रहे हैं?
2. एक छात्र में कौन-कौन से महत्वपूर्ण गुण होने चाहिए?
3. एक छात्र के रूप में विकसित भारत के स्वप्न को साकार करने के लिए हमें क्या-क्या करना चाहिए?
4. भारत को भ्रष्टाचार से मुक्त कराने में छात्रों का क्या योगदान हो सकता है?

बड़ी मुश्किल से मुझे टेसी थॉमस का साक्षात्कार करने का मौक़ा मिला था। मैं सुबह-सुबह ही हैदराबाद के डिफेंस क्वार्टर्स में स्थित उनके घर पहुँच गयी। जैसे ही घर की घंटी बजायी, ज़रीदार साड़ी में भारतीय सांस्कृतिक छाप लिये टेसी जी ने मेरा मुस्कुराकर स्वागत किया। मैं पहली ही नज़र में उनकी सादगी की प्रशंसक बन गयी।

घर में देखा तो पुरस्कारों और सम्मानों का भंडार पड़ा है। किंतु इसमें भी विशेष था 'हाथी वाला स्मारक' जो उन्हें उनके इंजीनियरिंग की पढ़ाई के समय कॉलेज की ओर से दिया गया है। उनकी शिक्षा-दीक्षा केरल स्थित अलप्पुझा में हुई। यहीं पर उनका जन्म हुआ था। रक्षा अनुसंधान और विज्ञान को पुरुषों का क्षेत्र माना जाता था। मगर टेसी थॉमस ने अपनी मेहनत, लगन और दृढ़-निश्चय से पुरुष वर्चस्व वाले क्षेत्र में सफलता के नये शिखर तय किये हैं। थॉमस रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (डी.आर.डी.ओ) के अग्नि-5 कार्यक्रम की निदेशक बनीं। उन्होंने देश के किसी मिज़ाइल प्रॉजेक्ट की पहली महिला प्रमुख बनने का गौरव प्राप्त किया। चलिए उन्हीं से उनके बारे में जानते हैं।

साक्षात्कारकर्ता - आप अपने आरंभिक जीवन के बारे में क्या बता सकती हैं?

टेसी थॉमस - मुझे बचपन से ही कुछ अलग करने की चाह थी। मैं अंतरिक्ष के सपने देखती थी। यही कारण रहा कि मैंने गणित और विज्ञान विषय को अपने तन-मन में बसा लिया। इसमें मेरी पाठशाला (अलप्पुझा) और अध्यापकों का बहुत बड़ा योगदान रहा। अध्यापकों के सहयोग और सच्ची लगन से सफलता की बुलंदियों को प्राप्त किया जा सकता है।

साक्षात्कारकर्ता - जब कभी कोई आपको भारत की 'प्रथम मिज़ाइल वुमन' और 'अग्नि-पुत्री' कहते हैं, तो आपको कैसा लगता है?

टेसी थॉमस - मुझे बेहद खुशी होती है। मेरे पास बयान करने के लिए कोई शब्द नहीं है। सन् 1985 में डी.आर.डी.ओ द्वारा देशभर के दस युवा वैज्ञानिकों को चुना गया उसमें मेरा नाम भी था। उस दिन मेरी खुशी की कोई सीमा नहीं थी। मानो मेरे सपनों को पंख मिल गये थे। मैंने 'अग्नि मिज़ाइल' के अभियान से जुड़कर जो आनंद प्राप्त किया, वह सदा याद रहेगा।

साक्षात्कारकर्ता - आप अपना आदर्श किसे मानती हैं?

टेसी थॉमस - आज हमारे यहाँ जब भी अंतरिक्ष विज्ञान और मिज़ाइल की बात की जाती है, तो सभी के मस्तिष्क में एक ही नाम गूँजता है- 'ए.पी.जे. अब्दुल कलाम'। सच्चे अर्थों में वे देश के ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया के आदर्श हैं। उन्होंने दुनिया के मानचित्र में भारत को जो स्थान दिलाया है, उसके लिए भारतवासी उनके ऋणी हैं। मैं गर्व के साथ कहना चाहती हूँ कि वे मेरे गुरु हैं। (डी.आर.डी.ओ में टेसी थॉमस, ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के नेतृत्व में काम कर चुकी हैं।) उन्होंने ही मुझे प्रेरणा के 'अग्नि पंख' दिये हैं। वे महान थे, महान हैं और महान रहेंगे। उनकी नेतृत्व क्षमता बेमिसाल है। उन्हें मैं अपना आदर्श मानने में गर्व अनुभव करती हूँ।

साक्षात्कारकर्ता - बच्चों को आप क्या सुझाव देना चाहती हैं?

टेसी थॉमस - बच्चों से मैं यही कहना चाहती हूँ कि वे जो भी पढ़ें ध्यान से पढ़ें, मेहनत करें और लक्ष्य प्राप्त करने तक रुके नहीं। जो उन्हें पसंद हैं उसमें अपना जी-जान लगा दें। कमर कसकर तैयारी करें। सफलता अवश्य उनके क़दम चूमेगी।

5. बच्चों के लिए टेसी थॉमस का संदेश क्या है?
6. टेसी थॉमस को 'अग्नि-पुत्री' का उपनाम क्यों दिया गया होगा?

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(अ) प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जैसे कुछ और महापुरुषों के नाम बताइए।
2. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम और टेसी थॉमस में आपको सबसे अच्छी बात कौनसी लगी और क्यों?

(आ) पाठ पढ़िए। अभ्यास कार्य कीजिए।

1. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का साक्षात्कार किसने लिया?
2. टेसी थॉमस का साक्षात्कार किसने लिया?
3. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने बाल मज़दूरी को समाप्त करने के लिए क्या उपाय बताये?
4. टेसी थॉमस की स्कूली पढ़ाई कहाँ हुई? उन्हें किन विषयों में रुचि थी?

(इ) निम्नलिखित पंक्तियों की व्याख्या कीजिए।

1. सार्वजनिक जीवन में भ्रष्टाचार उन्मूलन के लिए व्यापक आंदोलन की आवश्यकता है।
2. सच्चे अर्थों में वे देश के ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया के आदर्श हैं।

(ई) गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

विज्ञान की भी एक भाषा होती है। यदि आप ध्यान से देखें तो आपको पता चलेगा कि किस तरह ऋतुएँ बदलती रहती हैं। किस तरह किसी बीज से नन्हा पौधा निकलता है। किस तरह पानी पर कागज़ की नावें तैरती हैं। किस तरह पक्षी उड़ते हैं। किस तरह तितली फूल का रस पीती है। किस तरह गुब्बारा हवा से फूलता है। चारों ओर विज्ञान ही विज्ञान है। विज्ञान किताबों में कम आपकी समझ में ज़्यादा बसता है। इसीलिए कुछ

जानने की इच्छा हमेशा रहनी चाहिए। जो जानने की इच्छा नहीं रखता वह किताबें पढ़कर भी कुछ नहीं सीख सकता।

1. विज्ञान कैसा विषय है?
2. विज्ञान के कुछ उदाहरण दीजिए।
3. जानने की इच्छा न हो तो क्या होगा?

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

(अ) इन प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए।

1. कलाम के विचार में "आदर्श छात्र" के गुण क्या हैं?
2. टेसी थॉमस के जीवन से हमें क्या संदेश मिलता है?

(आ) इन प्रश्नों के उत्तर आठ-दस पंक्तियों में लिखिए।

1. अच्छे नागरिक बनने के लिए कौन से गुण होने चाहिए?
2. टेसी थॉमस अब्दुल कलाम को अपना आदर्श मानती हैं। क्यों?

(इ) किसी एक साक्षात्कार को उचित शीर्षक देते हुए निबंध के रूप में लिखिए।

(ई) ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के विचार आदर्श योग्य हैं। इन विचारों को अमल में लाने के लिए आप क्या करेंगे?

भाषा की बात

(अ) कोष्ठक में दी गयी सूचना पढ़िए और उसके अनुसार कीजिए।

1. प्रतिभा, परिश्रम, छात्र, शिक्षा (एक-एक शब्द का वाक्य प्रयोग कीजिए। पर्याय शब्द लिखिए।)
2. संभव, ज्ञान, बढ़िया, साकार (एक-एक शब्द का विलोम शब्द लिखिए। वाक्य प्रयोग कीजिए।)
3. छात्रा, छुट्टी, पौधा, बात (एक-एक शब्द का वचन बदलिए। वाक्य प्रयोग कीजिए।)

(आ) सूचना पढ़िए। उसके अनुसार कीजिए।

1. निर्धन, संकल्प (संधि विच्छेद कीजिए।)
2. सुबह-शाम, युवाशक्ति (समास पहचानिए।)

(इ) रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए और इन्हें समझिए।

1. राष्ट्रपति कार्यकाल के दौरान कुछ बालकों ने उनका साक्षात्कार लिया था।
2. निरंतर प्रयत्नशील रहते हुए सबसे बढ़िया काम करने की ओर बढ़ते रहें।

(ई) रेखांकित शब्दों के स्थान पर कोष्ठक में दिये गये शब्दों का प्रयोग कर वाक्य बनाइए।

एक छात्र होने के नाते आप जिस कक्षा में भी पढ़ते हों, उसमें आगे बढ़ने के लिए खूब परिश्रम करें।

(नागरिक-देश, खिलाड़ी-खेल, कलाकार-कला, अध्यापक-विषय, परीक्षार्थी-परीक्षा)

परियोजना कार्य

छठवीं कक्षा से दसवीं कक्षा तक की हिंदी पाठ्यपुस्तकों के मुखपृष्ठों में (कवर पेज) आपको कौनसा मुखपृष्ठ बहुत अच्छा लगता है? उसके बारे में अपने विचार व्यक्त करते हुए एक सूची बनाइए और उसका कक्षा में प्रदर्शन कीजिए।

उपवाचक

अनोखा उपाय

- डॉ. रावूरि भरद्वाज

कई साल पहले की बात है। एक राज्य था। जिसका नाम हरितनगर था। हरितनगर का राजा कुमारवर्मा था। वह एक अच्छा शासक था। कुमारवर्मा के शासन काल में राज्य हरा-भरा रहता था। लेकिन एक समय ऐसा आया, राज्य में सारी फ़सलें सूख गयीं। तालाब, गड्ढे सूख गये। केवल दो ही जीव नदियाँ बची थीं। जो छोटी-छोटी नहरें बनकर रह गयीं।

राज्य में पशुओं का चारा भी मिलना मुश्किल हो गया। कई किसान अपने-अपने पालतू जानवर सस्ते दामों पर बेचने लगे। ऐसी हालत में राजभंडार का अनाज प्रजा में बाँट दिया जाने लगा। अड़ोस-पड़ोस के राज्यों से अनाज उधार लिया जाने लगा। फिर भी राजा को भविष्य की चिंता सता रही थी। राजा उत्पन्न परिस्थितियों के बारे में गंभीर रूप से सोचने लगा लेकिन इसका कोई पता नहीं चला। राजा के मन में ये सवाल उठ रहे थे कि अड़ोस-पड़ोस के सभी राज्य हरे-भरे हैं। वहाँ की प्रजा भी सुखी है। लेकिन न जाने इस राज्य में ऐसा क्यों हो रहा होगा...? क्या कारण हो सकते हैं...? इस समस्या का हल कैसे किया जा सकता है?

राजा कुमारवर्मा ने इस समस्या के हल की चर्चा के लिए कई बुद्धिमानों, हाज़िरजवाबदारों और विद्वानों को बुलवाया। चर्चा में कुछ बुद्धिमानों ने बताया- "हे महाराज! भूलें कई तरह की होती हैं। कुछ भूलें सरलता से पहचानी जाती हैं तो कुछ पहचानी नहीं जातीं।" कुछ हाज़िरजवाबदारों ने बताया- "हे राजन! कुछ भूलों का आभास होता है और कुछ का आभास तक नहीं होता।" कुछ विद्वानों ने बताया- "हे प्रभु! कुछ भूलें सुधार के रूप में हो जाती हैं तो कुछ सुधार भी भूलों के रूप में बदल जाते हैं। ऐसी ही कोई जानी-अनजानी बात छिपी होगी जिससे आज राज्य में यह समस्या उत्पन्न हुई है।"

राजा कुमारवर्मा ने पूछा- "अब आप ही बतायें कि मुझे क्या करना चाहिए?"

सभी ने विचार-विमर्श कर राजा को यह सलाह दी- "सभी तरह से खुशहाल किसी राज्य के राजा से भेंट करें। वहाँ के शासन नियमों का पता लगायें। यहाँ के शासन नियमों में सुधार करें। इससे राज्य की समस्या का हल अवश्य हो सकता है।"

राजा कुमारवर्मा को यह उपाय अच्छा लगा। उसने तुरंत अपने पड़ोसी राज्य के महाराज सत्यसिंह से भेंट करने का निर्णय लिया और सेवकों से संदेश भेजा- "राजाधिराज, महाराज सत्यसिंह जी को सादर प्रणाम। हमारे राज्य में अकाल से जनता त्रस्त है। इस समस्या के हल के लिए आपकी उचित सलाह व आपके शासन नियमों की जानकारी के लिए हम आपके यहाँ पधारना चाहते हैं। आशा है कि आप हमारा निवेदन स्वीकारें।"

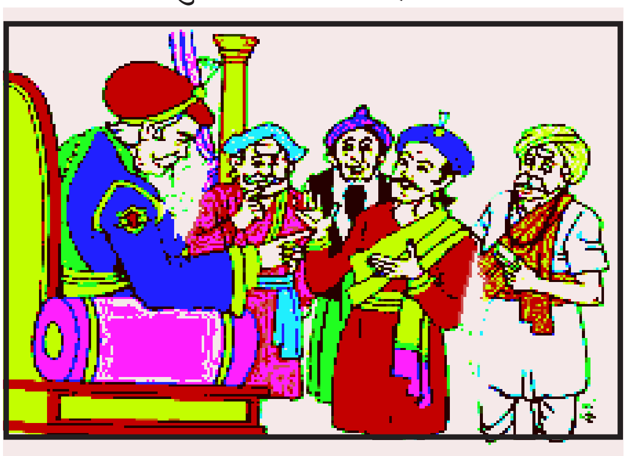

महाराज सत्यसिंह ने अपने संदेश में लिखा- ''आप और हम पड़ोसी राजा हैं। किसी भी समस्या में एक-दूसरे का हाथ बँटाना हमारा कर्त्तव्य है। हमारे राज्य में आपका हार्दिक स्वागत है। आप हमारे आदरणीय अतिथि हैं। अतिथि के रूप में आपका सत्कार करने का सौभाग्य हमें मिल रहा है, इसके लिए हम कृतज्ञ हैं।''

इस प्रत्युत्तर के पढ़ते ही राजा कुमारवर्मा को अपने राज्य की समस्या का हल करने का कुछ हद तक उपाय मिल ही गया था। फिर भी राजा स्वयं पड़ोसी राज्य के राजा से भेंट करना चाहते थे।

देखते-देखते वह दिन आ ही गया। राजा कुमारवर्मा का पड़ोसी राज्य में भव्य स्वागत हुआ। राज्य देखकर राजा आश्चर्यचकित होने लगे। चारों तरफ जलाशय भरे हुए थे। नदियाँ लबालब थीं। नहरें बह रही थीं। ठंडी हवाएँ सन-सना रही थी। खेत भरी हरियाली से लह-लहा रहे थे। फूलों के चमन खुशबू से महक रहे थे। बाग-बगीचे फल-फूलों से लदे थे। ये सारी चीज़ें देखकर राजा कुमारवर्मा को बेहद खुशी हुई।

महाराज कुमारवर्मा की भेंट महाराज सत्यसिंह से हुई। ''मित्र! आपका राज्य किसी स्वर्ग से कम नहीं है। मुझे लगता है कि जिन शासन नियमों को मैं नहीं जानता, उनका आप पूरा-पूरा पालन कर रहे हैं। इसीलिए आपकी प्रजा सुखी है। मैं भी अपनी प्रजा को सुखी देखना चाहता हूँ। कृपया आप मुझे सुशासन का हितोपदेश दीजिए।''

महाराज सत्यसिंह ने पहले तो हितोपदेश के लिए मना कर दिया। किंतु राजा कुमारवर्मा के अनुरोध पर उन्होंने कहा- ''नहीं महाराज! मुझे मजबूर मत कीजिए। मैं दोषी हूँ। जो दोषी होता है, उसे हितोपदेश करने का कोई अधिकार नहीं होता। मैं आपको एक घटना सुनाता हूँ। मैं एक बार अपने अंगरक्षक के साथ इसी तरह उपवन में चर्चा कर रहा था। तभी मुझे राजमाता के पास ज़रूरी बात करने के लिए जाना पड़ा। मैंने अंगरक्षकों को अपने लौटने तक वहीं खड़े रहने का आदेश दिया था। राजमाता से बात करते-करते रात हो गयी। वहीं पर मैंने भोजन किया। सो गया। अगले दिन सुबह उठकर देखा तो ख़ूब बारिश हो रही थी। सेवकों ने बताया कि देर रात से बारिश हो रही है। जब मैंने उपवन लौटकर देखा तो अंगरक्षक उसी स्थान पर भीगते हुए खड़े हैं। मैं बातचीत में इतना निमग्न हो गया था कि अंगरक्षकों को जाने के लिए भी नहीं कह सका। यह मेरी भूल थी। अतः ऐसी भूल करने वाले राजा को हितोपदेश देने का कोई अधिकार नहीं। मुझे क्षमा कीजिए।''

राजा कुमारवर्मा ने महाराज सत्यसिंह की इस घटना को पूरे ध्यान से सुना। उन्हें लगा कि राजमाता ही उन्हें हितोपदेश दे सकती है। उन्होंने राजमाता के दर्शन किये और अपनी इच्छा बतायी।

''पुत्र! सच कहूँ तो मैं भी दोषी हूँ। एक बार मेरे पुत्र ने अपनी पत्नी के लिए सुंदर ज़ेवर बनवाये। मेरे मन में ज़ेवर के प्रति लालच पैदा हो गया। यदि मैं अपने पुत्र या बहू से ज़ेवर माँगती, तो वे कभी मना नहीं करते। एक राजमाता का ज़ेवरों के प्रति आकर्षण होना दोष है। किसी दूसरे की वस्तु के प्रति लालच

रखना भी ग़लत है। ऐसी भूल करने वाली मैं, हितोपदेश करने के योग्य नहीं समझती।''

राजा कुमारवर्मा आश्चर्य में पड़ गया। बाद में राजगुरु से भेंट की और उनसे उपदेश के लिए निवेदन किया।

तब राजगुरु ने कहा, ''महाराज! मुझे क्षमा कीजिए। मैं इसके योग्य नहीं। एक बार सुदूर देश से एक पंडित आया था। राजदर्शन करना चाहा। उसके पांडित्य की जाँच करने का समय न होने के कारण मैंने राजा को यह कह दिया कि वह बड़ा पंडित है। राजा मुझ पर असीम विश्वास रखते हैं। उन्होंने पंडित को ढेर सारा इनाम दिया। आगे चलकर मुझे पता चला कि वह पंडित केवल औसत था। मेरे आलस के कारण मैं राजा को उचित सलाह न दे सका। ऐसी भूल करने वाला मैं, हितोपदेश के योग्य नहीं समझता।''

राजा कुमारवर्मा बड़ी सोच में पड़ गया।

इन तीन घटनाओं से उसे यह सीख मिली कि हमें छोटी से छोटी भूल भी नहीं करनी चाहिए। यदि हमसे कोई भूल हो तो उसे तुरन्त सुधारलेना चाहिए।

राजा ने इस सीख का पालन किया। कुछ ही दिनों में उसका राज्य खुशहाल बन गया।

(वर्ष 2012 के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित स्वर्गीय श्री रावूरि भरद्वाज तेलुगु के प्रसिद्ध हस्ताक्षर हैं। प्रस्तुत कहानी तेलुगु भाषा में रचित उनकी प्रसिद्ध रचना 'बंगारु कुंदेलु' की अनूदित रचना 'सोने का खरगोश' से ली गयी है।)

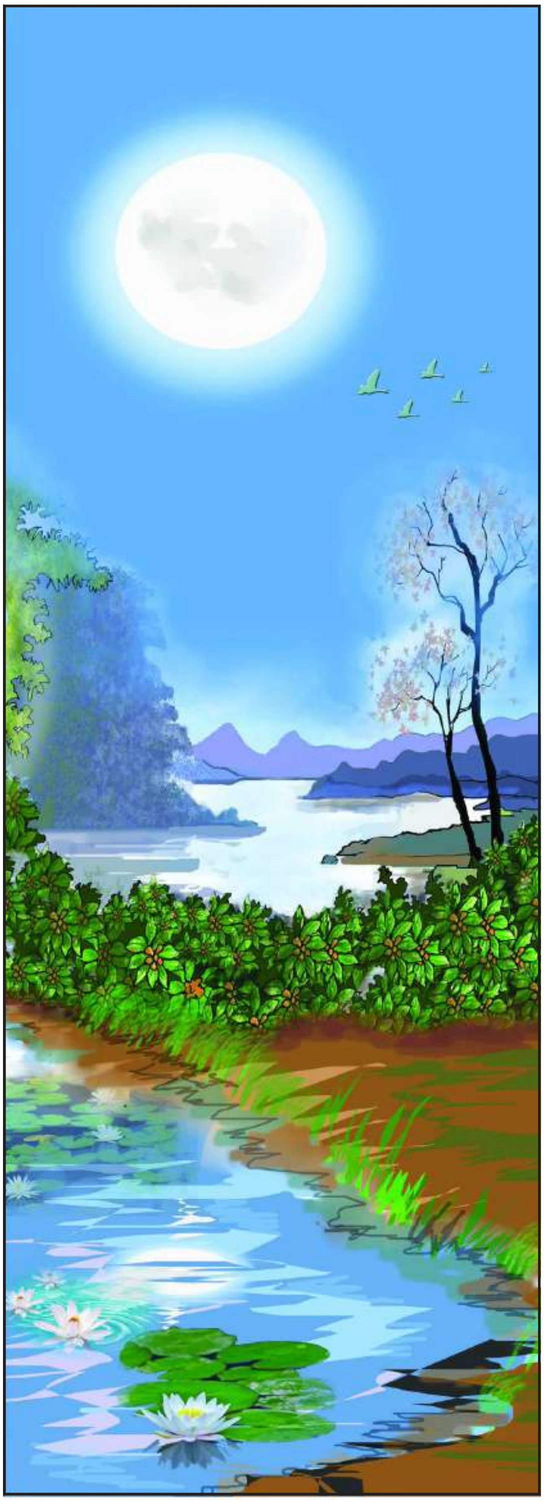

प्रश्न :

1. राजा कुमारवर्मा के राज्य में अकाल की स्थिति क्यों उत्पन्न हुई होगी?
2. अकाल की समस्या के परिष्कार के लिए राजा ने क्या-क्या उपाय सोचे होंगे?
3. राजा कुमारवर्मा की जगह पर यदि तुम होते तो अकाल की समस्या से कैसे जूझते?

शब्दकोश

इस शब्दकोश से आपको इस पुस्तक के पाठों के कठिन शब्दों के अर्थ समझने में सहायता मिलेगी। नीचे बाईं ओर कठिन शब्द तथा दाईं ओर उसका अर्थ तेलुगु और अंग्रेजी में दिया गया है। साथ ही साथ वाक्य प्रयोग भी दिया गया है। इससे आप प्रसंग के अनुसार अनुकूल शब्द का चयन करना सीख सकेंगे । यह शब्दकोश आपको शब्दों के न केवल सही अर्थ जानने में मदद करेगा अपितु उनकी सही वर्तनी भी सिखाएगा।

अजीब	=	విచిత్రమైన, amazing	संसार में **अजीब** घटनाएँ घटती हैं।
अमोलक	=	అమూల్యమైన, priceless	प्रकृति एक **अमोलक** धन है।
उन्मूलन	=	నిర్మూలన, abolishment	कुरीतियों का **उन्मूलन** करना चाहिए।
उलझन	=	సమస్య, trouble	साहसी व्यक्ति **उलझन** से नहीं घबराता।
ओजस्वी	=	ఉత్సాహపరిచేలా, energetic	दिनकर जी की कविताएँ **ओजस्वी** होती हैं।
क्रंदन	=	ఏడ్పుట, weaping	अकाल के कारण किसान क्रंदन करने लगे।
कचोट	=	బాధ, pinch	गरीबों के प्रति गाँधीजी के हृदय में **कचोट** रही।
क्लेश	=	కష్టములు, problems	हमें हँसते हुए **क्लेश** का सामना करना चाहिए।
कारगर	=	ప్రయోజనకరమైన, useful	देश में प्रौढ़ शिक्षा **कारगर** सिद्ध हुई।
कुहासा	=	మంచు, fog	सरदी के दिनों में चारों ओर **कुहासा** छा जाता है।
घन	=	మబ్బులు, cloud	मोर **घन** को देखकर नाचने लगे।
जिज्ञासा	=	తెలుసుకోవాలనే కోరిక, curiosity	बालकों में जानने की **जिज्ञासा** होती है।
टापू	=	చిన్న దివీ, Island	दिविसीमा कृष्णा नदी में स्थित एक **टापू** है।
तम	=	చీకటి, darkness	दीपक की रोशनी रात के **तम** को दूर करती है।
तबाही	=	ధ్వంసం, destruction	सुनामी के कारण राज्य में **तबाही** मच गयी।
तथ्य	=	సరియైన, accurate	गांधी जी आजीवन **तथ्य** के मार्ग पर चले।
दादुर	=	కప్ప, frog	वर्षा ऋतु में **दादुर** की टर्र-टर्र सुनायी देती है।

धवल	=	తెల్లని, milky	बर्फ़ से ढके हिमालय **धवल** दिखायी देते हैं।
नफ़रत	=	అసహ్యము, hate	हमें किसी से **नफ़रत** नहीं करनी चाहिए।
नींव	=	పునాది, foundation	नेहरू जी ने नागार्जुन सागर बाँध की **नींव** डाली।
न्यस्त	=	వ్యాపించిన, spread	प्रकृति सुंदरता से **न्यस्त** है।
पावन धाम	=	పవిత్రప్రదేశము, holyplace	विद्यालय एक **पावन धाम** है।
बास	=	సువాసన, fragrance	फूलों में **बास** होती है।
भ्रष्टाचार	=	అవినీతి, corruption	**भ्रष्टाचार** को जड़ से मिटाना चाहिए।
भिश्ती	=	మేస్త్రీ, mason	भिश्ती दीवार बनाता है।
भेंट	=	కానుక, Gift	जन्मदिन के अवसर पर **भेंट** दिये जाते हैं।
मटमैला	=	వెలిసిపోయినట్లుగా, fade	कपड़ा **मटमैला** हो गया है।
मूक	=	మౌనము, silent	हमें अन्याय के समय **मूक** नहीं रहना चाहिए।
रज	=	మట్టి, dust	वर्षा का पानी **रज** को बहा ले जाता है।
रौनक़	=	మెరుపు, charm	ईद के दिन चारों ओर **रौनक़** छा जाती है।
वारि	=	నీరు, water	**वारि** ही जीवन का आधार है।
विनीत	=	వినయము, humble	सज्जन **विनीत** होते हैं।
संचित	=	సమకూర్చుట, collect	हमें विद्या धन **संचित** करना चाहिए।
संशोधन	=	సవరణ, amendment	समय-समय पर क़ानून में **संशोधन** हो रहे हैं।
सरित्पति	=	సముద్రము, sea	नदियाँ **सरित्पति** में जाकर मिलती हैं।
साक्षात्कार	=	పరిచయ కార్యక్రమము, interview	छात्रों ने राष्ट्रपति का **साक्षात्कार** लिया।
ह्रास	=	పతనము, destroy	युद्धों से **ह्रास** होता है।

अध्यापकों के लिए सूचना : यहाँ पर शब्दों के अर्थ व उनके वाक्य प्रयोग दिये गये हैं। अतः बच्चों को अर्थ समझाने के लिए और अधिक वाक्य प्रयोग सिखाइए।

छात्रो! आप लोगों ने अब तक कई नीति वाक्य पढ़े हैं। आप स्वयं भी किसी नीति वाक्य का सृजन कर सकते हैं। नीचे दिये गये खाली स्थान में एक नीति वाक्य का सृजन कर अपना नाम लिखिए।

.... - ....